जीवन की पूँजी

लेखकः

मुह़म्मद बिन अब्दुर्रह़मान बिन अब्दुल्लाह अल-सुबैहीन

हिंदी अनुवादः

स़ाबिर हुसैन पुत्र मुह़म्मद मुजीबुर रह़मान

प्रस्तावना

समस्त प्रकार की प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जिसने मानव को वह सिखाया जो वह नहीं जानता था, तथा अल्लाह की प्रशंसा व शांति अवतरित हो उस व्यक्ति पर जिन्हें कम शब्दों में अधिक बातें कहने की कला (जवामिअ अल-कलिम) से अनुगृहीत किया गया, एवं उनके साथियों पर जो उदारता, सज्जनता तथा उच्च नैतिकता के धारक थे, और उन समस्त लोगों पर जिन्होंने उनका अनुसरण किया तथा ज़ुबान एवं क़लम से ज्ञान के प्रचार प्रसार में भाग लिया।

स्तुति गान के पश्चातः

ज्ञान से लेखक, पाठक एवं जिस तक वह ज्ञान पहुँचे उसी समय लाभांवित होते हैं जब उसे मौखिक अथवा लिखित तौर पर सहज से सहजतम रूप में पेश किया जाए, इससे उस ज्ञान को समझना, याद रखना तथा दूसरों तक स्थानांतरित करना अधिक सरल होता है, यही कारण है कि नुबुव्वत का ढ़ंग यह था कि (नबी के) शब्दों में स्पष्टता एवं उनके अर्थों में बलाग़त (साहित्य की अलंकृत शैली) पाई जाती थी, ताकि आपकी बात को समझना एवं याद रखना आसान हो।

मेरा विचार है कि यह पुस्तिका जो अपने नाम, विषय, एवं लेखन शैली में अनुपम स्थान रखता है, इसके लेखक को लेखन शैली के संबंध में दो विशिष्टता प्राप्त हैं:

प्रथमः मेरे ज्ञान की हद तक फ़ज़ाएल -ए- आमाल (कर्म की प्रधानता व पुण्य) के विषय में यह ऐसी लेखन शैली है जो इसके पूर्व किसी ने नहीं अपनाया।

द्वितीयः इस विषय में बिखरे हुए ज्ञान को एकत्रित कर के उन्हें क्रमवार सजाने के साथ-साथ उन्होंने अपनी इस पुस्तक (के अरबी संस्करण) में विषय वस्तु के आधार पर विभिन्न रंगों का प्रयोग किया है, इसमें कोई संदेह नहीं कि विभिन्न विषय के आधार पर भिन्न-भिन्न रंगों का प्रयोग उस विषय को याद करने एवं पाठक के मन-मस्तिष्क में उसे अच्छे ढ़ंग से बिठाने में बहुत सहायक सिद्ध होता है, मेरे अल्प ज्ञान के अनुसार फ़ज़ाएल (प्रधानता व पुण्य) के विषय में कोई ऐसी पुस्तक नहीं है जिसमें इस पुस्तक जैसी शैली अपनाई गई हो।

इस पुस्तक की एक विशिष्टता यह है कि लेखक महोदय ने ऐसी ह़दीसों के उल्लेख करने का ध्यान रखा है जो सनद के आधार पर स़हीह़ अथवा ह़सन हों, उनका यह कृत्य प्रशंसनीय है, क्योंकि बहुतेरे लोग जो फ़ज़ाएल के विषय में बोलते अथवा लिखते हैं वह ज़ईफ़ ह़दीसें तथा यदा-कदा मोज़ूअ (मनगढ़ंत) ह़दीसों का भी उल्लेख कर देते हैं।

संभवतः कुछ लोग ज़ईफ़ (कमज़ोर) ह़दीसों को इसलिए प्रमाण बनाते हों कि कुछ मुह़द्दिसों (ह़दीस़ के विद्वानों) ने इसकी अनुमति दी है, परंतु सावधानी वाला एवं सर्वोत्तम मत यह है कि केवल सही एवं प्रमाणित ह़दीसों को ही आधार बनाया जाए। इमाम व मुह़द्दिस़ अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह़िमहुल्लाह ने कितनी उत्तम बात कही है कि: "स़हीह़ ह़दीस़ के अंदर ज़ईफ़ ह़दीस़ से बेनियाज़ी (निःस्पृहता) पाई जाती है"।

इस पुस्तक का सार यह है कि:

यह पुस्तक ऐसे अभिस्तावनाओं एवं परिणामों पर आधारित है जो दलीलों एवं प्रमाणों से सुसज्जित तथा (अरबी संस्करण) ऐसे रंगों से सुशोभित है जिनसे उन्हें कंठस्थ करना सरल-सहज हो जाता है। यह तो इस पुस्तक के संबंध में बात हुई।

रही बात लेखक महोदय की तो वह प्रोफेसर मुह़म्मद बिन अब्दुर्रह़मान अल-सुबैहीन हैं, जिनसे मैंने भाषा एवं व्याकरण का खूब ज्ञान अर्जित किया है और उसके पूर्व मैं उनके उच्च आचरण से प्रभावित हुआ, वह इस बात के अधिक योग्य हैं कि मेरे लिए प्रस्तावना लिखें, तथा मेरा मानना है कि उनके लिए मेरा यह प्रस्तावना लिखना, वास्तव में, गुरु की संतान के प्रति शिष्य के आज्ञापालन के रूप में है, क्योंकि उनके पिता मअहद अल-रियाज़ अल-इल्मी में मेरे शिक्षक थे तथा मैंने उनके ज्ञान एवं उपदेश भरपूर लाभ उठाया। अल्लाह तआला उन्हें फ़िरदौस -ए- आला (सर्वोच्च स्वर्ग) में उच्च स्थान प्रदान करे तथा उनकी संतान एवं पोते-पोतियों को अपनी बरकतों (कल्याण) से अनुगृहीत करे।

समापन के पूर्व:

प्रोफेसर मुहम्मद को यह सलाह व परामर्श देता हूँ कि वह इसी शैली में दीन के चार स्तंभः नमाज़, ज़कात, रोज़ा तथा ह़ज्ज के संबंध में ह़दीसों को इकट्ठा कर के, उन्हें अपने अंदाज़ में संकलित करें, एवं साथ ही उन कर्मों के स़वाब व पुण्य का भी वर्णन करें, उदाहरणस्वरूप पापों की क्षमा अथवा दर्जे में बढ़ोतरी इत्यादि।

अंत में: सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह प्रोफेसर मुहम्मद के इस प्रयास एवं अनोखी लेखन शैली को स्वीकार्यता प्रदान करे, मुझे आशा है कि उनकी यह पुस्तक लाभदायक साबित होगी बल्कि अल्लाह के अनुग्रह एवं कृपा से इस पुस्तक की उपयोगिता का दायरा विस्तृत होगा क्योंकि इसके अंदर अक़ीदा (आस्था), इबादत (उपासना), आचार व्यवहार एवं सर्वोच्च अल्लाह के उस महान अनुग्रह का वर्णन है जिससे प्रमाणित होता है कि उसने अपनी शरीअत को अत्यंत सहज बनाया है। यह ऐसी विशेषता है जिससे इस पुस्तक को पढ़ने की इच्छा जागृत होगी ताकि इसमें संकलित किये गये ज्ञान से जागरूकता प्राप्त की जाये तत्पश्चात उनका अनुसरण किया जाये।

मेरा विश्वास है कि इस पुस्तक की व्यवस्था और संकलन में लेखक पर अल्लाह की विशेष कृपा स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है।

हम अल्लाह सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं कि वह इस पुस्तक को लेखक के लिए एक मूल्यवान निवेश बना दे, जो उन्हें इस संसार, बरज़ख़ (मृत्यु पश्चात एवं क़यामत के दिन उठाये जाने से पूर्व की स्थिति) और आख़िरत (परलोक) में लाभ पहुँचाती रहे, तथा उन्हें इस पुस्तक को पढ़ने वाले, सुनने वाले, स्थानांतरित करने वाले एवं दूसरों तक पहुँचाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के बराबर पुण्य प्रदान करे। समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं, जिसकी नेअमत व कृपा से सद्कर्म अंजाम को पहुँचते हैं।

अब्दुल अज़ीज़ बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-सदह़ान

जीवन की पूँजी नामक पुस्तक में मेरी लेखन शैली

प्रथम: मैंने जीवन के केवल उन्हीं पूंजियों (फ़ज़ाएल -ए- आमाल) का उल्लेख किया है जो क़ुरआन की आयतें अथवा स़हीह़ या ह़सन ह़दीस़ों से प्रमाणित हैं।

यह बात सर्वविदित है कि ह़दीस़ के स़हीह़, ह़सन और ज़ईफ़ होने के संबंध में उलमा के मध्य मतभेद पाया जाता है, क्योंकि सनद (ह़दीस़ के वर्णनकर्ताओं की श्रृंखला) के शोध एवं जाँच पड़ताल की विधियों में मतांतर पाया जाता है, यही कारण है कि कभी-कभी एक ह़दीस़ को उलमा (विद्वान) ह़सन (अच्छा, उत्तम) करार देते हैं जबकि दूसरे आलिम के निकट वह ह़दीस़ ज़ईफ़ (कमज़ोर) होती है, यह कोई अचंभे की बात भी नहीं है, क्योंकि (ह़दीस़ पर हुक्म लगाने के विषय में) उलमा के मध्य मतभेद का पाया जाना सर्वविदित है, हमारे लिए महत्वपूर्ण यह है कि ह़दीस़ों के स़हीह़ अथवा ह़सन होने का हुक्म लगाने वाला आलिम (विद्वान) ऐसा हो जिसकी राय ह़दीस़ के विषय में महत्वपूर्ण मानी जाती हो।

द्वितीय: मैंने जीवन की पूंजी को कुछ बड़े अध्यायों में विभाजित किया है, जिनका विवरण निम्न है:

१- अल्लाह तआला का नैकट्य। २- अप्रिय का निवारण। ३- उद्देश्य की प्राप्ति।

इस प्रकार से व्यवस्थित करने का कारण यह है कि मुस्लिम व्यक्ति का परमोद्देश्य सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का नैकट्य प्राप्त करना होता है, तत्पश्चात मकरूह व अप्रिय वस्तुओं का निवारण कर के वह (अपने व्यक्तित्व को) स्वच्छ व शुद्ध करना चाहता है, तथा तज़किया (शुद्धि) के इस चरण को उद्देश्य की प्राप्ति (तह़लिया) पर वरीयता प्राप्त है, इसके अतिरिक्त प्रत्येक अध्याय के अंतर्गत उस विषय से संबंधित विभिन्न खण्ड भी हैं।

तृतीय: प्रत्येक अध्याय के अंतर्गत मैंने जीवन की पूंजी को उनकी प्रधानता के आधार पर व्यवस्थित किया है, वह इस प्रकार से कि यदि आप उन सभों का पालन नहीं कर सकते हों तो क्रमवार (उसका पालन करना) आरंभ करें ताकि महानतम फ़ज़ीलत (प्रधानता) से आप लाभांवित हो सकें।

चतुर्थ: मैंने प्रत्येक पूँजी के साथ एक गोल परिधि बना दिया है ताकि उसका पालन करने के पश्चात उसके अंदर चिह्न लगाया जा सके।

पंचम: प्रत्येक अध्याय में मैंने इन मुद्दों का निरंतर उल्लेख किया है: पूँजी का विषय, उसकी फ़ज़ीलत (पुण्य व प्रधानता) तथा उसका प्रमाण।

षष्ट: मैंने प्रत्येक पूँजी को (अरबी संस्करण में) काले रंग से लिखा है, उसकी फ़ज़ीलत (प्रधानता) हरे रंग से जोकि स्वर्गवासियों के वस्त्र का रंग है, तथा उसका प्रमाण नीले रंग से जोकि समुद्र का रंग है, तथा प्रमाण वाले स्थान (मौज़ा -ए- शाहिद) को लाल रंग से चिन्हांकित (हाइलाट) कर दिया है।

सप्तम: संक्षेप में ह़दीस़ के संदर्भ का उल्लेख किया है, वह इस प्रकार से कि ह़दीस़ संख्या को उसके मूल स्रोत से उद्धृत किया गया है, स़ह़ीहैन (बुख़ारी व मुस्लिम) एवं चारों सुनन (सुनन अबू दावूद, सुनन तिर्मिज़ी, सुनन नसई, सुनन इब्ने माजह) इत्यादि से ह़दीसें नक़ल की गई हैं, ह़दीस़ के प्रकांड विद्वानों विशेषतः अह़मद शाकिर, अलबानी एवं शुऐब अरनऊत़ रहिमहुमुल्लाह द्वारा किसी ह़दीस़ को स़ह़ीह़ कहने को आधार बनाया गया है।

अष्टम: आवश्यकतानुसार मैंने ह़दीस़ के कुछ अस्पष्ट शब्दों का अर्थ स्पष्ट कर दिया है।

नवम: संभवतः यह अल्लाह की तौफ़ीक़ (अनुग्रह, कृपा) ही है कि इन समस्त जीवन पूँजी (फ़ज़ाएल -ए- आमाल) की कुल संख्या तीन सौ साठ (३६०) है, जोकि वर्ष के दिनों की (अनुमानित) संख्या है, कोई मुसलमान यदि प्रत्येक दिन एक पूँजी (फ़ज़लीत) का भी पालन करे तो पूरे वर्ष में वह जीवन के ऐसे बहुमूल्य पूँजियों का पालन कर चुका होगा जिनका पालन एक विवश मनुष्य पूरे जीवन काल में नहीं कर पाता। अनुगृहीत वही है जिसे अल्लाह अपना अनुग्रह प्रदान करे।

मैं अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि इस पुस्तक को प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए लाभदायक बनाए जो इसे पढ़े, अथवा सुन, या इसे प्रसारित करे एवं इस का पालन करे, दयावान अल्लाह पर मेरा भरोसा है, मैं (अपना मामला) उसी के हवाले करता हूँ तथा वही मेरा सहारा है, ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अज़ीज़िल ह़कीम (सामर्थ्यवान तत्वदर्शी अल्लाह की तौफीक़ के बिना न किसी भलाई के करने की ताक़त है न किसी बुराई से बचने का सामर्थ्य)।

मुह़म्मद बिन अब्दुर्रह़मान बिन अब्दुल्लाह अल-सुबैहीन

जीवन की पूंजी

३६० पूंजी

जीवन की वो पूँजी जिनसे लोक परलोक का उद्देश्य प्राप्त होता है

२१० पूंजी

- ५ पूँजी — धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी
- १४ पूँजी — अमल (कर्म) के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी
- १४६ पूँजी — पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी
- ३१ पूँजी — नफ़्स (स्वयं) से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी
- १० पूँजी — सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी
- ४ पूँजी — आसपास के लोगों से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

जीवन की वो पूँजी जिनसे लोक परलोक में अप्रिय वस्तुएं (मकरूहात) समाप्त होती हैं

९१ पूंजी

- ५३ पूँजी — धर्म के लिए हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी
- १७ पूँजी — मृत्यु पश्चात अप्रिय वस्तुओं से मुक्ति दिलाने वाली पूँजी
- २१ पूँजी — संसार में हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी

ऐसी बहुमूल्य पूँजी, जिनसे अल्लाह का उद्देश्य पूरा होता है, उसका सान्निध्य और कृपा प्राप्त होती है।

५९ पूँजी

- २५ पूँजी — अल्लाह के उद्देश्य की पूर्ति करने वाली पूँजी
- १३ पूँजी — अल्लाह के निकट कर देने वाली पूँजी
- २१ पूँजी — अल्लाह की कृपा से अनुगृहीत करने वाली पूँजी

प्रथम अध्याय:

ऐसी बहुमूल्य पूँजी, जिनसे अल्लाह का उद्देश्य पूरा होता है, उसका सान्निध्य और कृपा प्राप्त होती है।

यह अध्याय तीन खंडों पर आधारित है:

प्रथम खंड: ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह का उद्देश्य पूरा होता है (२५)

द्वितीय खंड: ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह का सान्निध्य प्राप्त होता है (१३)

तृतीय खंड: ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह तआला की कृपा प्राप्त होती है (२१)

प्रथम अध्याय:

प्रथम खंड: ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह का उद्देश्य पूरा होता है

२५ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १

१- दुआ (प्रार्थना)

फ़ज़ीलत (प्रधानता): दासता एवं भक्ति की पूर्ति एवं प्राप्ति

प्रमाण: नुअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दुआ ही इबादत (प्रार्थना ही पूजा) है" फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयत का पाठ किया: ﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ अनुवाद: (तथा तेरे रब का आदेश पारित हो चुका है कि मुझ से प्रार्थना करो मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करूँगा। निश्चय ही जो लोग मेरी उपासना से विमुखता प्रकट करते हैं वह शीघ्र ही अपमानित हो कर नरक में प्रवेश करेंगे)। सूरह ग़ाफ़िर: ६०। (तिर्मिज़ी ने इसे रिवायत किया है, ह़दीस़ संख्या: २९६९, और कहा है: "यह ह़दीस़ ह़सन स़ह़ीह़ है", तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २

२- सत्यवादिता का पालन

फ़ज़ीलत (प्रधानता): सच्चाई का पालन

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि: "सच्चाई नेकी का मार्ग दिखाती है तथा नेकी जन्नत की ओर ले जाती है और आदमी सच बोलता रहता है यहाँ तक कि वह स़िद्दीक़ (सत्यवादी होने) का दर्जा प्राप्त कर लेता है। तथा झूठ बुराई का मार्ग दिखाता है और बुराई जहन्नम की ओर ले जाती है, आदमी झूठ बोलता रहता है यहाँ तक कि वह अल्लाह के निकट कज़्ज़ाब (महा झूठा) लिख दिया जाता है"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारी ने रिवायत किया है, ह़दीस़ संख्या: ६०९४, तथा मुस्लिम ने भी रिवायत किया है, ह़दीस़ संख्या: २६०७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३

३- अल्लाह का तक़वा (भय)

फ़ज़ीलत (प्रधानता): मानव अल्लाह के निकट सबसे सम्मानित प्राणी हो जाता है।

प्रमाण: अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿إِنَّ أَكْرَمَكُم عِندَ اللَّهِ أَتقاكُم﴾ अनुवाद: (वास्तव में तुम में अल्लाह के समीप सबसे आदरणीय वही है जो तुम में अल्लाह से सबसे अधिक डरता हो)। सूरह हुजुरात: १३।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४ - ५

४-५ क्रोध को सहन करना और लोगों को क्षमा करना

फ़ज़ीलत (प्रधानता): तक़वा (अल्लाह से भय) का पालन करना।

प्रमाण: अल्लाह तआला का फ़रमान है: ﴿أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ * الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ﴾ अनुवाद: (जो (स्वर्ग) उन परहेज़गारों (आज्ञाकारियों) के लिए तैयार की गई है जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते हैं, और क्रोध पी जाते हैं एवं लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं, और अल्लाह सदाचारियों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरान: १३३-१३४।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६

६- तेज धूप में चाश्त की नमाज़ अदा करना।

फ़ज़ीलत: भक्त का अव्वाबीन (अल्लाह की ओर अत्याधिक झुकने वाले बंदों) में से होना।

प्रमाण: ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ लोगों को चाश्त (इसका समय सूर्योदय के लगभग पंद्रह मिनट बाद से लेकर ज़ुह्र की नमाज़ से लगभग दस मिनट पहले तक रहता है) के समय नमाज़ पढ़ते देखा तो कहा: हाँ, ये लोग अच्छी तरह जानते हैं कि इस समय के स्थान पर किसी अन्य समय में नमाज़ अदा करना श्रेयस्कर है। निःसंदेह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है: "अव्वाबीन (वे लोग जो पश्चाताप करते हैं और अल्लाह की ओर मुड़ते हैं) की नमाज़ तब अदा की जाती है जब दूध छुड़ाए हुए ऊंटों के पैर जलने लगते हैं"। (सहीह मुस्लिम, हदीस संख्या: ७४८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७

७- चालीस दिनों तक तकबीर -ए- ऊला के साथ नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: निफ़ाक़ (पाखण्ड) से मुक्ति।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए चालीस दिन तक तकबरीर -ए- ऊला के साथ जमात के संग नमाज़ पढ़ी तो उसके लिए दो प्रकार की मुक्ति लिख दी जाती है: एक आग से मुक्ति दूसरी निफ़ाक़ से मुक्ति"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २४१ एवं अह़मद: १२५८३ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८

८- रोज़ा

फ़ज़ीलत: सबसे उत्तम एवं सबसे शुद्ध कर्म।

प्रमाण: अबू उमामह रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैंने कहा: हे अल्लाह के रसूल! मुझे ऐसा कर्म करने का आदेश दीजिए जो मुझे स्वर्ग में प्रवेश दिला दे। तो आप ने फ़रमाया: "रोज़े रखा करो क्योंकि उस जैसा कोई कर्म नहीं है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२७०७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९

९- अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण)

फ़ज़ीलत: सबसे उत्तम एवं सबसे शुद्ध कर्म।

प्रमाण: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हारे सबसे उत्तम एवं तुम्हारे रब के निकट सबसे शुद्ध एवं सर्वोच्च श्रेणी वाले कर्म के बारे में तुम्हें सूचित न करूँ? वह कर्म तुम्हारे लिए सोना चाँदी खर्च करने से भी उत्तम है, वह कर्म तुम्हारे लिए इससे भी उत्तम है कि तुम (युद्ध भूमि में) अपने शत्रु से टकड़ाओ, वह तुम्हारा गला काटें और तुम उनका (अर्थात तुम्हारे जिहाद करन से भी श्रेष्ठ है), लोगों ने कहा: हाँ (अवश्य बताईये), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: वह अल्लाह तआला का ज़िक्र है"। (इसे तिर्मिज़ी: ३३७७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०

१०- सौ बार यह दुआ पढ़ना: «لا إلهَ إلا اللهُ...» (ला इलाहा इल्लल्लाहु...)

फ़ज़ीलत: सबसे उत्तम एवं सबसे शुद्ध कर्म।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति दिन भर में सौ बार यह दुआ पढ़े: «لا إلهَ إلا اللهُ وحدَهُ لا شريكَ لَهُ لَهُ الملكُ ولَهُ الحمدُ وَهُوَ على كلِّ شيءٍ قديرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, (अर्थात: "अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत व अकेला है उसका कोई साझीदार नहीं, बादशाहत उसी की है तथा समस्त प्रकार की प्रशंसा भी उसी के लिए है, और वह प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्य रखने वाला है)", तो उसे दस दासों को स्वतंत्र करने का पुण्य दिया जायेगा, सौ नेकियां (सद्कर्म) उसके लिए लिखी जायेंगी तथा सौ बुराईयां उससे मिटा दी जायेंगी। इसके अतिरिक्त वह व्यक्ति पूरे दिन शैतान से सुरक्षित रहेगा, और कोई भी व्यक्ति उससे उत्तम कर्म लेकर नहीं आयेगा, सिवाय उस व्यक्ति के जो उससे अधिक कर्म करे (तो उसे अधिक पुण्य मिलेगा)। (इस ह़दीस़ को बुख़ारी: ३२९३ एवं मुस्लिम: २६९१ ने रिवायत किया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११

११- भोर-सांझ सौ बार यह दुआ पढ़ना: «سبحان الله وبحمده» सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि

पुण्य: सबसे उत्तम एवं सबसे शुद्ध कर्म।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "कोई व्यक्ति जब सुबह करे और जब शाम करे तो सौ बार «سبحان الله وبحمده» सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि (अर्थात: अल्लाह पवित्र है तथा उसके लिए समस्त प्रशंसा है) कहे, तो क़्यामत के दिन कोई भी व्यक्ति उससे उत्तम कर्म लेकर नहीं आयेगा, सिवाय उसके जो इतनी बार ही (यह वाक्य) कहे अथवा इससे अधिक बार कहे"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २६९२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२-१३

१२-१३: भोजन कराना तथा तथा परिचित व अपरिचित सभों को सलाम करना

फ़ज़ीलत: सबसे उत्तम एवं सबसे शुद्ध कर्म।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया, कौन सा इस्लाम उत्तम है? तो आपने फ़रमाया: "तुम भोजन कराओ तथा सब को सलाम करो, यद्यपि तुम उसे पहचानते हो अथवा नहीं"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारी: १२ व मुस्लिम: ३९ ने रिवायत किया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी१४-१७

१४-१७: किसी मुसलमान को प्रसन्न करना, उसकी परेशानी दूर करना, उसका ऋण चुकाना तथा उसकी भूख मिटाना

फ़ज़ीलत: सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कर्म है।

प्रमाण: इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्य यह है कि कोई किसी मुसलमान को प्रसन्नता पहुँचाए, अथवा उसकी कोई परेशानी दूर करे, या उसका ऋण (क़र्ज़) चुका दे अथवा उसकी भूख दूर कर दे"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: १२६४६ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८

१८- अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना, अल्लाह की राह में एक घड़ी के लिए खड़ा होना, एक दिन और एक रात अथवा एक दिन अल्लाह के रास्तमें में रखवाली करना

फ़ज़ीलत: ऐसा करना, ह़जर -ए- असवद के पास शब -ए- क़द्र में क़याम करने (नमाज़ पढ़ने), साठ वर्ष तक उपासना करने, साठ वर्षों तक केवल नमाज़ पढ़ते रहने, एक महीना तक रोज़ा रखने और क़याम करने से उत्तम एवं श्रेष्ठ है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "अल्लाह के मार्ग में एक घड़ी के लिए खड़ा होना ह़जर -ए- असवद के पास शब -ए- क़द्र में क़याम करने से उत्तम है"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बानः १३६४६ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "आदमी का अल्लाह के मार्ग में पंक्ति के अंदर खड़ा होना अल्लाह के निकट साठ वर्ष की पूजा से उत्तम है"। (इस ह़दीस़ को ह़ाकिमः २३९६ ने रिवायत किया है, तथा स़ुयूती एवं अलबानी ने स़ह़ीह़ करार दिया है)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तुम में से किसी का अल्लाह के रास्ते में खड़ा होना, साठ साल तक केवल नमाज़ ही पढ़ते रहने से बेहतर है"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः १०९३७ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है किः मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "एक दिन और एक रात सरहद पर पहरा देना, एक महीना के रोज़ा एवं क़याम से उत्तम है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः १९१३)।

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "अल्लाह की राह में एक दिन रखवाली करना एक महीना के रोज़ा रखने एवं तहज्जुद पढ़ने से अफ़ज़ल (उत्तम) है", आपने "अफ़ज़ल" के स्थान पर कभी "ख़ैर" (बेहतर) है का शब्द प्रयोग किया। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः १६६५ ने रिवायत किया है, एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९

१९- शबे क़द्र का अमल (कर्म)

फ़ज़ीलत: हज़ार महीनों के अमल से बेहतर है।

प्रमाण: सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का फ़रमान है: {لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ} अनुवाद: (शबे क़द्र हज़ार महीनों से उत्तम है)। सूरह क़द्र: ३।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०

२०- आपस में मेल-मिलाप कराना

फ़ज़ीलत: रोज़ा, नमाज़ और ख़ैरात (दान-पुण्य) से भी उत्तम है।

प्रमाण: अबुद्दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें रोज़े, नमाज़ एवं ख़ैरात से बढ़ कर अमल (कर्म) न बताऊँ? ख़ाबा ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के रसूल! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: आपसी मेल-मिलाप तथा संबंधों को बेहतर बनाना, (और इसके विपरीत) पारस्परिक मेल-मिलाप एवं आपसी संबंधों में फूट डालना, (धर्म को) मूंड देने वाला अवगुण है"। (इसे अबू दावूद: ४९१९, तिर्मिज़ी: २५०९ एवं अहमद: २८१५६ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे ख़ीह करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१

२१- जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना

फ़ज़ीलत: सबसे उत्तम नमाज़ है।

प्रमाण: अबू उबैदा बिन अल-जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "नि:संदेह रूप से सर्वोत्तम नमाज़ जुमुआ के दिन जमाअत के संग फ़ज्र की नमाज़ पढ़ना है"। (इसे बज़्ज़ार ने अल-मुसन्द: १२७९ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने ख़ीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२

२२- घर में नफ़्ल नमाज़

फ़ज़ीलत: फ़र्ज़ नमाज़ों के पश्चात सबसे उत्तम नमाज़ है।

प्रमाण: ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हे लोगो! अपने घरों में नमाज़ पढ़ा करो, क्योंकि आदमी की सर्वश्रेष्ठ नमाज़ वही है जो उसके घर में अदा हो, सिवाय फ़र्ज़ नमाज़ के"। (सहीह बुख़ारी: ७३१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३

२३- तहज्जुद पढ़ना तथा सौ आयत के साथ क़याम करना

फ़ज़ीलत: फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सबसे श्रेष्ठ उपासना है तथा बंदा उपासकों में गिना जाता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सबसे उत्तम नमाज़, रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) है"। (सहीह मुस्लिम: ११६३)।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति सौ आयतों से क़्याम करे (नमाज़ पढ़े), वह क़ानितीन (उपासकों) में लिखा जाता है"। (इस हदीस को अबू दावूद: १३९८ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २४

२४- मुहर्रम मास के रोज़े (उपवास)

फ़ज़ीलत: रमज़ान के बाद सबसे उत्तम रोज़ा है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "रमज़ान के बाद सबसे उत्तम रोज़े, अल्लाह के महीने, मुहर्रम के (रोज़े) हैं"। (सहीह मुस्लिम: ११६३)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५

२५- इशा की नमाज़ के बाद चार रक्अत इस प्रकार से पढ़ना कि उनके मध्य सलाम फेरने के द्वारा बाधा न डाले

फ़ज़ीलत: उन रक्अतों के समान शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ने का पुण्य प्राप्त होगा

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "जो व्यक्ति इशा के बाद चार रक्अत नमाज़ पढ़े तथा सलाम फेरने के द्वारा उनके मध्य जुदाई न डाले तो उसे उन रक्अतों के समान शबे क़द्र (की नमाज़) का पुण्य प्राप्त होगा"। (इसे इब्ने अबी शैबा ने अल-मुसन्नफ़ (२/७२/१) में रिवायत किया है तथा अलबानी ने सहीह कहा है)।

दूसरा अध्याय

ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह का
सान्निध्य प्राप्त होता है

१३ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६

१- सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का तक़वा (भय)

फ़ज़ीलत (प्रधानता): भक्त को अल्लाह तआला की संरक्षकता, साहचर्य और प्रेम प्राप्त होता है।

प्रमाण: {أَلا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لاَ خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلاَ هُمْ يَحْزَنُونَ الَّذِينَ آمَنُواْ وَكَانُواْ يَتَّقُونَ} अनुवाद: (याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर न कोई भय है तथा न वो दुखी होते हैं, ये वो लोग हैं जो ईमान लाये तथा (बुराइयों से) बचते रहे)। सूरह यूनुस: ६२-६३।

{وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ} अनुवाद: (और अल्लाह आज्ञाकारियों का साथी है)। सूरह जासियह: १९।

{وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ} अनुवाद: (तथा जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों (संयमी) के साथ है)। सूरह तौबा: ३६।

{إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا} अनुवाद: (विश्वास करो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों (संयमी) तथा नेक लोगों के साथ है)। सूरह नह्ल: १२८।

{فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ} अनुवाद: (तो अल्लाह तआला भी ऐसे परहेज़गारों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरान: ७६।

{إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ} अनुवाद: (अल्लाह तआला परहेज़गारों से प्रेम करता है)। सूरह तौबा: ७।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७

२- एहसान (उपकार)

फ़ज़ीलत: बंदे को अल्लाह तआला का साथ एवं प्रेम प्राप्त होता है।

प्रमाण: {إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَ الَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ} अनुवाद: (विश्वास करो कि अल्लाह तआला परहेज़गारों (संयमी) तथा नेक लोगों के साथ है)। सूरह नह्ल: १२८।

{وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ} अनुवाद: (अल्लाह एहसान करने वालों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरान: १३४।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८

३- अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण)

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला का साथ।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के साथ होता हूँ जो वह मेरे साथ गुमान रखता है। जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ७४०५ व मुस्लिम: २६७५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९

४- अल्लाह से दुआ करना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला की मईयत (साथ)

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के साथ होता हूँ जो वह मेरे साथ गुमान रखता है। जब वह मुझे पुकारता है तो मैं उसके साथ होता हूँ"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २६७५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०

५- लोगों को लाभ पहुँचाना

फ़ज़ीलत: ऐसा करने वाला अल्लाह के निकट सबसे प्रिय भक्त है।

प्रमाण: इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय व्यक्ति वह है जो लोगों के लिए सर्वाधिक लाभदायक हो"। (इसे त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: १३६४६ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१

६- अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा)

फ़ज़ीलत: अल्लाह का अपने बंदे से प्रेम करना।

प्रमाण: {إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ} अनुवाद: (निःसंदेह अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों से प्रेम करता है)। सूरह आले इमरान: १५९।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२

७- अल्लाह की ख़ातिर एक-दूजे से प्रेम, एक दूसरे की ज़ियारत (भ्रमण), भाईचारा तथा आपसी सद्भावना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला का अपने बंदा से प्रेम करना।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि: "एक व्यक्ति अपने भाई से भेंट करने गया जो दूसरी बस्ती में था, अल्लाह तआला ने उसके मार्ग पर एक फ़रिश्ते को उसकी निगरानी के लिए नियुक्त कर दिया। जब वह व्यक्ति उस (फ़रिश्ते) के समक्ष आया तो उसने कहा: कहाँ जाना चाहते हो? उसने कहा: मैं अपने एक भाई के पास जाना चाहता हूँ जो उस बस्ती में है। उसने पूछा: क्या तुम्हारा उस पर कोई उपकार है जिसे पूर्ण करना चाहते हो? उसने कहा: नहीं, बस मुझे उसके साथ केवल सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह की ख़ातिर प्रेम है। फ़रिश्ते ने कहा: तो मैं अल्लाह ही की ओर से तुम्हारे पास भेजा जाने वाला संदेष्टा हूँ कि अल्लाह तआला को भी तुम्हारे साथ उसी प्रकार से प्रेम है, जिस प्रकार से तुमने उसकी ख़ातिर अपने भाई से प्रेम किया है"। (स़हीह़ मुस्लिम: २५६७)।

उबादा बिन स़ामित रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान रब से रिवायत करते हुए सुना: "मेरी ख़ातिर आपस में प्रेम करने वालों के लिए, उपदेश व ख़ैर ख़्वाही (शुभचिंतन) करने वालों के लिए तथा एक दूसरे की ज़ियारत करने वालों के लिए मेरा प्रेम अनिवार्य हो गया"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: ५७७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३

८- अल्लाह की ख़ातिर एक दूसरे से संबंध रखना

फ़ज़ीलत: बंदे को अल्लाह का प्रेम प्राप्त होता है।

प्रमाण: उबादा बिन स़ामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मेरी ख़ातिर एक दूसरे से संबंध रखने वालों के लिए मेरा प्रेम अनिवार्य हो चुका है"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: ५७७ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४

९- अल्लाह की ख़ातिर एक दूसरे पर खर्च करना

फ़ज़ीलत: बंदे को अल्लाह का प्रेम प्राप्त होता है।

प्रमाण: उबादा बिन स़ामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मेरी ख़ातिर एक दूसरे पर खर्च करने वालों के लिए मेरा प्रेम अनिवार्य हो चुका है"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: ५७७ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५

१०- अंसार से प्रेम

फ़ज़ीलत: बंदे को अल्लाह का प्रेम प्राप्त होता है।

दलील: हारिस बिन ज़ियाद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अंसार से प्रेम रखेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उससे प्रेम रखेगा"। (इस हदीस को इब्ने हिब्बान: ७२७३, इब्ने माजह: १६३, नसई: २६७४ एवं अहमद: १५७८० ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे सहीह करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३६

११- अल्लाह से मिलने की इच्छा रखना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला का बंदे से मिलने की चाहत रखना।

प्रमाण: उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अल्लाह से मिलना पसंद करता है अल्लाह तआला भी उससे मिलना पसंद करता है"। (इसे बुख़ारी: ६५०७ व मुस्लिम: २६८३ ने रिवायत किया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३७

१२- संबंध जोड़ना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला बंदे से अपना संबंध जोड़ता है।

प्रमाण: आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "रहिम (ख़ूनी रिश्ता) अर्श के साथ चिमटा हुआ है और यह कहता है: जिसने मेरे संबंध को जोड़ कर रखा अल्लाह उसके साथ संबंध जोड़ेगा, तथा जिसने मेरे संबंध को तोड़ दिया अल्लाह तआला उससे संबंध तोड़ लेगा"। (सहीह मुस्लिम: २५५५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३८

१३- सज्दे (शीश नवाने) की स्थिति में अत्यधिक दुआ (प्रार्थना) करना

फ़ज़ीलत: यह प्रार्थना स्वीकार किये जाने का स्थान है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बंदा अपने रब के सर्वाधिक निकट उस स्थिति में होता है जब वह सज्दे में होता है, अतः इस स्थिति में अधिकाधिक दुआ किया करो"। (स़हीह़ मुस्लिमः ४८२)।

तीसरा अध्याय

ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह तआला
की कृपा प्राप्त होती है

२१ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३९

१- अल्लाह का तक़वा (आज्ञापालन)

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति।

प्रमाण: {لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ} अनुवाद: (उन लोगों के लिए जो डरें, उनके पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं जिनमें नहरें बह रही हैं, वो उनमें सदावासी होंगे, और निर्मल पत्नियां होंगी, तथा अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त होगी)। सूरह आले इमरान: १५।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४०

२- खाने-पीने पर अल्लाह की प्रशंसा व स्तुति गान करना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला इस बात पर (अपने) बंदे से प्रसन्न होता है कि वह भोजन करे और उस पर अल्लाह की प्रशंसा करे, अथवा पीने की कोई चीज़ पिये और उस पर अल्लाह की प्रशंसा करे"। (स़हीह़ मुस्लिम: २७३४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४१

३- मिस्वाक (दतवन)

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति।

प्रमाण: आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मिस्वाक मुख की स्वच्छता एवं रब की प्रसन्नता का साधन है"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ४ में तथा इब्ने माजह: ३४४९ ने रिवायत किया है, तथा इब्ने ह़िब्बान, मुन्ज़िरी एवं नववी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४२

४- भोर-सांझ यह दुआ पढ़ना: «...رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا» रज़ीना बिल्लाहि रब्बन...

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला बंदे को अपनी प्रसन्नता प्रदान करता है।

अबू सल्लाम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति भोर में अथवा सांझ में यह पढ़ लिया करे: «رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا» रज़ीना बिल्लाहि रब्बन व बिलइस्लामि दीनन व बिमुहम्मदिन रसूलन, (अर्थात: हम इस बात से प्रसन्न हैं कि अल्लाह हमारा रब (पालनहार), इस्लाम हमारा धर्म तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे रसूल हैं)।तो अल्लाह तआला पर यह अधिकार होगा कि वह उसे राज़ी कर दे"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ५०७३ ने रिवायत किया है, तथा शुऐब अल-अरनऊत़ ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४३

५- तौबा

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला उसकी तौबा (पश्चाताप) स्वीकार करता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने सूरज के पश्चिम से उदय होने के पूर्व तौबा कर लिया, तो अल्लाह तआला उसकी तौबा को स्वीकार कर लेगा"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २७०३)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४४

६- क़ुरआन सीखना एवं सिखाना

फ़ज़ीलत: वह सर्वोत्तम मानव है।

प्रमाण: उस़्मान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में सबसे उत्तम मानव वह है जो क़ुरआन पढ़े एवं पढ़ाए"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ५०२७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४५

७- प्रत्येक नमाज़ के पश्चात ३३ बार «سبحان الله و الحمد لله و الله أكبر» "सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि वल्लाहु अकबर" पढ़ना

फ़ज़ीलत: ऐसा मानव सबसे उत्तम है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊँ कि उस का पालन कर के तुम उन लोगों तक पहुँच जाओगे जो तुम से आगे बढ़ चुके हैं, तथा तुम्हारे बाद कोई तुम्हें नहीं पा सकेगा, और तुम जिन लोगों में हो उन से उत्तम हो जाओगे, सिवाय उसके जो उसी के समान कर्म करे (तो वह तुम्हारे बराबर हो जायेंगे)। तुम प्रत्येक नमाज़ के बाद: ३३ बार सुब्हानल्लाह, ३३ बार अल्हम्दुलिल्लाह तथा ३३ बार अल्लाहु अकबर, पढ़ लिया करो"। (स़हीह़ बुख़ारी: ८४३ व मुस्लिम: ५९५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४६

८- इफ़्तार करने (रोज़ा खोलने) में जल्दी करना

फ़ज़ीलत: ऐसे लोग सबसे उत्तम हैं।

प्रमाण: सह्ल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "लोग उस समय तक भलाई में रहेंगे जब तक वह इफ़्तार करने में जल्दी करते रहेंगे"। (स़हीह़ बुख़ारी: १९५७ व मुस्लिम: १०९८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४७

९- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला बंदे पर दस बार रहमत (कृपा) भेजता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने मुझ पर एक बार दुरूद भेजा अल्लाह तआला उस पर दस बार रहमत भेजेगा"। (सहीह मुस्लिम: ४०८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४८

१०- अगली पंक्ति में नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: बंदा पर अल्लाह तआला रहमत भेजता है।

प्रमाण: बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला पहली पंक्ति में नमाज़ पढ़ने वालों पर रहमत (कृपा) भेजता है तथा फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं"। (इस हदीस को नसई ने अल-कुब्रा: (३/६४५) में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने सहीह करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ४९

११- प्यासे जानवरों को पानी पिलाना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला बंदे का कर्म स्वीकार करता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक बार ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति अपने मार्ग से जा रहा था, सहसा उसे बहुत तेज़ प्यास लगी, उसने एक कुआँ देखा तो उस में उतर गया तथा अपनी प्यास बुझाई। बाहर निकला तो क्या देखता है कि एक कुत्ता हाँप रहा है तथा प्यास के कारण मिट्टी चाट रहा है, उस व्यक्ति ने सोचा कि इसे भी उसी तरह प्यास लगी है जिस तरह मुझे प्यास लगी थी, अतः वह कुआँ में उतरा तथा अपने मोज़े में पानी भरा फिर उसने कुत्ते को पिलाया, तो अल्लाह तआला ने उसका यह कृत्य स्वीकार कर लिया"। (सहीह बुख़ारी: ७४०५ व मुस्लिम: २६७५)।

पूँजी ५०

१२- अल्लाह के ज़िक्र (जाप) के लिए एकत्र होना (सभा में पवित्र अल्लाह का स्मरण करना)

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों के मध्य उसका उल्लेख करता है तथा उस पर शांति अवतरित करता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा एवं अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में गवाही दी कि आपने फ़रमाया: "जो समुदाय भी सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को याद करने के लिए (किसी स्थान पर) बैठती है, उनको फ़रिश्ते घेर लेते हैं, रह़मत (दया) ढ़ाँप लेती है तथा उन पर शांति का अवतरण होता है, और अल्लाह उनका उल्लेख उनके मध्य करता है जो उसके पास होते हैं"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २७००)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के साथ होता हूँ जो वह मेरे साथ रखता है। जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ, यदि वह मुझे अपने नफ़्स (मन) में याद करे तो मैं भी उसे अपने नफ़्स (मन) में याद करता हूँ, तथा यदि वह मुझे भरी सभा में याद करे तो मैं उसे उससे उत्तम सभा में याद करता हूँ"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ७४०५ व मुस्लिम: २६७५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५१

१३- अल्लाह तआला का ज़िक्र (जाप, स्मरण, स्तुति)

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला का अपने बंदे को याद करना।

प्रमाण: {فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ} अनुवाद: (तुम मुझे याद करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा)। सूरह बक़रह: १५२।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५२

१४- अपने दिल में अल्लाह को याद करना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला बंदा को अपने नफ़्स (जी) में याद करता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के साथ होता हूँ जो वह मेरे साथ रखता है। जब वह मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ, यदि वह मुझे अपने नफ़्स (मन, दिल) में याद करे तो मैं भी उसे अपने नफ़्स (मन, दिल) में याद करता हूँ, तथा यदि वह मुझे भरी सभा में याद करे तो मैं उसे उससे उत्तम सभा में याद करता हूँ"। (स़हीह़ बुख़ारी: ७४०५ व मुस्लिम: २६७५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५३

१५- विनम्रता एवं विवशता

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला उसकी क़सम (शपथ) पूर्ण करता है।

प्रमाण: हारिसा बिन वह्ब अल-ख़ुज़ाई रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "क्या मैं तुम्हें स्वर्ग वासियों के संबंध में सूचना न दूँ? वो देखने में कमज़ोर एवं असमर्थ लगते हैं किंतु यदि वो किसी बात पर क़सम खा लें तो अल्लाह तआला उसे अवश्य पूरा करता है"। (सहीह बुख़ारी: ४९१८ व मुस्लिम: २८५३)

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५४

१६- मस्जिद में फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के बाद घर के लिए कुछ (नफ़्ल) नमाज़ें बचा कर रखना

फ़ज़ीलत: घर में ख़ैर व बरकत (कल्याण, समृद्धि) का अवतरण।

प्रमाण: जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई अपनी मस्जिद में (समूह के साथ) नमाज़ अदा कर ले, तो अपनी नमाज़ में से अपने घर के लिए भी कुछ भाग रखे क्योंकि उसके घर में नमाज़ पढ़ने के कारण घर में समृद्धि आयेगी"। (सहीह मुस्लिम: ७७८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५५

१७- सूरह बक़रह का पाठ करना

फ़ज़ीलत: ख़ैर व बरकत (कल्याण, समृद्धि) का अवतरण।

प्रमाण: अबू उमामा अल-बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "सूरह बक़रह पढ़ा करो, क्योंकि इसे पढ़ना बरकत का कारण है"। (सहीह मुस्लिम: ८०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५६

१८- सेहरी खाना

फ़ज़ीलत: ख़ैर व बरकत (कल्याण, समृद्धि) की प्राप्ति।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सेहरी खाया करो क्योंकि सेहरी में बरकत होती है"। (सहीह बुख़ारी: १९२३ व मुस्लिम: १०९५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५७

१९- नेकी (सद्कर्म) के द्वारा बुराई (कुकर्म) को दूर करना

फ़ज़ीलत: बड़े सौभाग्य की बात है।

प्रमाण: {وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ * وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلَقَّاهَا إِلَّا ذُو حَظٍّ عَظِيمٍ} अनुवाद: (तथा समान नहीं होते पुण्य एवं पाप, आप दूर करें (बुराई को) उस के द्वारा जो सर्वोत्तम हो, तो सहसा आप के तथा जिस के बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया। और यह गुण उन्हीं को प्राप्त होता है जो सहन करें, तथा उन्हीं को होता है जो बड़े भाग्यशाली हों)। सूरह फ़ुस्सिलत (हा मीम सज्दह): ३४-३५।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५८

२०- जुमुआ के दिन सूरह कह्फ़ की तिलावत (पाठ) करना

फ़ज़ीलत: एक सप्ताह तक नूर (द्विव्य ज्योति) रहता है तथा उसके मध्य एवं बैत -ए-अतीक़ (काबा) के मध्य नूर ही नूर होता है।

प्रमाण: अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति जुमुआ के दिन सूरह कह्फ़ की तिलावत करेगा, उसके लिए दो जुमुआ के मध्य नूर ही नूर रहेगा"। (इस ह़दीस़ को ह़ाकिम: ३४२१२ ने रिवायत किया है, तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति जुमुआ के दिन सूरह कह्फ़ की तिलावत करता है उसके तथा बैत -ए- अतीक़ के मध्य नूर ही नूर (दिव्य प्रकाश) कर दिया जाता है"। (इसस ह़दीस़ को बैहक़ी ने अल-सुनन अल-कुब्रा: ६०७८ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ५९

२१- तीन सांस में पानी पीना

फ़ज़ीलत: पानी (पेय) में बरकत (कल्याण, आशीर्वाद) की प्राप्ति।

प्रमाण: अनस रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पीने की चीज़ में तीन बार सांस लेते थेष तथा फ़रमाते थे: "यह (विधि) अधिक तृप्त करने वाली (पौष्टिक), सुरक्षित तथा अधिक स्वादिष्ट है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २०२८)।

दूसरा अध्याय

जीवन की वो पूँजी जिनसे लोक परलोक में अप्रिय वस्तुएं (मकरूहात) समाप्त होती हैं

९१ पूँजी

यह अध्याय तीन खण्डों पर आधारित है:

प्रथम खण्ड: धर्म के लिए हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी (५३)

द्वितीय खण्ड: मृत्यु पश्चात मकरूहात (अप्रिय वस्तुओं) से मुक्ति दिलाने वाली पूँजी (१७)

तृतीय खण्ड: संसार में हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी (२१)

प्रथम खण्ड

धर्म के लिए हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी

५३ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६०

१- सौ बार «سبحان الله و بحمده» (सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि) पढ़ना

फ़ज़ीलत: सभी (छोटे) पाप क्षमा हो जाते हैं तथा हज़ार पाप मिटा दिये जाते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने एक दिन में सौ बार «سبحان الله و بحمده» सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि कहा, उसके समस्त पाप मिटा दिये जाते हैं, यद्यपि वह समुद्र की झाग के समान क्यों न हों"। (सहीह बुख़ारी: ६४०५ व मुस्लिम: २६९१)।

सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है: हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित थे कि आपने फ़रमाया: "क्या तुम में से कोई व्यक्ति ऐसा करने में असमर्थ है कि वह प्रत्येक दिन एक हज़ार पुण्य कमाए... वह सौ बार «سبحان الله» सुब्हानल्लाह कहे। उसके लिए हज़ार पुण्य लिख दिया जायेगा अथवा उसके हज़ार पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। (सहीह मुस्लिम: २६९८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६१

२- कड़ाके की ठंड और शारीरिक कष्ट के बावजूद अच्छे तरीके से पूर्णरूपेण वुज़ू करना

फ़ज़ीलत: सभी पाप (गुनाह -ए- सग़ीरा) क्षमा कर दिये जाते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब एक मुसलमान अथवा मोमिन बंदा वुज़ू करता एवं अपना मुख धोता है तो पानी (अथवा पानी की अंतिम बूँद) के साथ उसके मुख से वो समस्त पाप, जिन्हें उसने अपनी आँखों से देखते हुए किया था, निकल जाते हैं। और जब वह अपने हाथ धोता है, तो पानी (अथवा पानी की अंतिम बूँद) के साथ उसके वो समस्त पाप, जो उसके हाथ ने पकड़ कर किये थे,

निकल जाते हैं। तथा जब वह अपने पाँव धोता है, तो पानी (अथवा पानी की अंतिम बूँद) के साथ उसके वह समस्त पाप धुल जाते हैं जो पाँव ने चल कर किये थे, यहाँ तक कि वह पापों से पवित्र हो कर निकलता है"।

उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिसने वुज़ू किया तथा अच्छे ढ़ंग से वुज़ू किया, तो उसके शरीर से उसके पाप निकल जाते हैं, यहाँ तक कि उसके नाख़ुनों के नीचे से भी निकल जाते हैं"। (स़हीह़ मुस्लिमः २४५)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ से अवगत न करूँ जिसके द्वारा अल्लाह तआला पापों को क्षमा कर देता है तथा दर्जा को उच्च करता है? स़हाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहाः हे अल्लाह के रसूल, क्यों नहीं! तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः अप्रिय होने के बावजूद अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करना"। (स़हीह़ मुस्लिमः २५१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६२

३- पाप एवं अश्लीलता किए बिना ह़ज्ज करना

पुण्यः सभी पाप क्षमा कर दिए जाते हैं।

प्रमाणः अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुनाः "जो व्यक्ति केवल अल्लाह (को प्रसन्न करने) के लिए ह़ज्ज करे, फिर वह न पाप का भागी हो, न अश्लील कार्य करे एवं न ही बुराई एवं व्यभिचार में संलग्न हो, तो वह पापों से ऐसे मुक्त हो कर लौटेगा जैसे उसकी माता ने उसे आज ही जन्म दिया हो"। (स़हीह़ बुख़ारीः १५२१ व मुस्लिमः १३५०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६३

४- नमाज़ अदा करने के इरादा से मस्जिद -ए- अक़्सा जाना

पुण्य: समस्त (छोटे पापा) क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब सुलैमान अलैहिस्सलाम ने बैतुल मक़दिस का निर्माण कार्य पूरा कर लिया, तो उन्होंने अल्लाह से तीन चीज़ें मांगी: ऐसा निर्णय जो अल्लाह के निर्णय के अनुसार हो, ऐसा राज-पाट जो उनके बाद किसी को न मिले, तथा जो व्यक्ति भी इस मस्जिद में केवल नमाज़ की निय्यत (इरादा) से आए, वह पापों से उसी प्रकार पवित्र हो जाए जिस प्रकार वह उस दिन पापों से मुक्त था, जिस दिन उसकी माता ने उसको जन्म दिया था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: दो चीज़ें तो उन्हें मिल चुकीं, तथा मुझे आशा है कि तीसरी चीज़ भी मिल ही गई है"। (इस ह़दीस़ को नसई: ७७४, एवं इब्ने माजह: १४०८ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६४

५- क़ुर्बानी (बलि) का जानवर ज़ब्ह़ (वध) करते समय उपस्थित रहना

पुण्य: समस्त (छोटे पापा) क्षमा हो जाते हैं।

तर्क: इमरान बिन हुस़ैन रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हे फ़ातिमा! जाओ अपने क़ुर्बानी के पशु को (ज़ब्ह़ होते हुए) देखो, क्योंकि उसके रक्त की जो पहली बूँद गिरेगी उसके साथ ही तुम्हारे समस्त पाप क्षमा हो जायेंगे"। (इस ह़दीस़ को बैहक़ी ने अल-सुनन अल-कुब्रा: १०३३६ में रिवायत किया है तथा सुयूती ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६५

६- अल्लाह के रास्ते में शहादत (बलिदान)

पुण्य: ऋण (क़र्ज़) के सिवा समस्त पाप क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "शहीद का हर पाप क्षमा कर दिया जाता है सिवाय ऋण के"। (सहीह मुस्लिम: १८८६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६६

७- अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ना तथा उनकी अदायगी के दौरान कोई विचार मन में न लाना, तत्पश्चात अल्लाह से क्षमा याचना करना

पुण्य: पिछले समस्त पाप क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति मेरे इस वुज़ू करने के समान वुज़ू करे और इसके बाद दो रक्अत अदा करे तथा उनकी अदायगी के दौरान कोई विचान मन में न लाए, तो उसके पिछले समस्त पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। (सहीह बुख़ारी: १५९ व मुस्लिम: २२६)।

अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "कोई बंदा ऐसा नहीं जो कोई पाप कर बैठे फिर अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करे, तत्पश्चात खड़ा हो और दो रक्अतें पढ़े तथा अल्लाह से इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करे, परंतु अललाह उसे क्षमा कर देता है"। (इस हदीस़ को अबू दावूद: १५२१, तिर्मिज़ी: ६०४ तथा नसई ने अल-कुब्रा: १०१७५ में रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे स़हीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६७

८- ईमान तथा स़वाब व पुण्य के इरादा से रमज़ान मास में क़याम करना (रात्रि की नमाज़ पढ़ना)

पुण्य: पिछले समस्त पाप क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति रमज़ान में ईमान रखते हुए तथा ससवाब व पुण्य प्राप्त करने के इरादा से क़्याम करेगा तो उसके पिछले समस्त पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। (सहीह बुख़ारी: १९०१ व मुस्लिम: ७६०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६८

९- ईमान रखते हुए तथा सवाब व पुण्य के इरादे से शबे क़द्र में क़याम करना

पुण्य: पिछले पापों की माफ़ी।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति शबे क़द्र में ईमान रखते हुए तथा सवाब व पुण्य प्राप्त करने के इरादा से क़्याम करेगा, तो उसके पिछले समस्त पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। (सहीह बुख़ारी: १९०१ व मुस्लिम: ७६०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ६९

१०- इमाम की आमीन का फ़रिश्तों की आमीन के अनुकूल होना

पुण्य: पिछले समस्त पाप क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब इमाम आमीन कहे तो तुम भी आमीन कहो, क्योंकि जिसकी आमीन फ़रिश्तों की आमीन के अनुकूल हो गई, उसके पिछले समस्त पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। (सहीह बुख़ारी: ७८० व मुस्लिम: ४१०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७०

११- (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ) "ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि" पढ़ना

पुण्य: बहुतेरे पाप क्षमा हो जाते हैं।

तर्क: अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "धरती पर जो कोई भी व्यक्ति (इस दुआ को) कहेगा: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ) "ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि" (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह सबसे बड़ा है, तथा अल्लाह के सिवा न कोई शक्ति है और न कोई ताक़त, तो उसके (छोटे-छोटे) समस्त पाप क्षमा कर दिये जायेंगे, यद्यपि वो समुद्र के झाग के समान (अत्याधिक) ही क्यों न हों)"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३४६०, नसई: ९८७३ तथा अह़मद: ६५५४ ने रिवायत किया है एवं अह़मद शाकिर ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७१

१२- प्रत्येक नमाज़ के पश्चात ३३ बार सुब्ह़ानल्लाह- अल्ह़म्दुलिल्लाह- अल्लाहु अकबर पढ़ना, तथा सौ की गिनती पूरी करते हुए यह दुआ पढ़ना: (لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ) "ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर"

पुण्य: बहुतेरे पाप क्षमा हो जाते हैं।

तर्क: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने प्रत्येक नमाज़ के पश्चात तैंतीस बार सुब्ह़ानल्लाह, तैंतीस बार अल्ह़मदुलिल्लाह तथा तैंतीस बार अल्लाहु अकबर कहा, ये निन्यानवे हो गये, और सौ पूर्ण करने के लिए: (لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ) "ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर" (अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है, उसी का सारा राज्य और उसी की सब प्रशंसा है, और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है)। कहा, तो उसके पाप क्षमा कर दिये जायेंगे, चाहे वो समुद्र के झाग के समान ही क्यों न हों"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ५९७)।

पूँजी ७२

१३- घर में अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करने के बाद मस्जिद की ओर जमाअत (समूह) के संग नमाज़ पढ़ने के इरादा से निकलना तथा ज़्यादा क़दम चलना

पुण्य: पाप क्षमा होते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिसके द्वारा सर्वशक्तिमान अल्लाह पापों को मिटा देता है तथा श्रेणी को उच्च कर देता है? सहाबा ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के रसूल! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अप्रिय होने के बावजूद अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करना तथा खूब चल कर मस्जिद जाना"। (सहीह मुस्लिम: २५१)।

उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन है कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिसने नमाज़ के लिए वुज़ू किया तथा पूरी तरह वुज़ू किया, फ़िर फ़र्ज़ नमाज़ के लिए चल कर गया तथा लोगों के साथ अथवा समूह (जमाअत) के साथ नमाज़ पढ़ी अथवा मस्जिद में नमाज़ अदा की, तो अल्लाह तआला उसके पापों को क्षमा कर देगा"। (सहीह मुस्लिम: २३२)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब कोई बंदा वुज़ू करता है तथा इसको पूर्णरुपेण अच्छे से करता है, तत्पश्चात मस्जिद में आता है और उसका इरादा केवल नमाज़ पढ़ने का होता है, तथा उसको नमाज़ ही मस्जिद में ले जाती है, तो ऐसी स्थिति में वह जो क़दम भी उठाता है उसके कारण उसका एक दर्जा बुलंद होता है, इसके अतिरिक्त इसके बदले में उसका एक पाप भी क्षमा किया जाता है"। (सहीह बुख़ारी: २११९ व मुस्लिम: ६४९)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अपने घर में वुज़ू किया, फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की ओर चल कर गया ताकि अल्लाह के फ़र्ज़ों (अनिवार्यों) में से एक फ़र्ज़ को अदा करे तो उसके दोनों क़दम (की स्थिति यह होती है कि) उन में से एक पाप मिटाता है तथा दूसरा दर्जा बुलंद करता है"। (सहीह मुस्लिम: ६६६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७३

१४- एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना

पुण्य: पाप क्षमा होते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उन वस्तुओं के विषय में सूचना न दूँ जिनके द्वारा अल्लाह तआला दोषों को मिटाता तथा दर्जा बुलंद करता है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के रसूल!? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कष्ट की स्थिति में एवं न चाहते हुए भी अच्छे ढ़ंग से पूर्णरूपेण वुज़ू करना, मस्जिद की तरफ़ दूर से चल कर जाना एवं नमाज़ के बाद अगली नमाज़ की प्रतीक्षा करना। यह रिबात़ है, यह रिबात़ (अर्थात: नमाज़ की पाबंदी करना) है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २५१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७४

१५- रात की तंहाई में नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "स़दक़ा (दान-पुण्य) पाप को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को बुझाता है, तथा अर्धरात्रि के समय आदमी का नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ना"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ११३३० में, तिर्मिज़ी: २६१६ तथा अह़मद: २२४३९ ने रिवायत किया है, और इब्नुल क़य्यिम एवं अलबानी ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७५

१६- संपन्नता हो अथवा दरिद्रता, हर स्थिति में स़दका व ख़ैरात (दान-पुण्य) करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ* الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ﴾ अनुवाद: (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है। जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं)। सूरह आले इमरान: १३३-१३४।

मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "स़दक़ा (दान-पुण्य) पाप को ऐसे बुझा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ११३३० में, तिर्मिज़ी: २६१६ तथा अह़मद: २२४३९ ने रिवायत किया है, और इब्नुल क़य्यिम एवं अलबानी ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७६

१७- बारंबार ह़ज्ज एवं उमरा करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बारंबार ह़ज्ज एवं उमरा करते रहा करो, इसलिए कि ये दोनों दरिद्रता एवं पापों को उसी प्रकार से मिटा देते हैं, जैसे भठ्टी लोहे, सोने तथा चाँदी के मैल को मिटा देती है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ३७४३, तिर्मिज़ी: ८१० एवं नसई: ३५९७ ने रिवायत किया है तथा अह़मद शाकिर ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७७

१८- अल्लाह की राह में जिहाद करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

तर्क: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से किसी का अल्लाह के मार्ग में खड़ा होना, साठ वर्ष तक केवल नमाज़ ही पढ़ते रहने से भी उत्तम है, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा कर दे"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १०८७९ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७८

१९- सच्चे हृदय से अल्लाह के समक्ष तौबा (पश्चाताप) करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

तर्क: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ﴾ अनुवाद: (अर्थात: हे ईमान वालो तुम अल्लाह के समक्ष सच्ची तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप दूर कर दे)। सूरह तह़रीम: ८।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ७९

२०- अल्लाह का तक़वा एवं उसकी ख़शीयत (भय)

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ*﴾ अनुवाद: (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है)। सूरह आले इमरान: १३३।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ﴾ अनुवादः (हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह तआला तुम को एक निर्णय की चीज़ देगा तथा तुम से तुम्हारे पापों को दूर कर देगा और तुम को क्षमा कर देगा एवं अल्लाह तआला बड़ी कृपा वाला है)। सूरह अनफ़ालः २९।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ﴾ अनुवादः (हे ईमान वालो! अल्लाह तआला से भय खाओ तथा सीधी-सीधी बातें किया करो, ताकि अल्लाह तुम्हारे काम संवार दे और तुम्हारे पापों को क्षमा कर दे)। सूरह अहज़ाबः ७०-७१।

﴿مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ﴾ अनुवादः (वह स्वर्ग जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें हैं जो दुर्गंध करने वाला नहीं तथा दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के बड़ा स्वादिष्ट है तथा नहरें हैं शहद (मधु) की जो अत्यंत स्वच्छ हैं और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के मेवे हैं तथा उनके पालनहार की ओर से क्षमा है)। सूरह मुहम्मदः १५।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ अनुवादः (हे वो लोगो, जो ईमान लाए हो! अल्लाह से डरते रहा करो तथा उसके रसूल पर ईमान लाओ अल्लाह तुम्हें अपनी दया का दोहरा हिस्सा देगा तथा तुम्हें नूर (दिव्य ज्योति) देगा जिसके प्रकाश में चलो फिरोगे तथा तुम्हारे पापों को भी क्षमा कर देगा)। सूरह हदीदः २८।

﴿وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا﴾ अनुवादः (तथा जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके पापों को क्षमा कर देगा तथा उसे बड़ा भारी इनाम देगा)। सूरह तलाक़ः ५।

पूँजी ८०

२१- तौबा व इस्तिग़फ़ार (पश्चाताप व क्षमा याचना) करना तथा यह दुआ पढ़ना: «أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِيَ...» (अस्तग़फ़िरुल्लाहा अल्लज़ी...) तथा पाप हो जाने के पश्चात उस पर अड़े न रहना।

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ* الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ* وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ अनुवाद: (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है। जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं, और अल्लाह सादाचारियों से प्रेम करता है। और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें तो अल्लाह को याद करते हैं, फिर अपने पापों के लिए क्षमा माँगते हैं, तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते)। सूरह आले इमरान: १३३-१३५।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "उस ज़ात (अल्लाह) की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! यदि तुम (लोग) पाप न करो तो अल्लाह तआला तुम को (इस संसार से) ले जाये तथा (तुम्हारे बदले में) ऐसी क़ौम को ले आये जो पाप करें तथा अल्लाह तआला से क्षमा याचना करें तो वह उनको क्षमा कर दे"। (स़हीह़ मुस्लिम: २७४९)।

यसार बिन यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हु जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मौला (दास) थे, उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जो व्यक्ति यों कहता है: «أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ» (अस्तग़फ़िरुल्लाहा अल्लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवा अल-ह़य्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैहि) (अर्थात: मैं क्षमा माँगता हूँ अल्लाह से, वह जिसके सिवा कोई अन्य सत्य पूज्य नहीं, वह अमर है तथा निगरानी करने वाला है, और मैं उसी को ओर तौबा व पश्चाताप करता हूँ), तो उसको क्षमा कर दिया जाता है यद्यपि वह जिहाद (के मैदान) से भी भागा हो"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: १५१७ एवं तिर्मिज़ी: ३५७७ ने रिवायत किया है और अलबानी ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८१

२२- कष्ट एवं विपदा के समय सब्र तथा धैर्य से काम लेना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: अबू सईद ख़ुदरी एवं अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हुमा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मुसलमान को जो भी परेशानी, रोग, दुःख, रंज, कष्ट एवं ग़म पहुँचता है यहाँ तक कि उसे कोई कांटा भी चुभता है, तो अल्लाह तआला उसे उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारार (प्रायश्चित) बना देता है"। (सहीह बुख़ारी: ५४४१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८२

२३- बुराई तथा पाप हो जाने के बाद नेकी करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: {إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ} अनुवाद: (निश्चय ही नेकियां (सद्कर्म) बुराईयों (कुकर्म) को दूर कर देती हैं)। सूरह हूद: ११४।

अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बुराई के बाद (जो तुम से हो जाए) भलाई करो जो बुराई को मिटा दे"। (इस हदीस को अहमद: २१७५० तथा तिर्मिज़ी: १९८७ ने रिवायत किया है तथा इब्नुल अरबी एवं सफ़्फ़ारीनी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८३

२४- कबीरा गुनाहों (महा पापों) से दूर रहना

पुण्य: गुनाहों की माफ़ी।

प्रमाण: {إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا} अनुवाद: (यदि तुम उन महा पापों से बचते रहोगे जिन से तुम को रोका जाता है तो हम तुम्हारे छोटे पापों को दूर कर देंगे तथा तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे)। सूरह निसा: ३१।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८४

२५- पूरी दुआ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद ही दुरूद पढ़ना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: उबैई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने (नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से) कहा: "वज़ीफ़ा (जाप) में पूरी रात आप पर दुरूद ही पढ़ा करूँ? आप ने फ़रमाया: तब यह दुरूद तुम्हारे सभी कष्टों के लिए काफ़ी होगा तथा इससे तुम्हारे पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २४५७ ने रिवायत किया है तथा तिर्मिज़ी ने कहा है कि: यह ह़दीस़ ह़सन स़ह़ीह़ है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८५

२६- सूरह मुल्क की तिलावत (पाठ) करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क़ुरआन -ए- करीम की तीस आयतों वाली एक सूरह अपने पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिश करेगी, यहाँ तक कि उसे क्षमा कर दिया जायेगा"। (इस ह़दीस़ को इब्ने माजह: २८९९ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८६

२७- अल्लाह तआला के ज़िक्र (जाप) के लिए एकत्र होना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "निःसंदेह रूप से अल्लाह के कुछ ऐसे फ़रिश्ते (दूत) हैं जो ज़िक्र करने वालों को खोजते हुए रास्ते में चक्कर लगाते रहते हैं। जब वह कुछ लोगों को अल्लाह के ज़िक्र में व्यस्त पा लेते हैं तो वो एक दूसरे को बुलाते हैं कि: आओ तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया है"। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "वो अपने परों के द्वारा उन्हें घेर लेते हैं तथा सांसारिक आकाश की सीमा तक पहुँच जाते हैं। आप ने फ़रमाया: उनका सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान रब उन से पूछता है, हालांकि वह उन्हें अच्छे से जानता है: मेरे भक्त क्या कहते हैं? वह बताते हैं कि वो तेरी तस्बीह़ (पवित्रता) एवं तेरी बड़ाई का बखान करते हैं, तेरी प्रशंसा व स्तुति गान करते हैं तथा तेरी महानता व उच्चता का गुणगाण करते हैं। अल्लाह तआला फ़रिश्तों से कहता है: मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उन्हें क्षमा कर दिया"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६४०८ व मुस्लिम: २६८९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८७

२८- रात्रि के अंतिम पहर में इस्तिग़फ़ार करना

फ़ज़ीलत: पापों से मुक्ति।

तर्क: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हमारा महान व सर्वोच्च पालनहार प्रत्येक रात्रि सांसारिक आकाश पर उतरता है जब रात्रि का एक तिहाई भाग शेष रह जाता है, तथा आवाज़ देता है: कोई है जो मुझ से दुआ करे कि मैं उसे स्वीकार करूँ? कोई है जो मुझ से माँगे कि मैं उसे प्रदान करूँ? कोई है जो मुझ से क्षमा माँगे तो मैं उसे क्षमा कर दूँ"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ७४९४ व मुस्लिम: ७५८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८८

२९- भेंट करते समय मुसाफ़हा करना (हाथ मिलाना)

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो कोई दो मुसलमान भेंट करते हैं तथा मुसाफ़हा करते हैं, तो अलग होने के पूर्व ही उन दोनों को क्षमा कर दिया जाता है"। (इस हदीस को अबू दावूद: ५२१२, तिर्मिज़ी: २७२७, इब्ने माजह: ३७०३ तथा अहमद: १८८४५ ने रिवायत किया है और सुयूती एवं अलबानी ने इसे सहीह करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ८९

३०- अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ना: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا» (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहू व अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन व बिमुहम्मदिन रसूलन व बिलइस्लामि दीनन)

फ़ज़ीलत: गुनाहों की माफ़ी।

प्रमाण: सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनते हुए यह कहा: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا» (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहू व अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन व बिमुहम्मदिन रसूलन व बिलइस्लामि दीनन) अर्थात: (मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं है, तथा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके बंदे और रसूल हैं, मैं अल्लाह के रब होने पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रसूल होने पर तथा इस्लाम के दीन (धर्म) होने पर राज़ी व प्रसन्न हूँ), तो उसके पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। (सहीह मुस्लिम: ३८६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९०

३१- मार्ग से कष्टदायक वस्तुओं को हटा देना

फ़ज़ीलत: पापों की क्षमा।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति रास्ते में जा रहा था उसने वहाँ एक कांटेदार टहनी को देखा, तो उसे एक तरफ हटा दिया, अल्लाह ने उसका सम्मान करते हुए उसे क्षमा कर दिया। "। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६५२ व मुस्लिम: १९१४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९१-९२

३२-३३: क्रोध को पी जाना तथा लोगों को क्षमा कर देना

पुण्य: पापों की क्षमा।

प्रमाण: ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ* الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ﴾ अनुवाद: (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है। जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते हैं, तथा क्रोध पी जाते हैं एवं लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं)। सूरह आले इमरान: १३३-१३४।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९३

३४- अज़ान

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "मुअज़्ज़िन की आवाज़ जहाँ तक पहुँचती है, उसी के समान उसकी माफ़ी कर दी जाती है"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: १६२१ में, अह़मद: ७७२६ तथा अबू दावूद: ५१५ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९४

३५- प्यासे जानवरों को पानी पिलाना

फ़ज़ीलत: गुनाहों की माफ़ी।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक बार ऐसा हुआ कि एक व्यक्ति अपने मार्ग से जा रहा था कि उसे बहुत तेज़ प्यास लगी, उसने एक कुआँ देखा तो उस में उतर गया तथा अपनी प्यास बुझाई। बाहर निकला तो क्या देखता है कि एक कुत्ता हाँफ रहा है तथा प्यास के कारण मिट्टी चाट रहा है, उस व्यक्ति ने सोचा कि इसे भी उसी तरह प्यास लगी है जिस तरह मुझे प्यास लगी थी, अतः वह कुआँ में उतरा तथा अपने मोज़े में पानी भरा फिर उसने कुत्ते को पिला दिया, तो अल्लाह तआला ने उसका यह कृत्य स्वीकार कर लिया, तथा उसे क्षमा कर दिया"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: २४६६ व मुस्लिम: २२४४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९५

३६- मृतक के धन से स़दक़ा अर्थात दान-पुण्य करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा: "मेरे पिता की मृत्यु हो गई है, उन्होंने धन छोड़ा है तथा वस़ीयत नहीं की है, यदि (यह धन) उनकी ओर से स़दक़ा (दान) कर दिया जाये तो क्या (यह) उनकी ओर से कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) बनेगा? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: हाँ"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: १६३०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९६

३७- धनहीन को मोहलत देना तथा क़र्ज़ (ऋण) की अदायगी के समय कमी कोताही को क्षमा करना

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हुए कहते हैं कि: "एक व्यक्ति मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा स्वर्ग में प्रवेश किया तो उससे कहा गया: तू क्या कर्म करता था? उसने कहा: मैं लोगों से (क़र्ज़ पर) क्रय-विक्रय किया करता था, तो मैं तंगदस्त (कंगाल, निर्धन) को ढ़ील दिया करता था तथा सिक्का एवं नक़दी वसूल करने में विनम्रता अपनाता था, तो उसको क्षमा कर दिया गया"। (स़हीह़ बुख़ारी: २३९१ व मुस्लिम: १५६०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९७

३८- त़वाफ़ -ए- काबा में चलने वाला क़दम

फ़ज़ीलत: गुनाहों की माफ़ी।

दलील: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिसने इस घर का त़वाफ़ (परिक्रमा) सात बार किया, वह जितने क़दम भी रखेगा तथा उठायेगा अल्लाह हरेक पग के बदले उसकी एक गलती को माफ़ करेगा तथा एक नेकी लिखेगा और एक दर्जा बुलंद करेगा"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: ३६९७ तथा तिर्मिज़ी: ९५९ ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९८

३९- रुक्न -ए- यमानी तथा ह़जर -ए- असवद को छूना

पुण्य: पापों की क्षमा।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "उन दोनों पर हाथ फेरना पापों का प्रायश्चित है"। (इस ह़दीस़ को ह़ाकिम ने अल-मुस्तदरक: १८०५ तथा तिर्मिज़ी: ९५९ ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ९९

४०- अल्लाह के समक्ष सज्दा करना (शीश नवाना)

पुण्य: पापों से मुक्ति।

प्रमाण: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दास स़ौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम अल्लाह के समक्ष अधिकाधिक सज्दे किया करो क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सज्दा करोगे अल्लाह उसके परिणामस्वरूप तुम्हारा दर्जा अवश्य उच्च करेगा तथा तुम्हारा कोई पाप क्षमा कर देगा"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ४८८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १००

४१- बाज़ार में प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़ना: «لَا إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» (ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, व हुवा ह़य्युन ला यमूतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर)

पुण्य: दस लाख पाप क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हुए कहते हैं कि: "जो व्यक्ति बाज़ार जाते हुए यह दुआ पढ़े: «لَا إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» (ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, व हुवा ह़य्युन ला यमूतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर) (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, वही जीवन देता तथा मृत्यु देता है, वह अमर है कभी मरेगा नहीं, उसी के हाथ में हर प्रकार का कल्याण व भलाई है, तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), तो अल्लाह उसके लिए दस लाख नेकियां लिख देगा तथा दस लाख उसके पाप मिटा देगा और जन्नत में उसके लिए एक घर बनायेगा"। (इस ह़दीस़ को ह़ाकिम ने अल-मुस्तदरक: १९८० में तथा तिर्मिज़ी: ३४२८ ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०१

४२- अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना

फ़ज़ीलत: पिछले तथा अगले वर्ष के पाप क्षमा हो जाते हैं।

प्रमाण: अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अरफ़ा के रोज़ा संबंध में पूछा गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यह पिछले तथा अगले वर्ष के गुनाहों का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) बन जाता है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ११६२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०२

४३- आशूरा (दस मुह़र्रम) के दिन का रोज़ा रखना

फ़ज़ीलत: पिछले वर्ष के पापों का प्रायश्चित है।

प्रमाण: अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "आशूरा का रोज़ा (के विषय में), मैं अल्लाह से आशा रखता हूँ कि पिछले वर्ष के पापों का प्रायश्चित (कफ़्फ़ारा) बन जायेगा"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ११६२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०३

४४- एक उमरा के बाद दूसरा उमरा करना

पुण्य: दो उमरों के मध्य किये गये गुनाहों की माफ़ी।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक उमरा दूसरे उमरा तक (के गुनाहों) का कफ़्फ़ारा है"। (सहीह बुख़ारी: १७७३ व मुस्लिम: १३४९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०४

४५- सौ बार यह दुआ पढ़ना: «لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحْدَهُ لا شَرِيكَ له، له المُلْكُ وله الحَمْدُ، وهو علَى كُلِّ شيءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् हम्दु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

पुण्य: सौ गुनाहों की माफ़ी तथा शैतान से सुरक्षा।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति दिन भर में सौ बार यह दुआ पढ़ेगा: «لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحْدَهُ لا شَرِيكَ له، له المُلْكُ وله الحَمْدُ، وهو علَى كُلِّ شيءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् हम्दु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), तो उसे दस ग़ुलामों के आज़ाद करने का पुण्य प्राप्त होगा, सौ नेकियां (सद्कर्म) उसके नामा -ए- आमाल (कर्म-पत्र) में लिखी जायेंगी तथा सौ बुराईयां (कुकृत्य) उससे मिटा दी जायेंगी। इसके अतिरिक्त वह व्यक्ति पूरे दिन सांझ तक शैतान से सुरक्षित रहेगा"। (सहीह बुख़ारी: २३९३ व मुस्लिम: २६९१)।

पूँजी १०५

४६- फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِير) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

फ़ज़ीलत: दस गुनाह मिट जाते हैं, उस दिन कोई गुनाह उसका नाश नहीं करेगा सिवाय अल्लाह के साथ शिर्क करने के, तथा शैतान से सुरक्षित रहेगा।

प्रमाण: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِير), ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, व हुवा ह़य्युन ला यमूतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, वही जीवन देता तथा मृत्यु देता है, उसी के हाथ में हर प्रकार का कल्याण व भलाई है, तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), तो उसके लिए प्रत्येक के बदले एक नेकी लिखी जायेगी तथा उसकी एक बुराई मिटाई जायेगी, उसके लिए एक दर्जा बुलंद किया जायेगा तथा उसे हरेक के बदले एक गर्दन (दास) स्वतंत्र करने का पुण्य प्राप्त होगा और वह दिन भर हर प्रकार की अप्रिय व मकरूह चीज़ों से सुरक्षित रहेगा, एवं शैतान से उसकी सुरक्षा की जायेगी, और अल्लाह के साथ शिर्क करने को छोड़ कर कोई गुनाह उसे उस दिन हलाक (नाश) नहीं कर सकेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३४७३ तथा नसई ने अल-कुब्रा: ९८७८ में रिवायत किया है और अलबानी ने इसे ह़सन करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०६

४७- मजलिस (सभा) से उठने के पूर्व यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ» सुब्हानक् अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता, अस्तग़फ़िरुका व अतूबु इलैका

पुण्य: उस मजलिस में होने वाले उसके पाप क्षमा कर दिये जाते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति किसी मजलिस में बैठे तथा उससे बहुतेरी बेकार एवं बेहुदा बातें हो जायें, और वह अपनी मजलिस से उठने के पूर्व यह दुआ पढ़ ले: «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ» सुब्हानक् अल्लाहुम्मा व बिहम्दिका, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्त, अस्तग़फ़िरुका व अतूबु इलैका (ऐ अल्लाह, तू पाक है और तेरी ही प्रशंसा है। मैं गवाही देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है। मैं तुझसे क्षमा माँगता हूँ और तेरी ओर लौट कर आता हूँ), तो उससे उस मजलिस में होने वाले पापों को क्षमा कर दिया जाता है"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३४३३, नसई ने अल-कुब्रा: १०१५७ में तथा अह़मद: १०५५९ में रिवायत किया है एवं इब्नुल अरबी तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०७

४८- अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा)

पुण्य: शैतान से सुरक्षा।

प्रमाण: {إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطَانٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ} अनुवाद: (ईमान वालों पर तथा अपने रब (पालनहार) पर भरोसा रखने वालों पर उसका कोई ज़ोर नहीं चलता)। सूरह नह़्ल: ९९।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०८

४९- सोते समय आयतुल कुर्सी की तिलावत (पाठ) करना

फ़ज़ीलत: सुबह तक शैतान उसके निकट नहीं आ सकता।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम अपने बिस्तर पर आओ तो आयतुल कुर्सी ﴿اللَّـهُ لَا إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ﴾ (अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल-ह़य्युल क़य्यूम ला तअख़ुज़ुहु सिनतुन वला नौम लहू माफ़िस समावाति वमा फ़िल-अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यशफ़उ इंदहू इल्ला बि-इज़निही यअलमु मा बैना ऐदीहिम वमा ख़लफ़हुम वला युहीत़ूना बि शैईम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाआ वसिआ कुर्सिय्युहुस् समावाति वल-अर्ज़ि वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहुवल अलिय्युल अज़ीम) आरंभ से अंत तक पढ़ो। यह काम करने से अल्लाह की ओर तुम्हारे लिए एक रक्षक नियुक्त हो जायेगा जो तुम्हारी रक्षा करेगा तथा सुबह तक शैतान तुम्हारे निकट नहीं आ सकेगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ३२७५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १०९

५०- पत्नी से संभोग करते समय यह दुआ पढ़ना: «بسم الله اللهم جنبنا الشيطان و جنب الشيطان ما رزقتنا» (बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा जन्निबनश्शैत़ाना व जन्निबिश्शैत़ाना मा रज़क़तना)

फ़ज़ीलत: होने वाली संतान शैतान से सुरक्षित रहती है।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई अपनी पत्नी के पास (संभोग की इच्छा से) जाये, तो कहे: «بسم الله اللهم جنبنا الشيطان و جنب الشيطان ما رزقتنا» (बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा जन्निबनश्शैत़ाना व जन्निबिश्शैत़ाना मा रज़क़तना) (अर्थात: अल्लाह के नाम से, हे अल्लाह! हमें शैतान से सुरक्षित रख तथा उसे भी शैतान से सुरक्षित रख जो तू हमें प्रदान करे)। फिर यदि उन दोनों के भाग्य में कोई संतान लिखी होगी तो शैतान उसे हानि नहीं पहुँचा सकेगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६३८८ व मुस्लिम: १४३४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १११०-१११

५१-५२: अनाथ के सिर पर हाथ रखना तथा मिस्कीन (निर्धन) को भोजन कराना

फ़ज़ीलत: हृदय की कठोरता दूर होती है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने कठोर हृदय होने का उल्लेख किया तो आपने फ़रमाया: "अनाथ के सिर पर हाथ रखो तथा निर्धनों को भोजन कराओ"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ९१४० ने रिवायत किया है, तथा मुन्ज़िरी एवं अलबानी ने कहा है कि: इसके रिजाल (वर्णन कर्ता) स़ह़ीह़ (बुख़ारी व मुस्लिम) के रिजाल हैं)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११२

५३- दस आयतों से क़याम करना (तहज्जुद पढ़ना)

फ़ज़ीलत: वह ग़ाफ़िलों (लापरवाहों) में नहीं गिना जाता।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने दस आयतों से क़याम किया वह ग़ाफ़िलों में नहीं गिना जाता"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

दूसरा अध्याय

मृत्यु पश्चात अप्रिय वस्तुओं से मुक्ति दिलाने वाली पूँजी

१७ पूँजी

पूँजी ११३

१- तक़्वा (संयम, इंद्रियनिग्रहता) तथा इस़्लाह (सुधार)

फ़ज़ीलत: जहन्नम से सुरक्षा, निर्भयता तथा कष्ट व उदासी से दूरी।

प्रमाण: ﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ * فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ * يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ * كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ * يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ * لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَى وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ * فَضْلًا مِنْ رَبِّكَ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾ अनुवाद: (निःसंदेह आज्ञाकारी शांति के स्थान में होंगे। बाग़ों तथा जल स्रोतों में। वस्त्र धारण किये हुये महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे। इसी प्रकार होगा, तथा हम विवाह करा देंगे उन का हूरों से। वह माँग करेंगे उसमें प्रत्येक प्रकार के मेवों की निश्चिन्त हो कर। वह उस (स्वर्ग) में मौत नहीं चखेंगे प्रथम (सांसारिक) मृत्यु के सिवा, तथा (अल्लाह) बचा देगा उन्हें नरक की यातना से। आपके पालनहार की दया से, वही बड़ी सफ़लता है)। सूरह दुख़ान: ५१-५७।

﴿وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ अनुवाद: (तथा जिन लोगों ने परहेज़गारी की उन्हें अल्लाह तआला उनकी सफलता के साथ बचा लेगा, उन्हें कोई कष्ट छू भी नहीं सकेगा तथा न वह किसी प्रकार से दुखी होंगे)। सूरह ज़ुमर: ६१।

﴿ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا﴾ अनुवाद: (फिर हम परहेज़गारों को तो बचा लेंगे तथा अवज्ञाकारियों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे)। सूरह मर्यम: ७२।

﴿فَمَنِ اتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ﴾ अनुवाद: (जो व्यक्ति तक़्वा अपनाए तथा सुधार करे तो उन लोगों पर न कुछ भय है और न वह दुखी होंगे)। सूरह आराफ़: ३५।

﴿أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ * الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ﴾ अनुवाद: (याद रखो, अल्लाह के मित्रों पर न कोई अंदेशा है तथा न वो दुखी होते हैं। ये वो लोग हैं जो ईमान लाए तथा (बुराईयों) से बचते हैं)। सूरह यूनुस: ६२-६३।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११४

२- अल्लाह के मार्ग में एक दिन रोज़ा रखना

फ़ज़ीलत: आदमी नरक से सुरक्षित हो जाता है तथा सत्तर वर्ष की दूरी तक उसका मुख उससे दूर रहता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "रोज़ा (उपवास) एक ढ़ाल है तथा नरक से बचने के लिए एक मज़बूत किला है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ९३४८, तथा नसई ने अल-कुब्रा: २५४९ में रिवायत किया है, और सुयूती एवं शुऐब अल-अरनऊत़ ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "जिसने अल्लाह के रास्ते में एक दिन का रोज़ा रखा अल्लाह तआला उसके चेहरे को (जहन्नम की) आग से सत्तर वर्ष की दूरी के बराबर दूर कर देता है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ११५३)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११५

३- चालीस दिनों तक तबकीर -ए- ऊला के साथ जमाअत के संग नमाज़ पढ़ना

पुण्य: जहन्नम से मुक्ति।

तर्क: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह को प्रसन्न करने हेतु चालीस दिन तकबीर -ए- ऊला (नमाज़ आरंभ करने के लिए सर्वप्रथम कही जाने वाली तकबीर, अर्थात: अल्लाहु अकबर) के साथ जमाअत (समूह) के संग नमाज़ पढ़ी तो उसके लिए दो प्रकार की बराअत (मुक्ति) लिखी जाती है: एक आग से बराअत तथा दूसरी निफ़ाक़ (पाखण्ड) से बराअत"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११६

४- ज़ुह्र की नमाज़ के पूर्व तथा उसके पश्चात पाबंदी (प्रतिबद्धता) के साथ चार रक्अत नफ़्ल पढ़ना

पुण्य: जहन्नम से मुक्ति।

प्रमाण: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नी उम्मे ह़बीबा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति ज़ुह्र से पहले तथा उसके बाद चार-चार रक्अतों की पाबंदी करेगा, वह आग पर ह़राम (वर्जित) कर दिया जायेगा"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: १२६९, तिर्मिज़ी: ४२८, नसई ने अल-कुब्रा: १४८६ में तथा इब्ने माजह: ११६० ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११७

५- स़दक़ा (दान-पुण्य) करना यद्यपि खजूर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो

फ़ज़ीलत: जहन्नम से मुक्ति।

दलील: अदी बिन ह़ातिम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, वह कहते हैं कि: मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "अत: तुम में से जो आग से बचने की शक्ति रखता हो तो अवश्य बचे, यद्यपि खजूर के एक टुकड़े के द्वारा ही क्यों न हो"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: १४१७ व मुस्लिम: १०१६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११८

६- अल्लाह के मार्ग में पाँव का धूल धूसरित होना

पुण्य: जहन्नम से मुक्ति।

तर्क: अबू अब्स रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसके दोनों पाँव अल्लाह के रास्ते में धूल धूसरित हों, उन्हें जहन्नम की आग नहीं छू सकती"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: १६३२ ने रिवायत किया है, तथा इब्नुल अरबी एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिस मुसलमान के दिल पर अल्लाह के रास्ते में ग़ुबार (धूल) लग जाता है, अल्लाह तआला उस पर आग (नरक) को ह़राम (वर्जित) कर देता है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २५१८७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह के रास्ते की धूल तथा जहन्नम का धूआँ किसी मुसलमान की नाक पर कभी भी जमा नहीं हो सकते"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ४३०६ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ११९

७- अल्लाह का ज़िक्र

फ़ज़ीलत: जहन्नम से मुक्ति।

दलील: मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह की यातना से मुक्ति दिलाने वाला मानव का सबसे बड़ा अमल (कर्म) अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण) है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२५०४ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२०

८- बेटियों के लालन-पालन पर धैर्य रखना, उनके खाने-पीने एवं उनके वस्त्र की व्यवस्था करना तथा उनके संग अच्छा व्यवहार करना

फ़ज़ीलत: नरक से मुक्ति।

दलील: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्म पत्नी आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस किसी पर बेटियों के लालन-पालन का बोझ पड़ जाये तथा वह उनके संग अच्छा व्यवहार करे तो वो उसके लिए नरक से (बचाने वाला) पर्दा एवं रोक होंगी"। (सहीह बुख़ारी: २६२९ व मुस्लिम: १४१८)।

उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसकी तीन बेटियां हो, वह उन पर सब्र करे, जो कुछ उसके पास उपलब्ध हो उसमें से उन्हें खिलाए और पहनाए, तो क़यामत (महा प्रलय) के दिन वो उसके लिए जहन्नम से रुकावट बन जायेंगी"। (इस हदीस़ को इब्ने माजह: ३६६९ एवं अहमद: १७६७५ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२१

९- अल्लाह के भय से रोना

पुण्य: जहन्नम से मुक्ति।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अल्लाह के डर से रोए वह जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा यहाँ तक कि दूध थन में वापस हो जाए"। (इस हदीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ४३०१ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दो आँखें ऐसी हैं कि उन्हें कभी भी जहन्नम (की आग) छू भी नहीं सकती: एक वह आँख जो अल्लाह के भय से रोए"। (इस हदीस़ को अबू यअला ने अपनी मुस्नद: ४३४६ में रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२२

१० -मनुष्य को दयालु, मृदुभाषी और (सबके साथ) मिल कर रहने वाला होना चाहिए

पुण्य: नरक से मुक्ति।

तर्क: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति दयालु, मृदुभाषी तथा (सबसे के साथ) मिल कर रहने वाला हो, उसे अल्लाह तआला जहन्नम पर ह़राम कर देता है"। (इस ह़दीस़ को ह़ाकिम ने अल-मुस्तदरक: ४३४ में रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२३

११- अनुपस्थिति में किसी मुसलमान के सम्मान एवं इज़्ज़त की रक्षा करना

फ़ज़ीलत: जहन्नम से मोक्ष।

प्रमाण: अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अपने भाई की अनुपस्थिति में उसके सम्मान की रक्षा करता है, उसके संबंध में अल्लाह पर यह अधिकार होता है कि उसे नरक से मोक्ष दिला दे)"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २८२५७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२४

१२- अल्लाह की राह में पहरा देना

पुण्य: नरक से मुक्ति।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि: मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "दो आँखों को जहन्नम की आग नहीं छूएगी: एक वह आँख जो अल्लाह के भय से रोई हो, दूसरी वह आँख जिसने जिहाद के रास्ते में पहरा देते हुए बिताई हो"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: १६३९ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२५

१३- रमज़ान मास में दिन-रात नेक अमल (सद्कर्म) करना

फ़ज़ीलत: जहन्नम से आज़ादी।

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "प्रत्येक दिन तथा प्रत्येक रात्रि अल्लाह तआला कुछ बंदों को नरक से मुक्त करता है (अर्थात: रमज़ान में)"। इस ह़दीस़ को अह़मद: ७५६७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२६

१४- क्रोध पर नियंत्रण करना

पुण्य: अज़ाब (यातना) से सुरक्षा।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अपने क्रोध पर नियंत्रण कर लिया अल्लाह तआला उससे अपना अज़ाब रोक लेगा"। (इसे ज़िया मक़्दिसी ने अल-मुख़्तारह: २०६६ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२७

१५- तीन बार जहन्नम से मुक्ति माँगना

पुण्य: जहन्नम यह दुआ करती है कि उसे उससे सुरक्षित रखा जाये।

दलील: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति तीन बार जहन्नम से शरण माँगता है तो जहन्नम कहती है: हे अल्लाह! इसको जहन्नम से मुक्ति दे दे"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २५७२, नसई ने अल-कुब्रा: ७९०७ में, इब्ने माजह: ४३४० तथा अह़मद: १२३५३ ने रिवायत किया है, एवं इब्ने ह़िब्बान: १०३४ और सुयूती व अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२८

१६- अल्लाह के रास्ते (ईश्वरीय पथ) में सीमा की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना

पुण्य: क़ब्र के फ़ित्ना से सुरक्षा।

प्रमाण: फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "प्रत्येक मृतक के कर्म का सिलसिला समाप्त कर दिया जाता है सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह के रास्ते में सीमा की रक्षा करते हुए मारा जाए, तो उसका अमल (कर्म) क़यामत तक के लिए बढ़ाया जाता रहेगा तथा वह क़ब्र के फ़ित्ना (आज़माइश) से भी सुरक्षित रहेगा"। (इस हदीस़ को अबू दावूद: २५००, तिर्मिज़ी:१६२१ तथा अहमद: २४५८४ ने रिवायत किया है तथा इब्नुल अरबी एवं अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "यदि (पहरा देने वाला) मृत्यु को प्राप्त हो गया, तो उसका वह अमल (कर्म) जो वह कर रहा था (भविष्य में भी अनवरत) जारी रहेगा, उसके लिए उसका रिज़्क़ (आजीविका) जारी किया जायेगा तथा वह (क़ब्र में प्रश्न कर के) परीक्षा लेने वाले से सुरक्षित रहेगा"। (स़हीह़ मुस्लिम: १९१३)।

सलमान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "जो व्यक्ति इस स्थिति में (अल्लाह के मार्ग में पहरा देते हुए) मर गया तो वह क़ब्र के अज़ाब से सुरक्षित रहेगा"। (इस हदीस़ को तिर्मिज़ी: १६६५ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़हीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १२९

१७- किसी मुसलमान के किसी कष्ट को दूर करना

पुण्य: क़यामत के कष्टों में से कोई कष्ट दूर कर दिया जायेगा।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति किसी मुसलमान के कष्ट को दूर करता है तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके कष्ट को दूर करेगा"। (स़हीह़ बुख़ारी: ३४४२ व मुस्लिम: २५८० उपरोक्त शब्द मुस्लिम के द्वारा वर्णित हैं)।

तीसरा अध्याय

संसार में हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी

२१ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३०

१- घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ना: «بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ...»
(बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि...)

पुण्य: अल्लाह की सुरक्षा प्राप्त होती है और अल्लाह सभी मामलों में उसके लिए पर्याप्त होता है।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब बंदा अपने घर से निकले तथा ये वाक्य कह ले: «بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ» (बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि, ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि), (अर्थात: अल्लाह के नाम से (चलना शुरू करता हूँ), मैंने अल्लाह पर पूरा भरोसा कर लिया, अल्लाह की सहायता के बिना किसी बुराई एवं हानि से बचने की न कोई शक्ति है और न कोई सामर्थ्य), तो उस समय उससे यह कहा जाता है: तुझे मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, तेरे लिए पर्याप्त हुआ गया तथा तुझे (हर संकट से) बचा लिया गया। अतः शैतान उससे दूर हो जाते हैं, तथा दूसरा शैतान उससे कहता है: तेरा दाँव ऐसे व्यक्ति पर क्यों कर चले जिसे मार्गदर्शन दिया गया, उसके लिए पर्याप्त हुआ गया तथा उसे बचा लिया गया"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ५०९५ एवं नसई ने अल-कुब्रा: ९८३७ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३१

२- भोर-सांझ तीन बार «قل هو الله أحد* قل أعوذ برب الفلق * قل أعوذ برب الناس» **(क़ुल हुवल्लाहु अह़द, क़ुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़ एवं क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नास) पढ़ना**

फ़ज़ीलत: अल्लाह की सुरक्षा प्राप्त होती है।

दलील: अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "(क़ुल हुवल्लाहु अह़दुन अल्लाहुस़्स़मदु लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल लहु कुफ़ुवन अह़दुन। क़ुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़ि मिन शर्रि मा ख़लक़ा व मिन शर्रि ग़ासिक़िन इज़ा वक़बा व मिन शर्रिन नफ़्फ़ासाति फ़िल उक़दि व मिन शर्रि ह़ासिदन इज़ा ह़सदा। क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नासि मलिकिन्नासि इलाहिन्नासि मिन शर्रिल वसवासिल ख़न्नासि अल्लज़ी युवसविसु फ़ी स़ुदूरिन्नासि मिनल जिन्नति वन्नासि) को भोर एवं सांझ में तीन-तीन बार पढ़ लो, तो प्रत्येक चीज़ से तुम्हारे लिए पर्याप्त हो जायेगी"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ५०८२ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३२

३- भोर-सांझ तीन बार यह दुआ पढ़ना: «بِسْمِ اللهِ الَّذِي لا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الأَرْضِ وَلا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ العَلِيمُ» बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिहि शैउन फ़िल अर्ज़ि वला फ़िस्समाई व हुवस्समीउल अलीम

पुण्य: अल्लाह की सुरक्षा प्राप्त होती है।

प्रमाण: उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो बंदा हर दिन की सुबह को तथा शाम को तीन बार यह दुआ पढ़े: «بِسْمِ اللهِ الَّذِي لا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الأَرْضِ وَلا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ العَلِيمُ» बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिहि शैउन फ़िल अर्ज़ि वला फ़िस्समाई व हुवस्समीउल अलीम (अर्थात: अल्लाह के नाम के द्वारा (शरण माँगता हूँ) जिसके नाम की बरकत (आशीर्वाद) से आकाश एवं धरा में कोई वस्तु हानि नहीं पहुँचा सकती, तथा वह खूब सुनने वाला तथा खूब जानने वाला है), उसे कोई वस्तु हानि नहीं पहुँचायेगी"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३३८८, नसई ने अल-कुब्रा: १०१०६ में तथा इब्ने माजह: ३८६९ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३३

४- सोने के समय आयतुल कुर्सी ﴿اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ﴾ की तिलावत करना

पुण्य: अल्लाह की सुरक्षा प्राप्त होती है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम अपने बिस्तर पर सोने के लिए आओ तो आयतुल कुर्सी आरंभ से लेकर अंत तक (अल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवल-ह़य्युल क़य्यूम ला तअख़ुज़ुहु सिनतुन वला नौम, लहु माफ़िस समावाति वमा फ़िल-अर्ज़ि मन ज़ल्लज़ी यशफ़ऊ इंदहू इल्ला बि- इज़निही यअलमु मा बैना ऐदीहिम वमा ख़लफ़हुम वला युहीत़ूना बि शैईम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाआ वसिआ कुर्सिय्युहुस् समावाति वल-अर्ज़ि वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा वहुवल अलिय्युल अज़ीम) पढ़ लिया करो। ऐसा करोगे तो अल्लाह की ओर से एक रक्षक तुम्हारी रक्षा करेगा तथा सुबह तक शैतान तुम्हारे निकट भी नहीं आ सकेगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: २३११)।

पूँजी १३४

५- दुःख एवं उदासी के समय यह दुआ पढ़ना: «اللهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، وَابْنُ عَبْدِكَ...»

«...अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुका, वब्नु अब्दिका...।

फ़ज़ीलत (प्रधानता): दुःख एवं उदासी दूर हो जाती है तथा उसके स्थान पर उदारता एवं प्रसन्नता आ जाता है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब भी किसी को कोई चिंता व दुःख तथा उदासीनता एवं कष्ट हो तो यह दुआ पढ़े: اللهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، وَابْنُ عَبْدِكَ، وابْنُ أَمَتِكَ، نَاصِيَتِي بِيَدِكَ، مَاضٍ فِيَّ حُكْمُكَ، عَدْلٌ فِيَّ قَضَاؤُكَ، أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ، سَمَّيْتَ بِهِ نَفْسَكَ، أَوْ أَنْزَلْتَهُ فِي كِتَابِكَ، أَوْ عَلَّمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، أَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ، أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي، وَنُورَ صَدْرِي، وَجِلَاءَ حُزْنِي، وَذَهَابَ هَمِّي अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुका, वब्नु अब्दिका, वब्नु अमतिका, नासियति बियदिका, माज़िन फ़िय्या हुक्मुका, अद्लुन फ़िय्या क़ज़ाउका, अस्अलुका बिकुल्लि इस्मिन हुवा लका, सम्मैता बिहि नफ़्सका, औ अन्ज़लतहु फ़ी किताबिका, औ अल्लमतहु अहदम मिन ख़लक़िका, औ इस्तअसरता बिहि फ़ी इल्मिल ग़ैबि इन्दका, अन तजअलल क़ुरआना रबीआ क़ल्बी, व नूरा सदरी, व जिलाआ हुज़्नी व ज़हाबा हम्मी, (अर्थात: हे अल्लाह! मैं तेरा भक्त हूँ, तेरे भक्त का पुत्र हूँ, तेरी भक्तिन का पुत्र हूँ, मेरी पेशानी (ललाट) तेरे हाथ में है, मेरे बारे में तेरा आदेश जारी है, मेरे संबंध में तेरा निर्णय न्यायपूर्ण है, मैं तुझ से तेरे प्रत्येक उस नाम के द्वारा प्रश्न करता हूँ जिसके द्वारा तूने स्वयं अपना नाम रखा है अथवा उसे अपनी पुस्तक में उतारा है या अपनी सृष्टि में से किसी को सिखलाया है अथवा इल्म -ए- ग़ैब में उसे अपने पास रखने को वरीयता दी है, कि तू क़ुरआन को मेरे हृदय का बहार (वसंत), मेरे सीने का नूर (द्विव्य प्रकाश) तथा मेरे दुःख को दूर करने वाला एवं मेरी चिंता को ले जाने वाला बना दे), तो अल्लाह तआला उसकी चिंता व दुःख तथा उदासीनता एवं कष्ट को दूर कर के उसके बदले उदारता एवं प्रसन्नता प्रदान करेगा। कहा गया: हे अल्लाह के रसूल! क्या हम ये कलेमात (वाक्य) सीख न लें? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: क्यों नहीं, प्रत्येक सुनने वाले को याद कर लेना चाहिए"। (इस हदीस़ को अहमद: ३७८८ ने रिवायत किया है तथा उपरोक्त शब्द उनके द्वारा ही वर्णित हैं, और इसे इब्ने हिब्बान: ९७२ ने भी रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़हीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३५

६- फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِير) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर

फ़ज़ीलत: दिन भर अप्रिय एवं मकरूह घटनाओं से सुरक्षित रहेगा।

प्रमाण: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِير) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, वही जीवन देता तथा मृत्यु देता है, उसी के हाथ में हर प्रकार का कल्याण व भलाई है, तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), तो उसके लिए प्रत्येक के बदले एक नेकी लिखी जायेगी तथा उसकी एक बुराई मिटाई जायेगी, उसके लिए एक दर्जा बुलंद किया जायेगा तथा उसे हरेक के बदले एक गर्दन (दास) स्वतंत्र करने का पुण्य प्राप्त होगा और वह दिन भर हर प्रकार की अप्रिय व मकरूह चीज़ों से सुरक्षित रहेगा, एवं शैतान से उसकी सुरक्षा की जायेगी, और अल्लाह के साथ शिर्क करने को छोड़ कर कोई गुनाह उसे उस दिन हलाक (नाश) नहीं कर सकेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३४७३ तथा नसई ने अल-कुब्रा: ९८७८ में रिवायत किया है और अलबानी ने इसे ह़सन करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३६

७- अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा)

फ़ज़ीलत: समस्त मामलों में उसके लिए पर्याप्त हो जाया जाता है।

प्रमाण: अल्लाह तआला का फ़रमान है: {وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ} अनुवाद: (जो व्यक्ति अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा अल्लाह उसके लिए पर्याप्त होगा)। सूरह त़लाक़: ३।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३७

८- पीड़ित व व्यथित को देखने पर यह दुआ पढ़ना: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي...»

अल्हम्दुलिल्लाहिल् लज़ी आफ़ानी...

फ़ज़ीलत: उस पीड़ा एवं व्यथा से वह सुरक्षित रहता है।

प्रमाण: उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति किसी को विपत्ति में देखे, फिर (यह दुआ) कहे: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي مِمَّا ابْتَلَاهُ بِهِ وَفَضَّلَنِي عَلَى كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِيلاً» अल्हम्दुलिल्लाहिल् लज़ी आफ़ानी मिम्मा इब्तिलाहु बिही, व फ़ज़्ज़लनी अला कसीरिम् मिम्मन ख़लक़ा तफ़ज़ीला, (अर्थात: सारी प्रशंसा उस अल्लाह की है, जिसने मुझे उस विपत्ति से सुरक्षित रखा, जिसमें वह पड़ चुका है और मुझे अपनी बहुतेरी सृष्टियों से श्रेष्ठ बनाया) तो वह उस विपत्ति से सुरक्षित रहेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३४३१ एवं अबू दावूद त़यालिसी: १३ ने रिवायत किया है तथा उपरोक्त शब्द उनके ही द्वारा वर्णित हैं, और इब्नुल क़य्यिम एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३८

९- ऐसी दुआ करना जिसमें पाप करने तथा संबंध तोड़ने की बात न हो

पुण्य: समस्त मामलों में उसके लिए पर्याप्त हो जाया जाता है।

प्रमाण: अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो मुसलमान भी कोई ऐसी दुआ करता है जिसमें कोई पाप करने की अथवा संबंध तोड़ने की बात नहीं होती है तो अल्लाह तआला तीन में से किसी एक तरीके से उसकी वह दुआ अवश्य स्वीकार करता है: या तो उसकी वह दुआ संसार में ही स्वीकार कर ली जाती है, अथवा आख़िरत (परलोक) के लिए उसे संग्रहित कर दिया जाता है, या उसी के समान कोई विपदा एवं संकट उससे टाल दिया जाता है। स़ह़ाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: तब तो हम अधिकाधिक दुआ करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह सर्वाधिक (दुआ को स्वीकार) करने वाला है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ११३०२ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १३९

१०- पूरी दुआ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद ही दुरूद पढ़ना

पुण्य: सभी मामलों में (अल्लाह की) किफ़ायत (पर्याप्त होना) प्राप्त होती है

प्रमाण: उबैई बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्होंने कहा: "वज़ीफ़ा (जाप) में पूरी रात आप पर दुरूद पढ़ा करूँ? आप ने फ़रमाया: तब यह दुरूद तुम्हारे सभी कष्टों के लिए काफ़ी होगा तथा इससे तुम्हारे पाप क्षमा कर दिये जायेंगे"। इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २४५७ ने रिवायत किया है तथा तिर्मिज़ी ने कहा है कि: यह ह़दीस़ ह़सन स़ह़ीह़ है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४०

११- भोर-सांझ सात (७) बार यह दुआ पढ़ना: «حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ» ह़स्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कल्तु वहुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम

पुण्य: समस्त मामलों में उसे (अल्लाह की) किफ़ायत (पर्याप्त होना) प्राप्त होती है।

प्रमाण: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने भोर-सांझ के समय सात बार यह कह लिया: «حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ» ह़स्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कल्तु वहुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम, (अर्थात: अल्लाह मेरे लिए पर्याप्त है, उसके सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, मैंने उसी पर भरोसा किया, तथा वही महान अर्श (सिंहासन) का रब व पालनहार है), तो अल्लाह तआला उसकी समस्त कठिनाईयों में उसके लिए पर्याप्त हो जायेगा"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ५०८१ ने रिवायत किया है तथा शुऐब अल-अरनऊत़ ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४१

१२- घर में तीन रात तक सूरह बक़रह की अंतिम तीन आयतों (श्लोकों) की तिलावत (पाठ) करना

फ़ज़ीलत: यो आयतें सभी दुखों एवं चिंताओं के लिए पर्याप्त होती हैं तथा शैतान घर के निकट भी नहीं आता।

प्रमाण: अबू मसऊद अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने रात के समय सूरह बक़रह की ये अंतिम दो आयतें पढ़ीं, तो वो उसके लिए पर्याप्त होंगी"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ८०८)।
नोअमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हुए कहते हैं कि आपने फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने आकाश एवं धरा उत्पन्न करने के दो हजार वर्ष पूर्व एक किताब लिखी, उस किताब की दो आयतें अवतरित की तथा उन्हीं दोनों आयतों पर सूरह बक़रह को समाप्त किया, जिस घर में ये दोनों आयतें (निरंतर) तीन रातें पढ़ी जायेंगी, संभव नहीं है कि शैतान उस घर के निकट भी आ सके"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३१३६) ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४२

१३- अल्लाह का तक़्वा एवं भय

फ़ज़ीलत: कष्ट दूर होता है तथा आदमी शैतान के षड्यंत्र से सुरक्षित रहता है।

प्रमाण: {وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ} अनुवाद: (तथा हमने ईमान वालों एवं तक़्वा रखने वालों (परहेज़गारों) को (बाल बाल) बचा लिया। सूरह फ़ुस्सिलतः १८।

{وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا} अनुवाद: (तथा जो व्यक्ति अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके लिए छुटकारे का मार्ग निकाल देता है)। सूरह त़लाक: २।

{وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا} अनुवाद: (यदि तुम धैर्य रखो तथा परहेज़गारी (इंद्रियनिग्रहता) अपनाओ तो उनकी चालबाजी तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचायेगी)। सूरह आले इमरान: १२०।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४३

१४- पाबंदी से इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करना

पुण्य: कष्ट दूर होते हैं।

तर्क: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने इस्तिग़फ़ार की पाबंदी की अल्लाह तआला उसके लिए हर संकट से निकलने का उपाय एवं हर चिंता से चिंतामुक्त होने का सामान उत्पन्न कर देगा, तथा ऐसे-ऐसे स्थान से उन्हें रिज़्क़ (आजीविका) प्रदान करेग जिसका उसे भान तक नहीं होगा"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: १५१३, नसई ने अल-कुब्रा: १०२१७ में, तथा इब्ने माजह: ३८१९ ने रिवायत किया है, और इशबीली एवं इब्ने बाज़ ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४४

१५- चाश्त के समय चार रक्अत नफ़्ल नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: पूरे दिन अल्लाह की किफ़ायत (सुरक्षा) में रहता है।

प्रमाण: अबुद्दरदा एवं अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: हे आदम की संतान! तुम दिन के आरंभ में मेरी प्रसन्नता हेतु चार रक्अतें पढ़ा करो, मैं पूरे दिन तुम्हारे लिए काफ़ी (पर्याप्त) रहूँगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ४७५ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४५

१६- बारंबार ह़ज्ज एवं उमरा करना

पुण्य: निर्धनता एवं दरिद्रता दूर होती है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बारंबार ह़ज्ज एवं उमरा करते रहा करो इसलिए कि ये दोनों दरिद्रता एवं पापों को उसी प्रकार से मिटा देते हैं जैसे भट्ठी लोहे, सोने तथा चाँदी के मैल को मिटा देती है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ३७४३, तिर्मिज़ी: ८१० एवं नसई: ३५९७ ने रिवायत किया है तथा अह़मद शाकिर ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४६

१७- स़ब्र एवं धैर्य

फ़ज़ीलत: शत्रु के षड्यंत्र से मानव सुरक्षित रहता है।

प्रमाण: {وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا} अनुवाद: (यदि तुम धैर्य रखो तथा परहेज़गारी (इंद्रियनिग्रहता) अपनाओ तो उनकी चालबाजी तुम्हें कुछ भी हानि नहीं पहुँचायेगी)। सूरह आले इमरान: १२०।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४७

१८- सूरह बक़रह का पाठ करना

फ़ज़ीलत: जादूगरों से आदमी सुरक्षित रहता है।

प्रमाण: अबू उमामह बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि: "सूरह बक़रह पढ़ा करो क्योंकि इसे प्राप्त करना बरकत (कल्याण) पाने का कारण तथा छोड़ देना निराशा का कारण है, एवं बात़िल को पूजने वाले (जादूगर) इसकी क्षमता नही रखते"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ८०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४८

१९- सपना में जब कोई अप्रिय चीज़ देखे तो: तीन बार बाईं ओर थूके, तीन बार शैतान से शरण माँगे तथा करवट बदल कर सो जाए

फ़ज़ीलत: दु:स्वप्न से सुरक्षित रहेगा।

प्रमाण: अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति कोई दु:स्वप्न देखे तो वह बाईं ओर तीन बार थूक दे तथा शैतान से अल्लाह की शरण माँगे, इस प्रकार यह सपना उसके लिए हानिकारक नहीं होगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६९९५ व मुस्लिम: २२६१)।

जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आपने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई व्यक्ति ऐसा सपना देखे जो उसे बुरा लगे तो तीन बार अपनी बाईं ओर थूके, तथा तीन बार शैतान से अल्लाह की शरण माँगे और जिस करवट लेटा था उसे बदल ले"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ७००५ व मुस्लिम: २२६२, उपरोक्त शब्द मुस्लिम द्वारा वर्णित हैं)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १४९

२०- जब कोई नींद में डर जाए तो यह (दुआ) पढ़े:(أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ...)

अऊज़ु बिकलिमातिल् लाहित् ताम्माति...

फ़ज़ीलत: दु:स्वप्नों से मानव सुरक्षित रहता है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस़ रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम में से कोई निद्रा की स्थिति में डर जाए तो यह (दुआ) पढ़े: (أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ غَضَبِهِ وَعِقَابِهِ وَشَرِّ عِبَادِهِ وَمِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَنْ يَحْضُرُونِ) अऊज़ु बिकलिमातिल् लाहित् ताम्माति मिन ग़ज़बिहि व इक़ाबिहि व शर्रि इबादिहि व मिन हमज़ातिश्शयात़ीन व अन् यह़ज़ुरून, (अर्थात: मैं अल्लाह के क्रोध और दण्ड से और उसके बंदों की बुराई से, शैतान (दुष्टात्माओं) की चालों से तथा इस बात से कि वो मेरे पास उपस्थित हों, अल्लाह के पूर्ण वाक्यों (वचनों) की शरण लेता हूं), (यह दुआ पढ़ लेने से) यह तनावजनक सपना उसे कुछ भी हानि नहीं पहुँचा सकेगा"।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५०

२१- सूरह कह्फ़ की आरंभिक दस आयतों (श्लोकों) को कंठस्थ करना

पुण्य: आदमी दज्जाल से सुरक्षित रहेगा।

प्रमाण: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिस (मुसलमान) ने सूरह कह्फ़ की आरंभिक दस आयतें याद कर लीं, उसे दज्जाल के फ़ित्ने से सुरक्षित कर लिया गया"। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः ८०९)।

तीसरा अध्याय

जीवन की वो पूँजी जिनसे लोक परलोक का उद्देश्य प्राप्त होता है

२१० पूँजी

यह अध्याय छः खण्डों पर आधारित हैः

पहला खण्डः धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी (५)

दूसरा खण्डः अमल (कर्म) के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी (१४)

तीसरा खण्डः पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी (१४६)

चौथा खण्डः नफ़्स (स्वयं) से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी (३१)

पाँचवां खण्डः सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी (१०)

छठा खण्डः आस पास के लोगों से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी (४)

पहला खण्ड

धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

५ पूँजियां

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५१

१- अल्लाह से अच्छा गुमान रखना

फ़ज़ीलत: जैसा आप गुमान करेंगे वैसा ही अल्लाह को पायेंगे।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के साथ होता हूँ"। (सहीह बुख़ारी: ७४०५ व मुस्लिम: २६७५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५२

२- फ़ज्र की दो रक्अतें

पुण्य: संसार तथा जो कुछ संसार में है उन सबसे उत्तम है।

प्रमाण: आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "फ़ज्र की दो रक्अतें संसार एवं जो कुछ संसार में है, उनसे उत्तम हैं"। (सहीह मुस्लिम: ७२५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५३

३- अल्लाह का तक़्वा एवं भय

फ़ज़ीलत: निर्णायक वस्तु, नूर (दिव्यज्योति) एवं तौफ़ीक़ (अनुग्रह) का मिलना जिसके द्वारा सत्य एवं असत्य के मध्य अंतर किया जाता है तथा ऐसा कर्म करने का मार्गदर्शन प्राप्त होता है जिससे अल्लाह प्रसन्न होता है।

प्रमाण: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا﴾ अनुवाद: (हे ईमान वालो! यदि तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह तआला तुम को एक निर्णय की चीज़ देगा)। सूरह अनफ़ाल: २९।

﴿أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ﴾ अनुवाद: (हे वो लोगों जो ईमान लाए हो! अल्लाह से डरते रहा करो तथा उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी दया का दोहरा भाग देगा तथा तुम्हें नूर (दिव्य प्रकाश) देगा, जिसके प्रकाश में तुम चलोगे फिरोगे।

{فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى * وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى * فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى} अनुवादः (जिसने दिया (अल्लाह के मार्ग में) तथा डरा (अपने रब से)। और नेक बात की पुष्टि करता रहेगा। तो हम भी उसको सरल मार्ग की सहूलत देंगे)। सूरह लैलः ५-७।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५४

४- स़दक़ा (दान-पुण्य)

फ़ज़ीलत: ऐसे कर्म का मार्गदर्शन प्राप्त होता है जिससे अल्लाह प्रसन्न होता है।

प्रमाण: {فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى * وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى * فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى} अनुवादः (जिसने दिया (अल्लाह के मार्ग में) तथा डरा (अपने रब से)। और नेक बात की पुष्टि करता रहेगा। तो हम भी उसको सरल मार्ग की सहूलत देंगे)। सूरह लैलः ५-७।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५५

५- घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ना: «بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ» (बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि, ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि)

फ़ज़ीलत: ऐसे कर्म का मार्गदर्शन प्राप्त होता है जिससे अल्लाह प्रसन्न होता है।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जब बंदा अपने घर से निकले तथा ये वाक्य कह लेः «بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ» (बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि, ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि), (अर्थातः अल्लाह के नाम से (चलना शुरू करता हूँ), मैंने अल्लाह पर पूरा भरोसा कर लिया, अल्लाह की सहायता के बिना (किसी बुराई एवं हानि से बचने की न) कोई शक्ति है और न कोई सामर्थ्य), तो उस समय उससे यह कहा जाता हैः तुझे मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, तेरे लिए पर्याप्त हुआ गया तथा तुझे (हर संकट से) बचा लिया गया। अतः शैतान उससे दूर हो जाते हैं, तथा दूसरा शैतान उससे कहता हैः तेरा दाँव ऐसे व्यक्ति पर क्यों कर चले जिसे मार्गदर्शन दिया गया, उसके लिए पर्याप्त हुआ गया तथा उसे बचा लिया गया"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूदः ५०९५ एवं नसई ने अल-कुब्राः ९८३७ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

दूसरा खण्ड

अमल (कर्म) के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

१४ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५६

१- अल्लाह का तक़्वा (ईश्वरीय भक्ति) एवं भय

फ़ज़ीलत: यह अल्लाह के निकट सबसे प्रिय कर्म है तथा कर्म की शुद्धता और स्वीकृति का कारण है।

प्रमाण: {وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى} अनुवाद: (तथा अपने लिए पाथेय बना लो, उत्तम पाथेय अल्लाह की आज्ञाकारिता (तक़्वा) है)। सूरह बक़रह: १९७।

{يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ} अनुवाद: (हे ईमान वालो! अल्लाह तआला से डरो तथा सीधी-सीधी बात (सच्ची) बातें किया करो। ताकि अल्लाह तुम्हारे कर्म संवार दे)। सूरह अह़ज़ाब: ७०-७१।

{إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ} अनुवाद: (अल्लाह तआला तक़्वा वालों का कर्म ही स्वीकार करता है)। सूरह माइदह: २७।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १५७-१६०

२-५: किसी मुसलमान को प्रसन्न करना, उसका कष्ट दूर करना, उसका क़र्ज़ चुकाना तथा उसकी भूख मिटाना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्यों में से है।

दलील: इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्य यह है कि किसी मुसलमान को प्रसन्न किया जाये, अथवा उसका कोई कष्ट दूर किया जाये, या उसका क़र्ज़ चुका दिया जाए, अथवा उसकी भूख मिटा दी जाए"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: १३६४६ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६१

६- ज़िलहिज्जा मास के आरंभिक दस दिनों में नेक अमल (सद्कर्म) करना

पुण्य: अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्यों में से है।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला को कोई नेक अमल किसी दिन उतना प्रिय नहीं है जितना इन दिनों में प्रिय एवं पसंदीदा होता"। (अर्थात: ज़िलहिज्जा की प्रथम दहाई में)। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: २४३८ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६२

७- क़ुर्बानी के दिन (पशु का) रक्त बहाना

पुण्य: अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्यों में से है।

प्रमाण: आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क़ुर्बानी के दिन अल्लाह के निकट आदमी का सबसे प्रिय कार्य (जानवर का) रक्त बहाना है, क़यामत के दिन क़ुर्बानी के जानवर अपने सींगों, बालों तथा ख़ुरों के साथ आएंगे। क़ुर्बानी (बलिदान) का रक्त धरती पर गिरने के पूर्व ही स्वीकार्यता का स्थान प्राप्त कर लेता है, अतः प्रफुल्लित होकर क़ुर्बानी करो"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: १४९३ ने रिवायत किया है तथा इसे ह़सन कहा है, एवं सुयूती तथा इब्ने ह़जर ने भी इसे ह़सन करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६३

८- यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ» सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर

पुण्य: अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्य है।

प्रमाण: समुरह बिन जुन्दुब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के निकट सर्वाधिक प्रिय कलेमात (वाक्य) चार हैं: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ» सुब्हानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर (अर्थात: अल्लाह पवित्र है, अल्लाह के लिए समस्त प्रकार की प्रशंसा है, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं तथा वह सबसे महान है)"। (सहीह मुस्लिम: २१३७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६४

९- यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि

पुण्य: अल्लाह तआला के निकट सबसे प्रिय कार्यों में से है।

प्रमाण: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें वो कलेमा (वाक्य) न बताऊँ जो अल्लाह तआला को सर्वाधिक प्रिय है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह तआला को सर्वाधिक प्रिय कलेमा: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ», सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, है"। (सहीह मुस्लिम: २७३१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६५

१०- यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि

पुण्य: रहमान (अल्लाह) को अत्यंत प्रिय हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दो कलेमा (वाक्य) ऐसे हैं जो ज़ुबान पर अत्यंत हल्के-फुल्के, मीज़ान (तराज़ू, तुला) में अत्यंत भारी तथा रहमान (अल्लाह) को अत्याधिक प्रिय हैं, वह हैं: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि"। (सहीह बुख़ारी: २६९४ व मुस्लिम: २६९४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६६

११- रात्रि में निद्रा भंग हो तो यह दुआ पढ़े: «لا إله إلا الله وحده...» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू..., इसके बाद वुज़ू करे तथा नमाज़ पढ़े

फ़ज़ीलत: नमाज़ स्वीकार की जाती है।

दलील: उबादा बिन स़ामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति राता को उठे तथा कहे: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल हम्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर, व सुब्ह़ानल्लाहि, व ला इलाहा इल्लल्लाहु, वल्लाहु अकबर, व ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि (अर्थात: अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं है, उसी का सारा राज्य और उसी की सब प्रशंसा है, और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है, समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, मैं अल्लाह की पवित्रता का गुणगान करता हूँ, अल्लाह के सिवा कोई कोई सत्य पूज्य नहीं है, वह सबसे महान है, अल्लाह के अनुग्रह के बिना न किसी भलाई के करने की शक्ति है तथा न किसी बुराई से बचने का सामर्थ्य), तत्पश्चात यह दुआ पढ़े: «اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي» अल्लाहुम्मा इग़्फ़िर ली (अर्थात: हे अल्लाह! तू मुझे क्षमा कर दे), अथवा कोई और दुआ (प्रार्थना) करे तो उसकी दुआ स्वीकार की जाती है, तथा यदि वुज़ू कर के नमाज़ पढ़े तो उसकी नमाज़ भी स्वीकार की जाती है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ११५४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६७

१२- पारिवारिक सदस्यों पर पुण्य कमाने के इरादा से ख़र्च करना

फ़ज़ीलत: उसे स़दक़ा (दान) करने का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू मसऊद अन्स़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब कोई मुसलमान अपने परिवार वालों पर पुण्य कमाने के इरादे से ख़र्च करता है तो यह ख़र्च (व्यय) करना उसके लिए स़दक़ा होगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ५३५१ व मुस्लिम: १००२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६८

१३- सूरज ढ़लने के बाद तथा ज़ुह्र से पूर्व चार रक्अत (नफ़्ल) अदा करना

पुण्य: उसके लिए आसमान के द्वार खोल दिये जाते हैं।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन साइब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सूरज ढ़ल जाने के बाद ज़ुह्र से पूर्व चार रक्अतें पढ़ते तथा फ़रमातेः "यह ऐसा समय है जिसमें आसामान के द्वार खोल दिये जाते हैं तथा मैं चाहता हूँ कि मेरा नेक अमल (सद्कर्म) इसमें ऊपर चढ़े"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः ४७८ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १६९

१४- प्रत्येक नमाज़ के पश्चात ३३ बारः «سبحان الله و الحمد لله و الله أكبر» "सुब्ह़ानल्लाहि, वलह़म्दुलिल्लाहि, वल्लाहु अकबर" पढ़ना

फ़ज़ीलत: ऐसा मानव उन लोगों की श्रेणी में शामिल हो जाता है जो आगे बढ़ जाने वाले हैं, तथा वह अपने बाद वालों को पीछे छोड़ देता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः कुछ निर्धन लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए तथा कहने लगे किः धनवान लोग तो उच्च श्रेणी एवं शाश्वत विलासिता ले गए, क्योंकि वो हमारी तरह नमाज़ पढ़ते हैं तथा हमारी ही तरह वो रोज़े भी रखते हैं किंतु उनके पास धन संपत्ति की बाहुल्यता है जिससे वो ह़ज्ज, उमरा, जिहाद तथा दान पुण्य भी करते हैं। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊँ कि उस का पालन कर के तुम उन लोगों तक पहुँच जाओगे जो तुम से आगे बढ़ चुके हैं, तथा तुम्हारे बाद कोई तुम्हें नहीं पा सकेगा, और तुम जिन लोगों में हो उन से उत्तम हो जाओगे सिवाय उसके जो उसी के समान कर्म करे (तो वह तुम्हारे बराबर हो जायेंगे)। तुम प्रत्येक नमाज़ के बाद ३३ बार सुब्ह़ानल्लाह, ३३ बार अल्ह़म्दुलिल्लाह तथा ३३ बार अल्लाहु अकबर पढ़ लिया करो"। ह़दीस़ के रावी (वाचक, वर्णनकर्ता) कहते हैं कि इस विषय में हमारा मतभेद हो गया, हम में से कुछ ने कह कि हम ३३ बार सुब्ह़ानल्लाह, ३३ बार अल्ह़म्दुलिल्लाह तथा ३४ बार अल्ह़म्दुलिल्लाह पढ़ेंगे, अतः मैंने दोबारा अपने गुरु से पूछा, तो उन्होंने उत्तर देते हुए कहा किः सुब्ह़ानल्लाहि, वलह़म्दुलिल्लाहि और वल्लाहु अकबर पढ़ा करो यहाँ तक कि उनमें से प्रत्येक ३३ ३३ बार हो जाए। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः ८४३ व मुस्लिमः ५९५)।

तीसरा खण्ड

पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

१४६ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७०

१- अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण)

फ़ज़ीलत: सबसे उत्तम कार्य, अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने से श्रेष्ठ तथा सोना चाँदी दान करने से भी उत्तम है।

प्रमाण: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हारे सबसे उत्तम एवं तुम्हारे रब के निकट सबसे शुद्ध तथा सर्वोच्च श्रेणी वाले कर्म के बारे में तुम्हें सूचित न करूँ? वह कर्म तुम्हारे लिए सोना चाँदी खर्च करने से भी उत्तम है, वह कर्म तुम्हारे लिए इससे भी उत्तम है कि तुम (युद्ध भूमि में) अपने शत्रु से टकड़ाओ, वो तुम्हारा गला काटें और तुम उनका (अर्थात तुम्हारे जिहाद करन से भी श्रेष्ठ है), लोगों ने कहा: हाँ, (अवश्य बताईये) तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: वह अल्लाह तआला का ज़िक्र है"। (इसे तिर्मिज़ी: ३३७७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७१

२- बाज़ार में प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़ना: «لَا إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ...» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू...

फ़ज़ीलत: दस लाख पुण्य लिखा जाता है तथा स्वर्ग में एक घर का निर्माण किया जाता है।

दलील: उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति बाज़ार जाते हुए यह दुआ पढ़े: «لَا إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, व हुवा ह़य्युन ला यमूतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, वही जीवन देता तथा मृत्यु देता है, वह अमर है कभी मरेगा नहीं, उसी के हाथ में हर प्रकार का कल्याण व भलाई है, तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), तो अल्लाह उसके लिए दस लाख नेकियां लिख देगा तथा उसके दस लाख गुनाह मिटा देगा और स्वर्ग में उसके लिए एक घर बनायेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३४२९ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७२

३- फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ...) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू...

फ़ज़ीलत: दस दर्जा बुलंद होता है तथा दस नेकियां लिखी जाती हैं।

प्रमाण: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेककर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيرٌ) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युह़यी व युमीतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, वही जीवन देता तथा मृत्यु देता है, उसी के हाथ में हर प्रकार का कल्याण व भलाई है, तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), तो उसके लिए दस नेकियां लिखी जायेंगी तथा दस पाप को क्षमा किया जायेगा एवं उसके लिए दस दर्जा बुलंद किया जायेगा"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ९८७८ में तथा तिर्मिज़ी: ३४७३ ने रिवायत किया है, एवं उपरोक्त शब्द तिर्मिज़ी के ही हैं, अलबानी ने इस ह़दीस़ को ह़सन करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७३

४- घर में अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करने के बाद मस्जिद की ओर जमाअत (समूह) के संग नमाज़ पढ़ने के इरादा से निकलना तथा ज़्यादा क़दम चलना

पुण्य: स्वर्ग में श्रेणी उच्च होती है, स्वर्ग में घर बनाया जाता है तथा ह़ज्ज का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिसके द्वारा सर्वशक्तिमान अल्लाह पापों को मिटा देता है तथा श्रेणी को उच्च कर देता है? स़ह़ाबा ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के रसूल! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अप्रिय होने के बावजूद अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करना तथा खूब चल कर मस्जिद जाना"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २५१)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिसने अपने घर में वुज़ू किया, फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की ओर चल कर गया ताकि अल्लाह के फ़र्ज़ों (अनिवार्यों) में से एक फ़र्ज़ को अदा करे तो उसके दोनों क़दम (की स्थिति यह होती है कि) उन में से एक पाप मिटाता है तथा दूसरा दर्जा बुलंद करता है"। (स़हीह़ मुस्लिमः ६६६)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तुम में से किसी एक का जमाअत (समूह) के संग नमाज़ पढ़ना उसके बाज़ार तथा घर में नमाज़ पढ़ने से बीस गुणा से भी अधिक पुण्य का कारण है, ऐसा इसलिए कि जब वह वुज़ू करता है तथा अच्छी तरह वुज़ू करता है, फिर मस्जिद में आता है तथा उसका इरादा केवल नमाज़ पढ़ने का होता है और उसको नमाज़ ही मस्जिद में ले जाती है तो ऐसी स्थिति में वह जो पग भी बढ़ाता है उसके बदले में उसका एक दर्जा बुलंद होता है"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारीः २११९ ने रिवायत किया है तथा मुस्लिमः ६६६ ने भी रिवायत किया है, और उपरोक्त शब्द मुस्लिम द्वारा वर्णित हैं)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि, आपने फ़रमायाः "जो व्यक्ति मस्जिद की ओर भोर-सांझ आता जाता है तो अल्लाह तआला जन्नत में उसकी मेहमानी (आतिथ्य) तैयार करता है, जब भी वह भोर-सांझ (मस्जिद में) आता और जाता है"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारीः ६६२ व मुस्लिमः ६६९ ने रिवायत किया है)।

अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति अपने घर से वुज़ू कर के फ़र्ज़ नमाज़ के लिए निकलता है तो उसका स़वाब व पुण्य ऐसे है जैसे कि ह़ाजी एह़राम बांधे हुए आए"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः २२७३५ तथा अबू दावूदः ५५८ ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७४

५- एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना

पुण्य: दर्जा बुलंद होता है तथा (प्रतीक्षा करने पर भी) नमाज़ का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उन वस्तुओं के विषय में सूचना न दूँ जिनके द्वारा अल्लाह तआला दोषों को मिटाता तथा दर्जा बुलंद करता है? सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के रसूल!? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कष्ट की स्थिति में एवं न चाहते हुए भी अच्छे ढ़ंग से पूर्णरूपेण वुज़ू करना, मस्जिद की तरफ़ दूर से चल कर जाना एवं (एक) नमाज़ के बाद अगली नमाज़ की प्रतीक्षा करना। यह रिबात़ (अर्थात: नमाज़ की पाबंदी करना) है, यह रिबात़ है"। (सह़ीह़ मुस्लिम: २५१)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से हरेक उस समय तक नमाज़ में ही रहता है जब तक नमाज़ ने उसे रोक रखा हो"। (सह़ीह़ बुख़ारी: ६५९ व मुस्लिम: ६४९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७५

६- अप्रिय होने के बावजूद अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करना

पुण्य: श्रेणी उच्च होती है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ जिसके द्वारा सर्वशक्तिमान अल्लाह पापों को मिटा देता है तथा श्रेणी को उच्च कर देता है? सहाबा ने कहा: क्यों नहीं, हे अल्लाह के रसूल! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अप्रिय होने के बावजूद अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करना"। (सह़ीह़ मुस्लिम: २५१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७६

७- अल्लाह के लिए अधिकाधिक सज्दा करना (शीश नवाना)

पुण्य: स्वर्ग में श्रेणी उच्च होगी तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सान्निध्य प्राप्त होगा।

प्रमाण: स़ौबान रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि: मुझे कोई ऐसा कार्य बताएं जिसका पालन करूँ तो वह मुझे स्वर्ग में प्रवेश दिला दे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम अल्लाह के समक्ष अधिकाधिक सज्दे किया करो क्योंकि तुम अल्लाह के लिए जो भी सज्दा करोगे अल्लाह उसके परिणामस्वरूप तुम्हारा दर्जा अवश्य उच्च करेगा तथा तुम्हारा कोई पाप क्षमा कर देगा"। (स़हीह़ मुस्लिम: ४८८)।

रबीआ बिन कअब (बिन मालिक) असलमी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैं (सेवा करने के लिए) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ (स़ुफ़्फ़ा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकट) रात बिताता था, (जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तहज्जुद के लिए उठते तो) मैं वुज़ू का पानी तथा आवश्यकता की अन्य वस्तुएं ले कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित होता। (एक बार) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से कहा: (कुछ) माँगो। तो मैंने कहा: मैं आप से यह चाहता हूँ कि स्वर्ग में भी मुझे आप का सान्निध्य प्राप्त हो, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: अथवा इसके सिवा कुछ और? मैंने कहा: बस यही, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम अपने मामले में अधिकाधिक सज्दे कर के मेरी सहायता करो)। (स़हीह़ मुस्लिम: ४८९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७७

८- संतान का (माता-पिता) के लिए मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ करना

फ़ज़ीलत: जन्नत में दर्जा बुलंद होता है।

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "नि:संदेह रूप से एक व्यक्ति का जन्नत में दर्जा बुलंद किया जाता है, वह कहता है: यह मुझे कैसे मिल गया? (उत्तर में) कहा जाता है: तेरी संतान के तेरे लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करने के कारण"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १०७६० ने रिवायत किया है तथा इब्ने कस़ीर एवं शौकानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १७८-१८१

९-१२: अपशगुन, झाड़-फूँक एवं दाग़ कर उपचार करवाने से बचना तथा केवल अपने अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करना

पुण्य: बिना हिसाब किताब (जाँच पड़ताल) के स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सभी उम्मत (समुदाय) मेरे समक्ष पेश की गईं... मैंने देखा कि बहुत से लोग हैं जिन्होंने क्षितिज को ढ़ाँप रखा है... मुझ से कहा गया: ये लोग आपकी उम्मत हैं तथा उनमें से सत्तर हज़ार (७००००) ऐसे लोग होंगे जो जन्नत में बिना हिसाब के प्रवेश पाएंगे... फ़रमाया: ये वो लोग हैं जो अपशगुन नहीं लेते तथा न झाड़ फूँक कराते हैं एवं न दाग़ (कर उपचार) करवाते हैं, अपितु अपने पालनहार पर तवक्कुल व भरोसा करते हैं"। (स़हीह़ बुख़ारी: ५७५२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८२

१३- अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम रखना

फ़ज़ीलत: स्वर्ग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सान्निध्य प्राप्त होगा।

प्रमाण: अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसको तू प्रिय रखता है क़यामत के दिन उसी के साथ होगा"। (स़हीह़ बुख़ारी: ३६८८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८३

१४- बेटियों तथा बहनों का लालन-पालन करना यहाँ तक कि वो दूर हो जाएं अथवा वह व्यक्ति स्वयं मृत्यु को प्राप्त हो जाये

फ़ज़ीलत: स्वर्ग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सानिध्य प्राप्त होगा।

दलील: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने दो अथवा तीन बेटियों या दो अथवा तीन बहनों का भरण-पोषण किया, यहाँ तक कि वो दूर हो गईं अथवा वह स्वयं मृत्यु को प्राप्त हो गया, तो मैं तथा वह इन दो उँगलियों के समान होंगे", फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहादत एवं बीच वाली (तर्जनी तथा मध्यमा) उँगली के द्वारा इशारा किया। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: ४४७ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८४

१५- अनाथ की देख-रेख (संरक्षकता)

पुण्य: स्वर्ग में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सानिध्य प्राप्त होगा।

तर्क: सह्ल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मैं तथा अनाथ की देख-रेख करने वाला स्वर्ग में इस प्रकार होंगे", फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शहादत एवं बीच वाली (तर्जनी तथा मध्यमा) उँगली के द्वारा इशारा किया, तथा दोनों के मध्य थोड़ी दूरी रखी। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ५३०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८५

१६- अच्छे ढ़ंग से वुज़ू कर के पूरी तन्मयता तथा तल्लीनता के साथ दो रक्अत नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: उसके लिए स्वर्ग अनिवार्य हो जाता है।

दलील: उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो भी मुसलमान वुज़ू करता है तथा वह अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करता है, फिर खड़े हो कर पूरी तन्मयता एवं तल्लीनता के साथ दो रक्अत नमाज़ पढ़ता है, तो उसके लिए स्वर्ग अनिवार्य हो जाता है"। (स़हीह़ मुस्लिम: २३४)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ के पश्चात बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया: "हे बिलाल! मुझे वह अमल (कर्म) बताओ जो तुमने इस्लाम स्वीकार करने के बाद किया हो तथा वह तुम्हारे निकट अधिक आशापूर्ण हो (स्वीकार्य किये जाने के), क्योंकि मैंने स्वर्ग में अपने आगे-आगे तुम्हारे जूतों की आहट सुनी है", बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: मैंने ऐसा कोई कर्म नहीं किया जो मेरे निकट अधिक आशा के योग्य हो, परंतु मैं रात एवं दिन में जब भी वुज़ू करता हूँ तो उस वुज़ू से जो नमाज़ मेरे भाग्य में लिखा होता है, पढ़ लेता हूँ। (स़हीह़ बुख़ारी: ११४९ व मुस्लिम: २४५८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८६

१७- अल्लाह के मार्ग में युद्ध करना यद्यपि अल्प समय के लिए ही क्यों न हो

पुण्य: जन्नत अनिवार्य हो जाती है।

दलील: {إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ} अनुवाद: (निःसंदेह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उनके धनों को इसके बदले ख़रीद लिया है कि उनके लिए स्वर्ग है, वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं, यह अल्लाह पर सत्य वचन है, तैरात तथा इंजील और क़ुरआन में)। सूरह तौबा: १११।

मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "यदि किसी ने ऊँटनी को दोबारा दूहने के अंतराल के बराबर भी जंग लड़ा तो उसके लिए जन्नत वाजिब है"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूदः २५४१, तिर्मिज़ीः १६५७ तथा इब्ने माजहः २७९२ ने रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)। अब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जान लो! जन्नत तलवारों की छाया तले है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः २८१८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८७

१८- ज़ुबान तथा गुप्तांग की सुरक्षा करना

पुण्यः स्वर्ग अनिवार्य हो जाता है।

प्रमाणः सह्ल बिन सअद रज़ियल्लाहु अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि आपने फ़रमायाः "जो व्यक्ति मुझे अपने दोनों जबड़ों के मध्य तथा दोनों टांगों के मध्य चीज़ की ज़मानत दे दे मैं उसके लिए जन्नत की ज़मानत देता हूँ"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः ६४७४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८८

१९- सुबह के समय यह दुआ पढ़नाः «رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا» (रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन, व बिलइस्लामि दीनन, व बिमुहम्मदिन नबिय्यन)

फ़ज़ीलतः स्वर्ग अनिवार्य हो जाता है।

प्रमाणः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी मुनैज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "जो व्यक्ति सुबह के समय यह कहेः «رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا» (रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन, व बिलइस्लामि दीनन, व बिमुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबिय्यन) अर्थातः मैं अल्लाह के रब होने पर और इस्लाम के दीन (धर्म) होने पर तथा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने पर राज़ी व प्रसन्न हूँ, तो मैं उसका ज़ामिन (उत्तरदायी) हूँ, मैं उसका हाथ पकड़ कर स्वर्ग में प्रवेश कराऊँगा"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीरः ८३८ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १८९

२०- जमाअत (समूह) को अनिवार्य रूप से पकड़े रहना

फ़ज़ीलत: सर्वोत्तम एवं माध्यमिक स्वर्ग की प्राप्ति।

दलील: जाबिर बिन समुरह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति स्वर्ग के मध्य (में स्थान) प्राप्त करना चाहता है वह जमाअत (समूह) को अनिवार्य रूप से पकड़े रहे, क्योंकि एक व्यक्ति के साथ शैतान होता है तथा दो से वह अधिक दूर हो जाता है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १७९ ने रिवायत किया है और शुऐब अल-अरनऊ़त ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९०

२१- किसी बीमार की तीमारदारी करना अथवा अल्लाह की ख़ातिर किसी मुसलमान भाई से भेंट करना

पुण्य: स्वर्ग में, स्वर्ग के उपवन में अथवा उसके मार्ग में होगा तथा स्वर्ग में प्रवेश पायेगा।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब मुसलमान अपने मुसलमान भाई की तीमारदारी करता है अथवा उससे भेंट करता है तो सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह फ़रमाता है: तुम प्रसन्न रहो तथा तुम्हारा आना अत्यंत शुभ है और तुमने स्वर्ग में एक घर बना लिया है"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: २९६१ ने स़ह़ीह़ कहा है)।

अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जो मुसलमान भी किसी मुसलमान की सुबह के समय अयादत करने (हाल-चाल पूछने) जाता है, तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए क्षमा याचना करते हैं। तथा जो शाम में अयादत करने जाता है तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए क्षमा याचना करते हैं। तथा जन्नत में उसके लिए एक बाग़ होगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ९६९ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

सौबान रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिस व्यक्ति ने किसी बीमार की अयादत की वह निरंतर जन्नत के ख़ुर्फ़ा में रहा", आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न किया गयाः हे अल्लाह के रसूल! जन्नत का ख़ुर्फ़ा क्या चीज़ है? आपने फ़रमायाः "उसके फल जिसे वह चुनता है"। (सहीह मुस्लिमः २५६८)।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमायाः "वह व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश पायेगा जो नगर के दूसरे किनारे में बसने वाले भाई से अल्लाह तआला की ख़ातिर भेंट करने जाता है"। (इस हदीस को तबरानी ने अल-मुअजम अल-औसतः १७४३ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे हसन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९१

२२- अल्लाह की ख़ातिर एक-दूजे से प्रेम करना

फ़ज़ीलतः जन्नत में उनके लिए एक घर बनाया जाता है, वो जन्नत में दाख़िल होंगे तथा क़यामत के दिन उन्हें छाया प्राप्त होगा।

दलीलः अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक-दूजे से प्रेम करने वालों के कमरे स्वर्ग में उस सितारा के समान दृष्टिगोचर होंगे जो पूर्व में अथवा पश्चिम में उदय होता है, कहा जायेगाः ये कौन लोग हैं? उत्तर मिलेगाः यह सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह की ख़ातिर एक-दूजे से प्रेम करने वाले लोग हैं"। (इस हदीस को अहमदः १२००९) ने रिवायत किया है तथा सुयूती ने इसे सहीह करार दिया है)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तुम स्वर्ग में उस समय तक प्रवेश नहीं पाओगे जब तक कि मोमिन न हो जाओ, तथा तुम मोमिन नहीं हो सकते यहाँ तक कि एक-दूजे से प्रेम न करने लगो, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ कि जब तुम उस का पालन करो तो एक दूसरे के संग प्रेम करने लगो? आपस में सलाम (अभिवादन) को रिवाज दो"। (सहीह मुस्लिमः ५४)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णन करते हैं कि आप ने फ़रमायाः "सात प्रकार के लोगों को अल्लाह तआला अपनी छाया में स्थान देगा जिस दिन उसकी छाया के सिवा कोई और छाया न होगी", उसमें यह भी हैः "वह दो व्यक्ति जो अल्लाह की ख़ातिर मित्रता करें, एकत्र हों तो उसके लिए और अलग हों तो भी उसी के लिए"। (स़हीह़ बुख़ारीः ६६० व मुस्लिमः १०३१)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह तआला क़यामत के दिन फ़रमायेगाः मेरे जलाल (वैभव, प्रताप) के आधार पर एक-दूजे से प्रेम करने वाले लोग कहाँ हैं? आज मैं उन्हें अपनी छाया में स्थान दूँगा, आज के दिन जब मेरी छाया के सिवा कोई और छाया नहीं"। (स़हीह़ मुस्लिमः २५६६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९२

२३- हुस्न -ए- अख़लाक़ (अच्छा आचरण व शिष्टाचार)

पुण्यः जन्नत में प्रवेश मिलेगा, तराज़ू पर क़यामत के दिन सबसे भारी अमल (कार्य) होगा तथा जन्नत के ऊपरी भाग में उसे एक घर मिलेगा।

प्रमाणः अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उस चीज़ के विषय में प्रश्न किया गया जो लोगों को अधिकाधिक जन्नत में प्रवेश दिलायेगी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह का भय तथा अच्छा आचरण"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः २००४ ने रिवायत किया है तथा स़हीह़ करार दिया है)।

अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़यामत के दिन मोमिन के मीज़ान (तराज़ू) में अख़्लाक़ -ए- ह़सनह (शिष्टाचार, सद्व्यवहार) से भारी कोई चीज़ नहीं होगी"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः २००२ तथा अबू दावूदः ४७९९ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "मैं ज़िम्मेवार (उत्तरादायी) हूँ जन्नत के ऊपरी भाग में एक महल का, उस व्यक्ति के लिए जो अपने आचरण को अच्छा कर ले"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूदः ४८०० ने रिवायत किया है तथा नववी एवं इब्नुल क़ैय्यिम ने इसे स़हीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९३

२४- आपदा के समय अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुतिगान करना तथा ﴿إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, पढ़ना एवं यह कहना: ﴿اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا﴾ अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुसीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा

फ़ज़ीलत: जन्नत में (उसके लिए) एक घर बनाया जाता है तथा उसे सवाब व पुण्य भी प्राप्त होता है।

दलील: अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब किसी बंदे का बच्चा मर जाता है तो अल्लाह तआला अपने फ़रिश्तों से पूछता है: तुमने मेरे बंदे के संतान की आत्मा को निकाल लिया? तो वो कहते हैं कि: हाँ, फिर (अल्लाह) कहता है: तुमने उसके दिल का फल ले लिया? वो कहते हैं कि: हाँ, तो अल्लाह पूछता है: मेरे बंदे ने क्या कहा? वो कहते हैं: उसने तेरी प्रशंसा की एवं ﴿إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (अर्थात: निःसंदेह हम अल्लाह के हैं तथा उसी की ओर लौटने वाले हैं), कहा। तो अल्लाह तआला फ़रमाता है: मेरे बंदे के लिए स्वर्ग में एक घर तैयार कर दो तथा उसका नाम "बैत अल-ह़म्द (प्रशंसा का घर) रखो"।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्म पत्नी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हुए सुना: "ऐसा कोई बंदा नहीं जिसे कोई विपदा पहुँचे तथा वह कहे: ﴿اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا﴾ अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुसीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा (अर्थात: हे अल्लाह! मुझे मेरी विपदा का पुण्य दे तथा मुझे इसका उत्तम बदला प्रदान कर), परंतु अल्लाह तआला उसे उसकी विपदा का पुण्य देता है तथा उसे उसका उत्तम बदला प्रदान करता है"। (स़हीह़ मुस्लिम: ९१८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९४

२५- झूठ बोलने से बचना, यद्यपि हास्य-परिहास में ही क्यों न हो

पुण्य: जन्नत के मध्य में उसके लिए एक घर बनाया जाता है।

प्रमाण: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मैं ज़िम्मेवार हूँ एक महल का, जन्नत के मध्य में, उस व्यक्ति के लिए झूठ छोड़ दे, चाहे मज़ाक़ में ही क्यों न हो"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ४८०० ने रिवायत किया है, तथा नववी एवं इब्नुल क़य्यिम ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९५

२६- फ़र्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त बारह रक्अत नफ़्ल पढ़ना

फ़ज़ीलत: उसके लिए स्वर्ग में एक घर बनाया जाता है।

दलील: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्म पत्नी उम्मे ह़बीबा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहती हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "कोई ऐसा मुसलमान नहीं जो प्रत्येक दिन अल्लाह के लिए फ़र्ज़ नमाज़ों के सिवा बारह रक्अत सुन्नत अदा करता हो, परंतु अल्लाह उसके लिए स्वर्ग में एक घर बना देता है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ७२८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९६

२७- अल्लाह को प्रसन्न करने हेतु मस्जिद का निर्माण करना

पुण्य: उसके लिए जन्नत में एक घर तैयार किया जाता है।

प्रमाण: उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिस व्यक्ति ने अल्लाह की ख़ातिर कोई मस्जिद बनाई, अल्लाह उसके लिए जन्नत में उस जैसा (घर) तैयार करेगा", एक रिवायत में यों है: "अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में एक घर तैयार करेगा"। (इस ह़दीस़ को बुख़ारी: ४५० व मुस्लिम: ५३३ ने रिवायत किया है, तथा पूर्वोक्त शब्द मुस्लिम द्वारा वर्णित हैं)।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह के लिए क़त़ात (एक प्रकार का कबूतर) के घोंसले जितनी अथवा उससे भी छोटी मस्जिद बनाई, अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत में घर तैयार करेगा"। (इस ह़दीस़ को इब्ने माजह: ७३८ तथा इब्ने ख़ुज़ैमह: १२९२ ने रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९७

२८- सही होने के बावजूद विवाद छोड़ दे

पुण्य: जन्नत में एक घर तैयार किया जाता है।

प्रमाण: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जन्नत के एक किनारे में, एक महल का मैं जिम्मेदार (उत्तरदायी) हूँ, उस व्यक्ति के लिए जो झगड़ा छोड़ दे, यद्यपि वह सही ही क्यों न हो"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ४८०० ने रिवायत किया है तथा नववी एवं इब्नुल क़य्यिम ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९८

२९- अल्लाह का तक़्वा एवं भय

फ़ज़ीलत: स्वर्ग में पत्नियां मिलेंगी, स्वर्ग में प्रवेश मिलेगा, अल्लाह के निकट सत्य के स्थान में होंगे, उसके लिए अल्लाह के स़वाब (पुण्य) तथा जन्नत, सफलता एवं उत्तम परिणाम की शुभ सूचना है, अल्लाह उसे स़वाब एवं अज्र से मालामाल कर देगा।

प्रमाण: ﴿لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ﴾ अनुवाद: (उनके लिये जो डरें, उनके पालनहार के पास ऐसे स्वर्ग हैं जिनमें नहरें बह रही हैं, वो उनमें सदावासी होंगे, तथा निर्मल पत्नियां होंगी)। सूरह आले इमरान: १५।

﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ * فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ * يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ * كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ﴾ अनुवाद: (निःसंदेह आज्ञाकारी शांति के स्थान में होंगे। बाग़ों तथा जल स्रोतों में। वस्त्र धारण किये हुए महीन तथा कोमल रेशम के एक-दूसरे के सामने (आसीन) होंगे। इसी प्रकार होगा, तथा हम विवाह करा देंगे उनकी हूरों (अप्सराओं) से)। सूरह दुख़ान: ५१-५४।

﴿إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا * حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا * وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا * وَكَأْسًا دِهَاقًا * لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذَّابًا * جَزَاءً مِنْ رَبِّكَ عَطَاءً حِسَابًا﴾ अनुवाद: (वास्तव में जो डरते हैं उन्ही के लिए सफलता है। बाग़ तथा अँगूर हैं। और नवयुवति कुमारियाँ। तथा छलकते प्याले। उसमें बकवाद तथा मिथ्या बातें नहीं सुनेंगे। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से भरपूर पुरस्कार है)। सूरह नबा: ३१-३६।

﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ﴾ अनुवादः (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है)। सूरह आले इमरानः १३३।

﴿مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ﴾ अनुवादः (उस स्वर्ग का उदाहरण जिसका वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उसमें नहरें बहती हैं, उसके फल सतत हैं और उसकी छाया, यह उनका परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफ़िरों के परिणाम नरक हैं)। सूरह रअदः ३५।

﴿وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ * جَنَّاتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ الْمُتَّقِينَ﴾ अनुवादः (और आज्ञाकारियों का आवास कितना अच्छा है। सदा रहने के स्वर्ग जिसमें प्रवेश करेंगे, जिनमें नहरें बहती होंगी, उन के लिए उस में जो चाहेंगे (मिलेगा), इसी प्रकार अल्लाह आज्ञाकारियों को प्रतिफल देता है)। सूरह नह्लः ३०-३१।

﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ﴾ अनुवादः (वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे)। सूरह ज़ारियातः १५।

﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى * وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى * فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى﴾ अनुवादः (जिसने दिया (अल्लाह के मार्ग में) तथा डरा (अपने रब से)। और नेक बात की पुष्टि करता रहेगा। तो हम भी उसको सरल मार्ग की सहूलत देंगे)। सूरह लैलः ५-७।

﴿وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ﴾ अनुवादः (परहेज़गारों के लए स्वर्ग बिल्कुल समीप लाई जायेगी)। सूरह शुअराः ९०।

﴿إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ﴾ अनुवादः (निश्चय ही सदाचारियों के लिए उनके पालनहार के पास सुखों वाले स्वर्ग हैं)। सूरह क़लमः ३४।

﴿مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ﴾ अनुवादः (वह स्वर्ग जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है, यह है कि उसमें पानी की नहरें हैं जो दुर्गंध करने वाला नहीं तथा दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नहीं बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए बड़ा स्वादिष्ट है तथा नहरें हैं शहद (मधु) की जो अत्यंत स्वच्छ हैं और उनके लिए वहाँ हर प्रकार के मेवे हैं तथा उनके पालनहार की ओर से क्षमा है)। सूरह मुहम्मदः १५।

﴿وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّى إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ﴾

अनुवादः (तथा भेज दिये जायेंगे जो लोग डरते रहे अपने पालनहार से स्वर्ग की ओर झुण्ड बना कर, यहाँ तक कि जब वे आ जायेंगे उसके पास तथा खोल दिये जायेंगे उस के द्वार और कहेंगे उन से उसके रक्षकः सलाम है तुम पर, तुम प्रसन्न रहो, तुम प्रवेश कर जाओ उसमें सदावासी हो कर)। सूरह ज़ुमरः ७३।

﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلَالٍ وَعُيُونٍ * وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ * كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ * إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ﴾

अनुवादः (निःसंदेह आज्ञाकारी उस दिन छाँव तथा जल स्रोतों में होंगे। तथा मन चाहे फलों में। खाओ तथा पियो मज़े से उन कर्मों के बदले जो तुम करते रहे। हम नेकी करने वालों को इसी प्रकार प्रतिफल देते हैं)। सूरह मुर्सलातः ४१-४४।

﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ * فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُقْتَدِرٍ﴾

अनुवादः (वस्तुतः सदाचारी लोग स्वर्गों तथा नहरों में होंगे। सत्य के स्थान में अति सामर्थ्यवान स्वामी के पास)। सूरह क़मरः ५४-५५।

﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ * لَهُمُ الْبُشْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾

अनुवादः (जो ईमान लाये तथा अल्लाह से डरते रहे। उन्ही के लिए सांसारिक जीवन में शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी, अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है)। सूरह यूनुसः ६३-६४।

﴿فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنْذِرَ بِهِ قَوْمًا لُدًّا﴾

अनुवादः (अतः (हे नबी!) हमने सरल बना दिया है, इस (क़ुरआन) को आपकी भाषा में ताकि आप इसके द्वारा शुभ सूचना दें संयमियों (आज्ञाकारियों) को, तथा सतर्क कर दें विरोधियों को)। सूरह मर्यमः ९७।

﴿وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ﴾

अनुवादः (अंतिम सफलता उन्ही की होती है जो अल्लाह से डरते हैं)। सूरह आराफ़ः १२८, व सूरह क़सस़ः ८३।

﴿فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ﴾

अनुवादः (आप सहन करें, वास्तव में अच्छा परिणाम आज्ञाकारियों के लिए है)। सूरह हूदः ४९।

﴿وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا﴾ अनुवादः (जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके पाप मिटा देगा तथा उसे महान पुण्य देगा)। सूरह त़लाक़ः ५।

﴿وَإِنْ تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ﴾ अनुवादः (यदि तुम ईमान लाओ तथा तक़्वा (अल्लाह का भय) अपनाओ तो तुम्हारे लिए महा पुण्य है)। सूरह आले इमरानः १७९।

﴿وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أُجُورَكُمْ﴾ अनुवादः (यदि तुम ईमान लाओगे तथा परहेज़गारी धारण करोगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारा अज्र देगा)। सूरह मुह़म्मदः ३६।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उस चीज़ के विषय में प्रश्न किया गया जो सर्वाधिक लोगों को स्वर्ग में प्रवेश दिलायेगी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "अल्लाह का तक़्वा (डर)"। इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः २००४ ने रिवायत किया है तथा इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी १९९-२०२

३०-३३: (سبحان الله) सुब्ह़ानल्लाह, (الحمد لله) अल्ह़म्दुलिल्लाह, (لا اله الا الله) ला इलाहा इल्लल्लाहु तथा (الله اكبر) अल्लाहु अकबर, पढ़ना

फ़ज़ीलतः स्वर्ग में एक वृक्ष लगाया जाता है तथा स़दक़ा (दान) का पुण्य प्राप्त होता है।

दलीलः अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "(سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ), सुब्ह़ानल्लाह, अल्ह़म्दुलिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाहु तथा अल्लाहु अकबर, कहो, इनमें से प्रत्येक कलेमा (वाक्य) के बदले स्वर्ग में तुम्हारे लिए एक-एक वृक्ष लगा दिया जायेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः ३९२० ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः (निःसंदेह हर बार सुब्ह़ानल्लाह कहना स़दक़ा है, हर बार अल्लाहु अकबर कहना स़दक़ा है, हर बार अल्ह़म्दुलिल्लाह कहना स़दक़ा है, हर बार ला इलाहा इल्लल्लाह कहना स़दक़ा है। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः १००६)।

अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सुबह को तुम में से प्रत्येक व्यक्ति के प्रत्येक जोड़ पर सदक़ा (दान) होता है। हरेक तस्बीह़ (सुब्हानल्लाह कहना) सदक़ा है, हरेक तह़मीद (अल्ह़म्दुलिल्लाह कहना) सदक़ा है, हरेक तहलील (ला इलाहा इल्लल्लाह कहना) सदक़ा है तथा हरेक तकबीर (अल्लाहु अकबर कहना) भी सदक़ा है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: १६४८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०३

३४- यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، وَبِحَمْدِهِ» सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, व बिह़म्दिहि

पुण्य: जन्नत में खजूर का एक पेड़ लगाया जाता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، وَبِحَمْدِهِ» सुब्हानल्लाहिल अज़ीम व बिह़म्दिहि, कहा उसके लिए स्वर्ग में खजूर का एक वृक्ष लगाया जायेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३८०८ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०४

३५- क्रोध को नियंत्रण में रखना जब्कि उसको पूरा कर डालने की क्षमता हो

फ़ज़ीलत: स्वर्ग में प्रवेश पायेगा, उसे अल्लाह तआला लोगों के समक्ष बुलायेगा तथा उसे अधिकार देगा कि वह जिस ह़ूर (अप्सरा) को चाहे चुन ले, तथा क़यामत के दिन उसका ह़दय आशा से भरा होगा।

दलील: ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ* الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ﴾ अनुवाद: (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है। जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते हैं)। सूरह आले इमरान: १३३-१३४।

मुआज़ बिन अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति क्रोध को नियंत्रित कर ले हालांकि वह उसको पूरा करने में समर्थ हो, तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे लोगों के सामने बुलायेगा और उसे अधिकार देगा कि वह जिस ह़ूर का चाहे चयन कर ले"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २०२१ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिस व्यक्ति ने क्रोध पर नियंत्रण कर लिया जबकि यदि वह चाहता तो उसको पूरा कर सकता था तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके हृदय में आशा भर देगा"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीरः १३६४६ में रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०५

३६- श्रद्धा एवं विनम्रता तथा अल्लाह के लिए विनीत होते हुए, सामर्थ्यवान होने के बावजूद (महंगे) वस्त्रों का त्याग करना

फ़ज़ीलत: जन्नत में प्रवेश पायेगा तथा समस्त सृष्टि के समक्ष अल्लाह उसे बुलायेगा ताकि वह ईमान वालों के वस्त्र में से जिसे चाहे पसंद करे तथा धारण करे।

प्रमाण: ह़ारिस़ा बिन वह्ब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं किः मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "मैं तुम्हें बताऊँ कि जन्नती कौन है? हर वह कमज़ोर जिसे लोग निर्बल, निर्धन एवं तुच्छ समझते हों"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः २८५३ व मुस्लिमः ६६५७)।

मुआज़ बिन अनस जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति शोभा वाला वस्त्र विशुद्ध रूप से केवल अल्लाह को प्रसन्न करने हेतु तथा उसके लिए विनम्रता अपनाते हुए छोड़ दे जबकि वह उके पास उपलब्ध है तो अल्लाह तआला ऐसे व्यक्ति को क़यामत के दिन समस्त सृष्टि के सामने उसे बुलायेगा ताकि वह अहले ईमान के वस्त्र में से जिसे चाहे चुन ले, तथा पहने"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः २६८५ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०६

३७- निर्धन को मोहलत देना, क़र्ज़ की अदायगी के समय कमी कोताही की अनदेखी करना अथवा (क़र्ज़) माफ़ कर देना

फ़ज़ीलत: जन्नत में प्रवेश पायेगा तथा क़यामत के दिन छाया प्राप्त होगा।

प्रमाण: हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि: एक व्यक्ति मर गया तथा जन्नत में दाख़िल हुआ तो उससे कहा गया: तू क्या कर्म करता था? उसने कहा: (हे मेरे पालनहार!) मैं लोगों से क़र्ज़ के आधार पर क्रय-विक्रय करता था, तो मैं तंग दस्त (निर्धन) को मोहलत देता था तथा सिक्का एवं नक़दी वसूल करने में दयालुता अपनाता था, तो उसको माफ़ कर दिया गया। (स़हीह़ बुख़ारी: २३९१ व मुस्लिम: १५६०)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति किसी कंगाल (क़र्ज़दार) को छूट दे अथवा उसका कुछ ऋण माफ कर दे, तो अल्लाह उसे क़यामत के दिन अपने अर्श की छाया के नीचे स्थान देगा जिस दिन उसकी छाया के सिवा कोई छाया न होगी"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ८८३२ तथा तिर्मिज़ी: १३०६ ने रिवायत किया है, और अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०७

३८- रोज़ा

फ़ज़ीलत: जन्नत में दाख़िल होगा तथा अल्लाह तआला उसे पुण्य एवं स़वाब से अनुगृहीत करेगा।

दलील: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया तथा कहा: "आप मुझे कोई ऐसा अमल (कर्म) बताएं जिस का पालन कर के मैं स्वर्ग में प्रवेश पा सकूँ, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अनिवार्य रूप से रोज़े का पालन करो, क्योंकि उसके समान कुछ भी नहीं"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२५७९ तथा इब्ने ह़िब्बान: ३४२५ ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे स़हीह़ करार दिया है)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने कहा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला का फ़रमान है: आदम की संतान के समस्त कर्म उसके लिए हैं सिवाय रोज़ा के, वह विशेष रूप से मेरे लिए है तथा मैं स्वयं ही उसका बदला दूँगा"। (स़हीह़ बुख़ारी: ११५१ व मुस्लिम: १९०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०८

३९- लोगों के दोषों की अनदेखी करना, दुर्व्यवहार करने वालों को क्षमा कर देना तथा सुधार करना

फ़ज़ीलत: जन्नत में प्रवेश तथा अल्लाह का सवाब व पुण्य।

प्रमाण: ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ* الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ﴾ अनुवाद: (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है। जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते हैं और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं)। सूरह आले इमरान: १३३-१३४।

﴿وَجَزَاء سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ﴾ अनुवाद: (तथा बुराई का बदला बुराई है उसी जैसी, फिर जो क्षमा कर दे तथा सुधार कर ले तो उसका प्रतिफल अल्लाह के ऊपर है)। सूरह शूरा: ४०।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २०९

४०- समृद्धि एवं निर्धनता हरेक स्थिति में, माँगने वाले तथा सवाल से बचने वाले पर, ख़र्च करना तथा कंजूसी से दूर रहना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश, सफलता तथा बेहतर अंत।

प्रमाण: ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى * وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى * فَسَنُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى﴾ अनुवाद: (जिसने दिया (अल्लाह के मार्ग में) तथा डरा (अपने रब से)। और नेक बात की पुष्टि करता रहेगा। तो हम भी उसको सरल मार्ग की सहूलत देंगे)। सूरह लैल: ५-७।

﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ * آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ* كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ * وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ * وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ﴾ अनुवादः (वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे। लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उनको उनके पालनहार ने, वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे। वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे। तथा भोरों में क्षमा माँगते थे। और उनके धनों में माँगने वाले तथा न पाने वाले का भाग था)। सूरह ज़ारियातः १५-१९।

﴿وَمَنْ يُوقَ شُحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ﴾ अनुवादः (और जो व्यक्ति अपने स्वार्थ के लोभ से सुरक्षित कर दिया गया वही सफल है)। सूरह तग़ाबुनः १६।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१०

४१- रात्रि के समय जब लोग सो रहे हों तो उस समय नमाज़ पढ़ना, रात में कम से कम सोना तथा हज़ार आयत से क़याम करना (तहज्जुद पढ़ना)

पुण्यः जन्नत में प्रवेश पायेगा तथा बहुमूल्य पुण्य प्राप्त होगा

प्रमाणः ﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ * آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ * كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ﴾ अनुवादः (वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे। लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उनको उनके पालनहार ने, वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे। वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे)। सूरह ज़ारियातः १५-१७।

अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तथा जब लोग सो रहे हों तो तुम रात को नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ो, तुम सलामती (शांति) के साथ जन्नत में प्रवेश पा जाओगे"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः २४३०७, तिर्मिज़ीः २४८५ तथा इब्ने माजहः १३३४ ने रिवायत किया है, एवं उपरोक्त शब्द उसी के द्वारा वर्णित हैं, और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति हज़ार आयतों से क़याम करे वह मुक़न्तिरीन (अनगिनत पुण्य संग्रहीत करने वालों) में लिखा जाता है"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूदः १३९८ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २११

४२- सूरह मुल्क की तिलावत (पाठ) करना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश एवं स्वर्ग में प्रवेश की सिफ़ारिश (अभिस्तावना)।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यह सूरह अपने पढ़ने वाले के लिए सिफ़ारिश करेगी, यहाँ तक कि उसे स्वर्ग में प्रवेश करा देगी"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-औसत़: ३६५४ तथा अल-मुअजम अल- स़ग़ीर: ४९० में रिवायत किया है, और हैस़मी ने कहा है: इसके रिजाल (वर्णनकर्ता) स़ह़ीह़ (बुख़ारी व मुस्लिम) के रिजाल हैं)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क़ुरआन की तीस आयतों की एक सूरह ने अपने पढ़ने वाले के लिए शफ़ाअत (सिफ़ारिश) की तो उसे क्षमा कर दिया गया, यह सूरह ﴿تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ﴾ (तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क) है"। (इस ह़दीस़ को इब्ने माजह: ३७८६ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१२

४३- कलेमा -ए- शहादत पढ़ना: «أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ» अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहु ला शरीका लहु, व अन्ना मुह़म्मदन अब्दुहु व रसूलुहु

पुण्य: जन्नत के आठ द्वारों में से जिस से चाहेगा दाख़िल हो जायेगा, चाहे उसका कर्म जो भी हो।

प्रमाण: उबादह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने यह गवाही दी: أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، وَأَنَّ عِيسَى عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ، أَدْخَلَهُ اللهُ الْجَنَّةَ عَلَى مَا كَانَ مِنْ الْعَمَلِ

अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहु ला शरीका लहु, व अशहदु अन्ना मुह़म्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, व अन्ना ईसा अब्दुल्लाहि व रसूलुहु व कलिमतुहु अलक़ाहा इला मर्यमा व रूहुम्मिन्हु, वलजन्नतु ह़क़्क़ुन वन्नारु ह़क़्क़ुन, अदख़लहु अल्लाहु अल-जन्नता अला मा काना मिनलअमलि (अर्थातः अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत व अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, तथा आदरणीय मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं, और आदरणीय ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे तथा उसके रसूल हैं, इसके अतिरिक्त वह ऐसा कलेमा (वाक्य) हैं जिसे मर्यम अलैहस्सलाम तक पहुँचाया और उसकी ओर से रूह़ (प्राण) हैं, जन्नत भी सत्य है तथा जहन्नम भी सत्य है। तो उसने जो भी कर्म किया होगा, अल्लाह तआला उसे जन्नत में प्रवेश दिलायेगा", बुख़ारी की एक रिवायत में यह वृद्धि हैः "ऐसा व्यक्ति जन्नत के आठों दरवाज़ों में से जिस से चाहे गुज़रेगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः ३४३५ व मुस्लिमः २८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१३

४४- ह़ज्ज -ए- मबरूर (स्वीकार्य ह़ज्ज)

पुण्यः स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाणः अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "ह़ज्ज -ए- मबरूर (स्वीकृत ह़ज्ज) का बदला तो जन्नत ही है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः १७७३ व मुस्लिमः १७७३)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१४

४५- अल्लाह के समक्ष सच्चे हृदय से तौबा करना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تُوبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَصُوحًا عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يُكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ﴾ अनुवाद: (अर्थात: हे ईमान वालो तुम अल्लाह के समक्ष सच्ची तौबा करो। संभव है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप दूर कर दे, तथा तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रवेश दे जिनके नीचे नहरें बहती हैं)। सूरह तहरीम: ८।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१५

४६- कबीरा गुनाहों (महा पापों) से बचना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: {إِنْ تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا} अनुवाद: (यदि तुम उन महा पापों से बचते रहोगे जिन से तुम को रोका जाता है तो हम तुम्हारे छोटे पापों को दूर कर देंगे तथा तुम्हें सम्मानित स्थान में प्रवेश देंगे)। सूरह निसा: ३१।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१६

४७- माता-पिता का आज्ञापालन

पुण्य: जन्नत में प्रवेश।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "उस व्यक्ति की नाक में धूल लगे, फिर उसकी नाक में धूल लगे, फिर उसकी नाक में धूल लगे", प्रश्न किया गया: हे अल्लाह के रसूल! वह कौन व्यक्ति है? फ़रमाया: "जिसके होते हुए, उसके माता-पिता, दोनों में से किसी एक को अथवा दोनों को, बुढ़ापे ने पाया, फिर (उनकी सेवा कर के) जन्नत में दाख़िल न हुआ"। (स़हीह़ मुस्लिम: २५५१)।

अयाज़ बिन मर्सद अथवा मर्सद बिन अयाज़ आमिरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ऐसे अमल (कर्म) के संबंध में प्रश्न किया जो उसे स्वर्ग में प्रवेश करा दे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क्या तुम्हारे माता-पिता में से कोई जीवित हैं?" उन्होंने उत्तर दियाः नहीं, आपने तीन बार प्रश्न किया, फिर फ़रमायाः "पानी पिलाओ, जब लोग मौजूद न हों तो उन्हें पानी पहुँचा दो तथा यदि वह उपस्थित हों तो पानी की आवश्यकता की पूर्ति करो"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीरः १०१४ में रिवायत किया है तथा हैस़मी ने कहाः इसके रिजाल (वर्णनकर्ता) स़ह़ीह़ (बुख़ारी व मुस्लिम) के रिजाल हैं)।

अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं किः मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "पिता जन्नत का बीच वाला द्वार है, यदि तुम चाहो तो उस द्वार को नष्ट कर दो तथा यदि चाहो तो उसकी सुरक्षा करो"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः २८१५९) तथा तिर्मिज़ीः १९०० ने रिवायत किया है, एवं इब्ने माजहः ३६६३ ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१७

४८- आज़माइश व परीक्षा के समय स़ब्र, धैर्य एवं संयम से काम लेना

पुण्यः स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाणः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "यदि तुम चाहो तो स़ब्र करो तथा बदले में तुम्हारे लिए जन्नत है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः ५६५२ व मुस्लिमः २५७६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१८

४९- एक साथ रोज़ा रखना, जनाज़ा के पीछे चलना, निर्धन को भोजन कराना तथा बीमार की अयादत करना (हाल-चाल पूछने जाना)

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "किसी व्यक्ति में ये समस्त गुण एकत्रित नहीं होते परंतु वह निश्चित रूप से स्वर्ग में प्रवेश पाता है"। (सहीह मुस्लिम: १०२८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २१९

५०- ज्ञान प्राप्त करना

पुण्य: जन्नत में दाख़िला।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो ज्ञान अर्जित करने के उद्देश्य से कहीं जाए, तो अल्लाह उसके लिए जन्नत के रास्ते को आसान व सरल कर देता है"। (सहीह मुस्लिम: २६९९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२०

५१- सच्चाई एवं सत्यवादिता

पुण्य: जन्नत में प्रवेश।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सच्चाई नेकी का रास्ता दिखलाती है तथा नेकी जन्नत की तरफ ले जाती है, और आदमी सच बोलता रहता है यहाँ तक कि वह सिद्दीक़ (सत्यवादी होने) का दर्जा प्राप्त कर लेता है"। (सहीह बुख़ारी: ६०९४ व मुस्लिम: २६०६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२१

५२- सलाम (अभिवादन) को आम करना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम स्वर्ग में उस समय तक प्रवेश नहीं पाओगे जब तक कि मोमिन न हो जाओ, तथा तुम मोमिन नहीं हो सकते यहाँ तक कि एक-दूजे से प्रेम न करने लगो, क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊँ कि जब तुम उस का पालन करो तो एक दूसरे के संग प्रेम करने लगो? आपस में सलाम (अभिवादन) को रिवाज दो"। (सहीह मुस्लिम: ५४)।

अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "लोगो! सलाम फैलाओ, भोजन कराओ तथा जब लोग सो रहे हों तो तुम रात को नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ो, तुम सलामती (शांति) के साथ जन्नत में प्रवेश पा जाओगे"। (इस हदीस़ को अहमद: २४३०७, तिर्मिज़ी: २४८५ तथा इब्ने माजह: १३३४ ने रिवायत किया है, एवं उपरोक्त शब्द उसी के द्वारा वर्णित हैं, और अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२२

५३- मुसलमानों के मार्ग से कष्टदायक वस्तुओं को दूर करना, जैसे पीड़ादायक वृक्षों को काट देना

फ़ज़ीलत: स्वर्ग में प्रवेश।

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति मार्ग में पड़ी हुई वृक्ष की शाखा के समीप से गुज़रा तो उसने कहा: अल्लाह की क़सम! मैं इस शाखा को मुसलमानों के मार्ग से हटा दूँगा ताकि यह उनको कष्ट न पहुँचाए, तो उस व्यक्ति को जन्नत में दाख़िल कर दिया गया"। (सहीह मुस्लिम: १९१४)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मैंने एक व्यक्ति को देखा कि वह (उस कर्म के बदले) जन्नत में चहुँ ओर (नियामतों के) मज़े ले रहा था (क्योंकि) उसने मार्ग के बीच से एक ऐसे वृक्ष को काट दिया था जो लोगों को कष्ट देता था"। (सहीह मुस्लिम: १९१४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२३

५४- अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करने के पश्चात यह दुआ पढ़ना: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ» अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुल्लाहि व रसूलुहु

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से जो व्यक्ति भी वुज़ू करे तथा पूर्णरूपेण वुज़ू करे (अथवा खूब अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करे) फिर यह कहे: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ» अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुल्लाहि व रसूलुहु, (अर्थात: मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, तथा आदरणीय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं), तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जिस से चाहे अंदर चला जाये"। (स़हीह़ मुस्लिम: २३४।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२४

५५- अल्लाह तआला के निन्यानवे अस्मा -ए- हुस्ना (सुंदर नामों) को कंठस्थ करना

पुण्य: जन्नत में प्रवेश।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला के निन्यानवे अर्थात एक कम सौ नाम हैं, जो व्यक्ति भी उन्हें याद करेगा वह जन्नत में प्रवेश पायेगा"। (स़हीह़ बुख़ारी: ६४१० व मुस्लिम: २६७७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२५

५६- पानी पिलाना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अयाज़ बिन मर्सद अथवा मर्सद बिन अयाज़ आमिरी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ऐसे अमल (कर्म) के संबंध में प्रश्न किया जो उसे स्वर्ग में प्रवेश करा दे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या तुम्हारे माता-पिता में से कोई जीवित हैं?" उन्होंने उत्तर दिया: नहीं, आपने तीन बार प्रश्न किया, फिर फ़रमाया: "पानी पिलाओ, जब लोग मौजूद न हों तो उन्हें पानी पहुँचा दो तथा यदि वह उपस्थित हों तो पानी की आवश्यकता की पूर्ति करो"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: १०१४ में रिवायत किया है तथा हैस़मी ने कहा: इसके रिजाल (वर्णनकर्ता) स़ह़ीह़ (बुख़ारी व मुस्लिम) के रिजाल हैं)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२६

५७- भोजन कराना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "लोगो! सलाम फैलाओ, भोजन कराओ तथा जब लोग सो रहे हों तो तुम रात को नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ो, तुम सलामती (शांति) के साथ जन्नत में प्रवेश पा जाओगे"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २४३०७ तथा तिर्मिज़ी: २४८५ ने रिवायत किया है, और अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२७

५८- पाप के पश्चात इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करना एवं गुनाह पर अड़े न रहना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाणः ﴿وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ* الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ* وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ अनुवादः (और अपने पालनहार की क्षमा तथा उस स्वर्ग की ओर अग्रसर हो जाओ, जिसकी चौड़ाई आकाशों तथा धरती के बराबर है, (जो) आज्ञाकारियों के लिए तैयार की गई है। जो सुविधा तथा असुविधा की दशा में दान करते रहते हैं, तथा क्रोध पी जाते हैं और लोगों के दोष क्षमा कर दिया करते हैं, और अल्लाह सादाचारियों से प्रेम करता है। और जब कभी वह कोई बड़ा पाप कर जायें अथवा अपने ऊपर अत्याचार कर लें तो अल्लाह को याद करते हैं, फिर अपने पापों के लिए क्षमा माँगते हैं, तथा अल्लाह के सिवा कौन है, जो पापों को क्षमा करे? और अपने किये पर जान बूझ कर अड़े नहीं रहते)। सूरह आले इमरानः १३३-१३५।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२८

५९- विश्वास के साथ दिल से मुअज़्ज़िन के अज़ान का उत्तर देना

पुण्यः जन्नत में प्रवेश।

प्रमाणः उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जब मुअज़्ज़िन (अज़ान पुकारने वाला) अल्लाहु अकबर कहे तो तुम में से हरेक अल्लाहु अकबर कहे, फिर वह (मुअज़्ज़िन) कहेः अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु तो वह भी कहेः अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु, फिर (मुअज़्ज़िन) अश्हदु अन्ना मुहम्मदर् रसूलुल्लाह कहे, तो वह भी अश्हदु अन्ना मुहम्मदर् रसूलुल्लाह कहे, फिर वह (मुअज़्ज़िन) ह़य्या अलस़्सलात कहे, तो वह ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि कहे, फिर मुअज़्ज़िन ह़य्या अलल फ़लाह़ कहे तो वह ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि कहे, फिर (मुअज़्ज़िन) अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर कहे तो वह भी अल्लाहु अकबर कहे, फिर (मुअज़्ज़िन) ला इलाहा इल्लल्लाह कहे तो वह भी अपने दिल में ला इलाहा इल्लल्लाह कहे, तो वह जन्नत में प्रवेश पायेगा"। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः ३८५)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति विश्वास के साथ इस प्रकार से कहे तो वह जन्नत में प्रवेश पायेगा"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बानः १६६७ ने रिवायत किया है तथा इसे स़ह़ीह़ कहा है, और अलबानी ने भी इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २२९

६०- प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के पश्चात आयतुल कुर्सी का पाठ करना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी की तिलावत करे उसे स्वर्ग में प्रवेश पाने से कोई चीज़ नहीं रोक सकती सिवाय मृत्यु के"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ९८४८ में रिवायत किया है, तथा इब्ने ह़िब्बान, सुयूती एवं अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३०

६१- सुबह शाम दृढ़ विश्वास के साथ सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार: (اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي...) अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी... पढ़ना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: शद्दाद बिन औस रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि: "सय्यिदुल इस्तिग़ाफ़ार यह (जाप) है कि तू कहे: "اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لاَ إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ، وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي، فَإِنَّهُ لاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ" अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्ता खलक़तनी व अना अब्दुका, व अना अला अहदिका व वअदिका मसतात़अतु अऊज़ु बिका मिन शर्रि-मा स़नअतु अबूउ लका बि निअमतिका अलैया व अबूउ बि ज़ंबी फग़्फ़िर ली फ़इन्नहु ला यग़फ़िरुज़-ज़ुनूबा इल्ला अन्ता (अर्थात: ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है। तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है। तूने ही मेरी रचना की है और मैं तेरा बंदा हूँ। मैं तुझसे की हुई प्रतिज्ञा एवं वादे को हर संभव पूरा करने का प्रयत्न करूँगा। मैं अपने हर उस कुकृत्य से तेरी शरण में आता हूँ, जो मैंने किया है। मैं तेरी ओर से दी जाने वाली नेमतों (अनुग्रहों) का तथा अपनी ओर से किए जाने वाले पापों का इक़रार करता हूँ। तू मुझे माफ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा पापों को क्षमा करने वाला कोई नहीं है)", नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जिसने इस इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) पर दृढ़ विश्वास रखते हुए दिल की गहराई से इसे पढ़ा फिर शाम होने के पूर्व ही उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई तो वह स्वर्गवासी है तथा जिसने इस पर दृढ़ विश्वास रखते हुए रात के समय इन को पढ़ लिया, फिर सुबह होने के पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गई तो वह जन्नती है"। (इस ह़दीस़ को इमाम बुख़ारीः ६३०६ ने रिवायत किया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३१

६२- सह़्र (भोर होने से पहले) के समय इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करना

पुण्यः स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाणः ﴿إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ * آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ * كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ * وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ﴾ अनुवादः (वास्तव में आज्ञाकारी स्वर्गों तथा जल स्रोतों में होंगे। लेते हुये जो कुछ प्रदान किया है उनको उनके पालनहार ने, वस्तुतः वह इस से पहले (संसार में) सदाचारी थे। वह रात्रि में बहुत कम सोया करते थे। तथा भोरों में क्षमा माँगते थे)। सूरह ज़ारियातः १५-१८।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३२

६३- प्यासे जानवरों को पानी पिलाना

फ़ज़ीलतः स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाणः अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "एक व्यक्ति कुँआ के समीप हुआ, उसमें उतर कर अपनी प्यास बुझाई। तथा (बाहर निकला तो) क्या देखता है कि कुँआ के पास एक कुत्ता (प्यास से) हाँफ रहा है, उसको उस कुत्ते पर दया आ गई, उसने एक मोज़ा उतारा, उसमें पानी भरा तथा कुत्ते को पिलाया, अल्लाह ने उसका यह कर्म स्वीकार कर लिया तथा उसे जन्नत में प्रवेश दे दिया"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बानः ५४३ ने रिवायत किया है तथा इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३३

६४- (क़र्ज़) अदा करते एवं माँगते समय विनम्रता धारण करना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति इस कारण से जन्नत में दाख़िल हुआ कि वह (क़र्ज़, ऋण) अदा करते समय तथा माँगते समय दया भाव का प्रदर्शन करता था"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ७०८२ ने रिवायत किया है तथा अह़मद शाकिर ने इस को स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३४

६५- किसी प्रियजन की मृत्यु पर धैर्यपूर्वक रहना तथा पुण्य की आशा रखना

पुण्य: स्वर्ग में प्रवेश।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मेरे उस मोमिन भक्त के लिए मेरे पास जन्नत के सिवा और कोई बदला नहीं जिसके किसी प्रियजन को मैं संसार से उठा लूँ, तथा वह उस पर स़ब्र एवं धैर्य करे और पुण्य की आशा रखे"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६४२४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३५

६६- ह़या व लज्जा

पुण्य: जन्नत में प्रवेश।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ह़या (लज्जा) ईमान का अभिन्न अंग है तथा ईमान वाले जन्नत में जायेंगे"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १०६६१ तथा तिर्मिज़ी: २००९ ने रिवायत किया है एवं ज़ह्बी तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३६

६७- सूरह इख़्लास़ से प्रेम

पुण्य: जन्नत में प्रवेश।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि: "मस्जिद -ए- क़ुबा में एक अंस़ारी व्यक्ति उनकी इमामत करता था, तथा उसकी आदत यह थी कि जब भी वह इरादा करता कि कोई सूरह नमाज़ मे पढ़े तो उसे पढ़ता किंतु उस सूरह से पहले (सूरह इख्लास़, अर्थात: क़ुल हुवल्लाहु अह़द) पूरी पढ़ता, फिर उसके साथ कोई दूसरी सूरह पढ़ता, तथा यह कार्य वह प्रत्येक रक्अत में करता था"। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब इन लोगों के पास आए तो उन्होंने आप को सारी बात बताई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हे अमूक! तुम्हें क्या चीज़ विवश कर रही है कि प्रत्येक रक्अत में तुम इस सूरह को पढ़ो?", उन्होंने कहा: हे अल्लाह के रसूल! मैं इसे पसंद करता हूँ। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "इससे प्रेम करना तुम्हें जन्नत में ले जायेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २९०१ ने रिवायत किया है तथा इब्नुल अरबी एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३७

६८- दुखियारों से संवेदना प्रकट करना तथा उनको सांत्वना देना

पुण्य: क़यामत के दिन उसे सम्मान का वस्त्र धारण कराया जायेगा।

प्रमाण: मुहम्मद बिन अम्र बिन हज़्म रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो मोमिन अपने भाई को किसी दुःख पर सांत्वना देता है, अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन सम्मान का वस्त्र धारण करायेगा"। (इसे इब्ने माजह: १६०१ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे सहीह करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३८

६९- अल्लाह से तीन बार जन्नत माँगना

फ़ज़ीलत: जन्नत उसके लिए दुआ करती है कि उसे जन्नत में प्रवेश करा दिया जाये।

दलील: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो अल्लाह तआला से तीन बार जन्नत माँगता है तो जन्नत कहती है: ऐ अल्लाह! इसे जन्नत में दाख़िल कर दे"। (इस हदीस को तिर्मिज़ी: २५७२ तथा इब्ने माजह: ४३४० ने रिवायत किया है और सुयूती एवं अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २३९-२४४

७०-७५: इमाम (शासक) का न्यायप्रिय होना, अल्लाह की उपासना पर युवक की परवरिश (पालन), दिल का मस्जिद से जुड़े रहना, जिसे कोई सुंदर एवं सम्मानित महिला कुकर्म के लिए आमंत्रण दे तो उसका यह कहना कि: मैं अल्लाह से डरता हूँ, छुपा कर दान करना तथा एकांतावास में अल्लाह की याद में चक्षु से अश्रूधारा का बहने लगना

पुण्य: क़यामत के दिन छाया प्राप्त होगी।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "सात प्रकार के लोगों को अल्लाह तआला अपनी छाया में स्थान देगा जिस दिन उसकी छाया के सिवा कोई और छाया न होगी: न्यायप्रिय शासक, वह नवयुवक जो अपने रब की उपासना में परवान चढ़े, वह व्यक्ति जिसका दिल मस्जिदों में अटका रहता हो, वो दो व्यक्ति जो अल्लाह के लिए मित्रता करें, एकत्र हों तो उसके लिए ही तथा अलग हों तो भी उसी के लिए, वह व्यक्ति जिसे कोई सुंदर एवं सम्मानित महिला ने कुकर्म का आमंत्रण दिया तो उसने कहा: मैं अल्लाह से डरता हूँ, वह व्यक्ति जो इस प्रकार से छुपा कर स़दक़ा (दान) करे कि उसके बाएं हाथ को भी पता न चले कि उसका दायां हाथ क्या ख़र्च करता है और वह व्यक्ति जो एकांतावास में अल्लाह को याद करे तो (सहसा) उसके चक्षु से अश्रूधारा बहने लगे"। (स़हीह़ बुख़ारी: ६६० व मुस्लिम: १०३१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २४५

७६- अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी को आश्रय देना

पुण्य: क़यामत के दिन उसे छाया प्राप्त होगी।

प्रमाण: उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिसने अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले किसी ग़ाजी को आश्रय दिया, अल्लाह उसे क़यामत के दिन छाया प्रदान करेगा"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १२८ ने रिवायत किया है तथा शुऐब अरनऊत़ ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २४६

७७- न्याय प्रियता एवं इंसाफ

पुण्य: रह़मान (अल्लाह) के सामने मोती के मंचों पर आसीन होगा।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस़ रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "संसार में न्याय करने वाले लोग

क़यामत के दिन रह़मान के समक्ष मोती के मंचों पर आसीन होंगे, इस आधार पर कि उन्होंने संसार में न्याय स्थापित किया होगा"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः ६५६० ने रिवायत किया है तथा अह़मद शाकिर ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २४७

७८- किसी मुसलमान भाई से उस तरह भेंट करे जिस तरह अल्लाह को पसंद है ताकि उसे प्रसन्नता प्राप्त हो

फ़ज़ीलत: उसे क़यामत के दिन प्रसन्नता प्राप्त होगी।

दलील: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अपने मुसलमान भाई से उस प्रकार से भेंट करे जिस प्रकार से उसे पसंद हो ताकि उसे प्रसन्नता प्राप्त हो तो क़यामत के दिन अल्लाह उसे प्रसन्न कर देगा"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअज अल-स़ग़ीरः ११७८ में रिवायत किया है तथा इसे हैस़मी एवं दुम्याती और मुन्ज़िरी ने ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २४८

७९- पर्दा पोशी (किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करना)

फ़ज़ीलत: क़यामत के दिन उसकी पर्दा पोशी की जायेगी।

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "संसार में यदि कोई बंदा किसी (दूसरे) बंदे का दोष छुपाता है तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसके दोष छुपा लेगा"। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः २५९०)। अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करेगा तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसका पर्दा रखेगा"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः २४४२ व मुस्लिमः २५८०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २४९

८०- किसी भाई की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहना यहाँ तक कि वह पूरी हो जाये

पुण्य: जिस दिन पाँव लड़खड़ाएंगे उस दिन वह दृढ़ एवं स्थिर रहेगा, तथा यह कर्म मस्जिद -ए- नबवी में एक महीना तक एतकाफ़ करने से उत्तम है।

प्रमाण: इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "...मैं किसी भाई की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए उसके साथ चलूँ, यह मेरे निकट इस मस्जिद -अर्थात: मस्जिद -ए- नबवी- में एक महीना तक एतकाफ़ करने से अधिक प्रिय है, तथा जो व्यक्ति अपने भाई की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए प्रयास करे यहाँ तक कि वह पूरी हो जाये, अल्लाह तआला उसे उस दिन दृढ़ व स्थिर रखेगा जिस दिन पाँव लड़खड़ा रहे होंगे"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: १३६४६ में रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५०

८१- सोने के समय यह दुआ पढ़ना: «اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ...» अल्लाहुम्मा असलम्तु नफ़्सी इलैका...

पुण्य: फ़ित़रत (नैसर्गिकता) पर उसकी मृत्यु होगी।

प्रमाण: बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपने बिस्तर पर पधारते तो दाएं करवट लेट कर यह दुआ पढ़ते: «اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ، وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ، رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلَّا إِلَيْكَ، آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ، وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ» अल्लाहुम्मा असलम्तु नफ़्सी इलैका, व वज्जह्तु वज्ही इलैका, व फ़व्वज़्तु अम्री इलैका, व अलजअतु ज़ह्री इलैका, रग़बतन व रहबतन इलैका, ला मलजअ व ला मन्जा मिन्का इल्लाह इलैका, आमन्तु बिकिताबिका अल्लज़ी अन्ज़ल्ता व बिनब्बिय्यिका अल्लज़ी अरसलता (अर्थात: हे अल्लाह! मैंने अपने प्राण तेरे हवाले कर दिया तथा अपना मुख तेरी ओर आकर्षित कर दिया, अपना मामला तेरे हवाले कर दिया, और अपनी पीठ तेरी तरफ झुका दी, ये सब कुछ तेरा शौक़ रखते हुए तथा तुझ से डरते हुए किया, तेरे सिवा न कोई आश्रय है एवं न मुक्ति पाने का स्थान, मैं तेरी उस किताब पर ईमान लाया जो तूने उतारी

तथा तेरे उस नबी को मान लिया जिसे तूने भेजा)। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जो व्यक्ति यह कलेमात (वाक्य) पढ़े फिर इसी पर उसकी मृत्यु हो तो फ़तरत -ए- इस्लाम पर मरेगा"। (सहीह बुख़ारीः ६३१५ व मुस्लिमः २७१०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५१

८२- रमज़ान में उमरा करना

पुण्यः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ हज्ज करने अथवा केवल हज्ज करने का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाणः इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "रमज़ान में उमरा करना हज्ज करने के समान है"। एक रिवायत में यों है किः "मेरे साथ हज्ज करने के समान है"। (सहीह बुख़ारीः १८६३ व मुस्लिमः १२५६)।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "रमज़ान में उमरा करना हज्ज करने के बराबर है"। एक रिवायत में यों हैः "मेरे संग हज्ज करने के बराबर है"। (सहीह बुख़ारीः ७७२ व मुस्लिमः १२५६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५२

८३- फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करे फिर बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र (जाप) करता रहे यहाँ तक कि सूर्य उदय हो जाये, फिर दो रक्अत (नफ़्ल) अदा करे

पुण्यः हज्ज एवं उमरा का पुण्य प्राप्त होगा।

प्रमाणः अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिसने फ़ज्र की नमाज़ जमाअत (समूह) के संग पढ़ी फिर बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र करता रहा यहाँ तक कि सूरज निकल गया, फिर उसने दो रक्अतें पढ़ी, तो उसे एक हज्ज अथवा एक उमरा करने का पुण्य प्राप्त होगा", वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "पूरा, पूरा, पूरा, अर्थातः हज्ज एवं उमरा का पूरा सवाब व पुण्य"। (इस हदीस को तिर्मिज़ीः ५८६ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५३

८४- ख़ैर, भलाई व कल्याण की शिक्षा प्राप्त करने अथवा उसकी शिक्षा देने के लिए मस्जिद जाना

पुण्य: ह़ज्ज का पुण्य प्राप्त होगा।

प्रमाण: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति केवल इस उद्देश्य से मस्जिद जाए कि ख़ैर व भलाई की शिक्षा प्राप्त करे अथवा उसकी शिक्षा दे, तो उसे पूर्ण ह़ज्ज का पुण्य प्राप्त होगा"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: ७४७३ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५४

८५- ज़िलह़िज्जा महीना के आरंभिक दस दिनों में सद्कर्म करना

पुण्य: अल्लाह की राह में जिहाद करने से भी उत्तम है, सिवाय उस मुजाहिद के जो अपनी जान व माल दोनों लेकर अल्लाह की राह में निकला तथा फिर किसी चीज़ के साथ वापस नहीं लौटा।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ज़िलह़िज्जा के दस दिनों की तुलना में दूसरा कोई दिन ऐसा नहीं जिनमें नेक अमल (सद्कर्म) अल्लाह को इन दिनों से अधिक प्रिय हों"। अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना भी नहीं, सिवाय उस मुजाहिद के जो अपने प्राण तथा धन दोनों को लेकर अल्लाह के मार्ग में निकला, फिर किसी चीज़ के साथ वापस नहीं आया। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १९९३ एवं अबू दावूद: २४३८ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५५

८६- विधवा तथा निर्धन के लिए प्रयास करना

पुण्य: उसे अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने, सदा रोज़ा (उपवास) रखने एवं बिना आलस्य के तहज्जुद पढ़ने का पुण्य प्राप्त होता है

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "विधवाओं तथा निर्धनों के लिए प्रयास करने वाला अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले के समान है"। रावी (वर्णनकर्ता) का कहना है कि मेरा गुमान है कि उन्होंने कहा: "वह उस तहज्जुद पढ़ने वाले के समान है जो आलस्य नहीं दिखलाता तथा उस रोज़ेदार के समान है जो रोज़े नहीं छोड़ता"। (स़हीह़ बुख़ारी: ६००७ व मुस्लिम: २९८२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५६

८७- अल्लाह की राह में जंग करने वाले को इतना सामान दे कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत न रहे

पुण्य: अल्लाह की राह में जिहाद का स़वाब मिलेगा।

दलील: ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह के मार्ग में जंग करने वाले को उपकरणों से लैस किया तो (मानो) उसने भी जंग किया"। (स़हीह़ बुख़ारी: २८४३ व मुस्लिम: १८९५)।

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप फ़रमा रहे थे: "जिसने अल्लाह के मार्ग में जंग करने वाले को इतना सामान दिया कि उसे (जिहाद के संबंध में) किसी और चीज़ की आवश्यकता न रही, तो उसको उतना पुण्य प्राप्त होगा जितना उस मुजाहिद को शहादत अथवा वापसी तक मिलेगा"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १२८ एवं इब्ने माजह: २७५८ ने रिवायत किया है तथा शुऐब अल-अरनऊत़ ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५७

८८- अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले के पीछे उसके घर (वालों) की अच्छे ढ़ंग से निगरानी करना

पुण्य: अल्लाह की राह में जिहाद करने वालों के समान पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले के पीछे उसके घर की अच्छे ढ़ंग से देख-भाल करने तो मानो उसने स्वयं जिहाद किया"। (स़हीह़ बुख़ारी: २८४३ व मुस्लिम: १८९५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५८

८९- प्रत्येक महीने में तीन दिन रोज़ा रखना

पुण्य: पूरे वर्ष रोज़ा रखने का पुण्य प्राप्त होता है तथा स़वाब व पुण्य दस गुणा बढ़ जाता है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे कमरे में पधारे तथा कहने लगे: "तेरे लिए इतना पर्याप्त है कि प्रत्येक महीने तीन रोज़े रख लिया करो। यह (पुण्य के आधार पर) ज़माने भर के रोज़ों के बराबर हो जायेंगे"। (स़हीह़ बुख़ारी: ६१३४ व मुस्लिम: ३४१८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २५९

९०- रमज़ान के रोज़े के बाद शव्वाल के छ: रोज़े रखना

पुण्य: पूरे वर्ष का रोज़ा रखने का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू अय्यूब अंस़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने रमज़ान के रोज़े रखे, फिर उसके बाद शव्वाल के छ: रोज़े रखे तो यह (साल भर) निरंतर रोज़ा रखने के समान है"। (स़हीह़ मुस्लिम: ११६४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६०

९१- जुमुआ के दिन स्वच्छता व पवित्रता के पश्चात स्नान करना, जल्द से जल्द (मस्जिद की ओर) चल कर जाना तथा इमाम के निकट बैठ कर ध्यान से ख़ुत्बा (भाषण) सुनना एवं व्यर्थ कार्य न करना

पुण्य: एक वर्ष रोज़ा रखने तथा एक वर्ष क़याम (नमाज़ पढ़ने) का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: औस बिन औस स़क़फ़ी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुनाः "जिसने पवित्रता अपनाया अथवा स्नान किया, फिर सवेरे चल कर (मस्जिद) गया तथा सवारी पर सवार नहीं हुआ, तत्पश्चात इमाम के निकट बैठा एवं ध्यान से (ख़ुत्बा) सुना एवं व्यर्थ कार्य नहीं किया, तो उसे एक वर्ष रोज़ा रखने एवं क़याम करने का पुण्य प्राप्त होता है"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः १६४२६ तथा अबू दावूदः ३५४ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६१

९२- रोज़ेदार को इफ़्तार कराना

फ़ज़ीलत: रोज़े का पुण्य प्राप्त होता है।

दलील: ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "जिसने किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराया तो उसे भी उसके समान स़वाब प्राप्त होगा, तथा रोज़ेदार के स़वाब में कुछ भी कमी नहीं होगी"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः ८०७ ने रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६२

९३- सौ बार सुब्ह़ानल्लाह पढ़ना

फ़ज़ीलत: एक सौ मुस्लिम दास स्वतंत्र करने तथा एक हज़ार नेकी करने का पुण्य प्राप्त होता है।

दलील: उम्मे हानी बिन्ते अबी त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सौ बार सुब्हानल्लाह पढ़ो, क्योंकि यह कर्म इस्माईल की संतान में से सौ दास स्वतंत्र करने के बराबर है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २७५५३ एवं नसई ने अल-कुब्रा: १०६१३ में रिवायत किया है)।

सअद बिन अबी वक़्क़ास़ रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: हम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित थे कि आपने फ़रमाया: "क्या वास्तव में तुम में से कोई व्यक्ति इस बात से विवश है कि हर रोज़ एक हज़ार नेकियां कमाए?" आपके साथ बैठे हुए लोगों में से एक ने पूछा: हम में से कोई व्यक्ति एक हज़ार नेकियां कैसे कमा सकता है? तो आपने फ़रमाया: "वह सौ बार सुब्हानल्लाह कहे, उसके लिए हज़ार नेकियां लिख दी जायेंगी तथा उसके सौ पाप मिटा दिये जायेंगे"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २६९८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६३

९४- सौ बार यह दुआ पढ़ना: «لاَ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» **ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर)**

पुण्य: दस गुलामों को आज़ाद करने का पुण्य प्राप्त होता है, यह ज़िक्र आकाश एवं धरा के बीच के रिक्त स्थान को (स़वाब) से भर देता है, तथा सौ नेकियां (उसके लिए) लिखी जाती हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति दिन भर में यह दुआ सौ बार पढ़ेगा: «لاَ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, समस्त प्रशंसा उसी के लिए है तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है), उसे दस दासों को स्वतंत्र करने का पुण्य प्राप्त होगा एवं सौ नेकियां उसके नामा -ए-आमाल (कर्म-पत्र) में लिखी जायेंगी"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ३२९३ व मुस्लिम: २६९१)।

उम्मे हानी बिन्त अबी त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सौ बार "ला इलाहा इल्लल्लाह", कहा कर, यह ज़िक्र आकाश एवं धरा के बीच के रिक्त स्थान को (पुण्य) से भर देगा, एवं उस दिन (उस कर्म की तुलना में) किसी का कोई कर्म नहीं होगा जो आकाश की ओर बुलंद हो सिवाय उस व्यक्ति के कर्म जो तेरे समान ही कर्म करे"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २७५५३ एवं नसई ने अल-कुब्रा: १०६१३ में रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६४

९५- दस बार यह दुआ पढ़ना: «لاَ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ...» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ...

पुण्य: चार मुसलमान दास को स्वतंत्र करने का पुण्य प्राप्त होगा।

प्रमाण: अम्र बिन मैमून से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने दस बार «لاَ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर (अर्थात: अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अद्वैत तथा अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है, समस्त प्रशंसा उसी के लिए है तथा वह प्रत्येक चीज़ करने में समर्थ है) पढ़ा, तो वह उस व्यक्ति के समान होगा जिसने इस्माईल अलैहिस्सलाम के वंश से चार दासों को स्वतंत्र किया हो"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६४०४ व मुस्लिम: २६९३, तथा उपरोक्त शब्द मुस्लिम द्वारा वर्णित हैं)।"।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६५

९६- सात बार काबा का त़वाफ़ (परिक्रमा) करना तथा दो रक्अत नफ़्ल पढ़ना

पुण्य: एक ग़ुलाम को आजाद करने का पुण्य प्राप्त होता है तथा हरेक क़दम पर एक नेकी लिखी जाती है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने इस घर का त़वाफ़ सात बार किया तथा उसे गिना तो यह ऐसे ही है मानो उसने एक दास स्वतंत्र किया"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ९५९ एवं अह़मद: ४५४८ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने स़ह़ीह़ कहा है)।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है, वह कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़रमान सुना: "जो व्यक्ति बैतुल्लाह (काबा) का त़वाफ़ करे तथा दो रक्अत नमाज़ पढ़े, (उसका) यह कर्म एक आदमी स्वतंत्र करने के समान है"। (इस ह़दीस़ को इब्ने माजह: २९५६ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिसने इस घर का त़वाफ़ (परिक्रमा) सात बार किया तथा उसे गिना, तो यह ऐसे ही है मानो उसने एक ग़ुलाम आज़ाद किया। वह जितने भी पग रखे एवं उठायेगा तो अल्लाह तआला हरेक के बदले उसकी एक गलती माफ करेगा तथा एक नेकी लिखेगा एवं एक दर्जा बुलंद करेगा"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ४५४८, इब्ने ह़िब्बान: ३६९६ एवं तिर्मिज़ी: ९५९ ने रिवायत किया है और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है, तथा उपरोक्त शब्द इब्ने ह़िब्बान द्वारा वर्णित हैं)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६६-२६८

९७-९९: दुग्ध दान करना, धन क़र्ज़ देना तथा मार्गदर्शन करना

पुण्य: एक दास स्वतंत्र करने का पुण्य प्राप्त होता है।

दलील: बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिस व्यक्ति ने दुग्ध का दान दिया अथा चाँदी क़र्ज़ दिया या किसी को रास्ता बताया, तो उसे ग़ुलाम आज़ाद करने का पुण्य प्राप्त होगा"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १८८१० तथा तिर्मिज़ी: १९५७ ने रिवायत किया है एवं उपरोक्त शब्द तिर्मिज़ी द्वारा वर्णित हैं, और अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २६९

१००- सौ बार «الحمد لله» अल्ह़म्दुलिल्लाह का जाप करना

पुण्य: सौ ज़ीन (१०० काठी) समेत तैयार एवं लगाम लगे हुए घोड़ों को अल्लाह के मार्ग में दान करने का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: उम्मे हानी बिन्त अबी त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बयान करती हैं कि आपने फ़रमाया: "सौ बार «الحمد لله» अल्ह़म्दुलिल्लाह, कहा कर, यह जाप तेरे लिए उन सौ ज़ीन समेत तैयार एवं लगाम लगाए हुए घोड़ों से उत्तम है, जिनको तू अल्लाह के मार्ग में दान करे"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २७५५३ एवं नसई ने अल-कुब्रा: १०६१३ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी २७०

१०१- यह दुआ पढ़ना: «...الْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ» अल्हम्दुलिल्लाहि अददा मा ख़लक़ा..., इसी तरह अल्लाह की पवित्रता का बखान करना

फ़ज़ीलत: दिन रात के निरंतर जाप से उत्तम है।

दलील: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अपने होंठों को हिलाते हुए देखा तो आपने पूछा: "हे अबू उमामा! तुम क्या पढ़ रहे हो? मैंने कहा: अल्लाह का ज़िक्र (जाप) कर रहा हूँ। आपने फ़रमाया: क्या मैं तुझे दिन रात के निरंतर जाप से उत्तम जाप न बताऊँ? तू इस प्रकार से जाप किया कर: «الْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِلْءَ مَا خَلَقَ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا أَحْصَى كِتَابُهُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِلْءَ مَا أَحْصَى كِتَابُهُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ كُلِّ شَيْءٍ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ مِلْءَ كُلِّ شَيْءٍ», अल्हम्दुलिल्लाहि अददा मा ख़लक़ा, वल्हम्दुलिल्लाहि मिल्आ मा ख़लक़, वल्हम्दुलिल्लाहि अददा मा फ़िस्समावाति वमा फ़िल अर्ज़ि, वल्हम्दुलिल्लाहि अददा मा अह्सा किताबुहु, वल्हम्दुलिल्लाहि मिल्आ मा अह्सा किताबुहु, वल्हम्दुलिल्लाहि अददा कुल्लि शैइन, वल्हम्दुलिल्लाहि मिल्आ कुल्लि शैइन, (अर्थात: अल्लाह के लिए प्रशंसा है उसकी रचना की गिनती के बराबर, अल्लाह का स्तुतिगान है उतना जिससे उसकी सृष्टि भर जाएं, अल्लाह की प्रशंसा है उन चीज़ों की गिनती के बराबर जो आकाश एवं धरा में हैं, अल्लाह की प्रशंसा है उन वस्तुओं की गिनती के बराबर जिनको उसने अपनी किताब में शुमार किया है, अल्लाह की प्रशंसा व तारीफ है हर चीज़ की गिनती के समान तथा उसकी प्रशंसा है उतनी जितनी से हर चीज़ भर जाये), फिर तू इसी प्रकार से अल्लाह की पवित्रता का बखान करे (अर्थात: दुआ में (अल्हम्दुलिल्लाह के स्थान पर सुब्हानल्लाह लाग कर दुआ को मुकम्मल करे)"। फिर फ़रमाया: "अपने बाद वालों को भी इसकी शिक्षा दो"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२५७३, नसई ने अल-कुब्रा: ९९२१ तथा त़बरानी: ७९५६ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७१

१०२- तीन बार यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ» सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, अददा ख़ल्क़िहि, व रिज़ा नफ़्सिहि, व ज़िनता अर्शिहि व मिदादि कलिमातिहि

फ़ज़ीलत: यदि बहुतेरे ज़िक्रों (जापों) के साथ इन कलेमात (वाक्यों) को तौला जाए तो ये कलेमात वज़न में बढ़ जायेंगे।

दलील: जुवैरियह रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह की नमाज़ पढ़ने के पश्चात उनके यहाँ बाहर से पधारे, उस समय वह अपनी नमाज़ पढ़ने वाले स्थान में थीं, फिर दिन चढ़ने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वापस उनके पास आए तो वह (उसी तरह) बैठी हुई थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारे (यहाँ से जाने के) बाद मैंने चार कलेमा को तीन बार कहा है, यदि उनको उनके साथ तौला जाये जो तुमने आज के दिन अब तक कहा है तो यह उन से वज़न में बढ़ जायेंगे: «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ» सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, अददा ख़ल्क़िहि, व रिज़ा नफ़्सिहि, व ज़िनता अर्शिहि व मिदादि कलिमातिहि, (अर्थात: पवित्रता है अल्लाह की उसकी प्रशंसा के साथ, जितनी उसकी सृष्टि की गिनती है तथा जितनी उसको पसंद है और जितना उसके अर्श (सिंहासन) का वज़न एवं जितनी उसके कलेमात की स्याही है"। (सहीह मुस्लिम: २७२६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७२

१०३- «لا حول و لا قوة إلا بالله» ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि, पढ़ना

पुण्य: यह जन्नत के कोषों में से एक कोष (ख़ज़ाना) है।

प्रमाण: अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलेमा न बताऊँ जो जन्नत के कोषों में से एक कोष है?" मैंने कहा: अवश्य। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम «لا حول و لا قوة إلا بالله» ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि, का जाप करो, क्योंकि यह स्वर्ग के कोषों में से एक कोष है"। (सहीह बुख़ारी: ६३८४ व मुस्लिम: २७०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७३

१०४- एक नमाज़ के पश्चात दूसरी नमाज़ पढ़ना, इस प्रकार से कि उनके मध्य कोई व्यर्थ कार्य न करे

फ़ज़ीलत: यह अमल (कर्म) इल्लिय्यीन में लिखा जाता है।

दलील: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक नमाज़ के पश्चात दूसरी नमाज़, इस प्रकार से (अदा करना) कि उनके मध्य कोई व्यर्थ कार्य न हो (ऐसा करने से उसका) *इल्लिय्यीन में नाम लिखा जाता है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२७३५ एवं अबू दावूद: १२८८ ने रिवायत किया है, तथा शुऐब अल-अरनऊत़ ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

*(इल्लिय्यीन) के दो अर्थ हैं: एक वह किताब जिसमें फ़रिश्तों तथा मोमिन इन्सान एवं जिन्नता (मानव तथा दानव) के कर्म लिखे जाते हैं, तथा दूसरा अर्थ यह है कि: वह अर्श के नीचे सातवें आसमान पर एक स्थान है।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७४

१०५- सच्चे दिल से अल्लाह के समक्ष शहादत की दुआ करना

फ़ज़ीलत: उसे अल्लाह के मार्ग में शहादत प्राप्त करने का स़वाब मिलता है।

दलील: सह्ल बिन हुनैफ़ अपने पिता के वास्ते से अपने दादा से रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति सच्चे हृदय से अल्लाह से शहादत माँगे, अल्लाह उसे शुहदा (बलिदानियों) की श्रेणी तक पहुँचा देता है, चाहे वह अपने बिस्तर पर ही क्यों न मरा हो"। अबू त़ाहिर ने अपनी ह़दीस़ में "सच्चे (हृदय)" का शब्द नहीं रिवायत किया है। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: १९०९)।

अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने सच्चे दिल से शहादत की दुआ की, उसे प्रदान कर दिया जाता है (अर्थात: उसका पुण्य दिया जाता है) यद्यपि वास्तव में वह उसे प्राप्त न हो सके"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: १९०८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७५

१०६- नफ़्ली नमाज़ अथवा चाश्त की नमाज़ के लिए निकले तथा उसका उद्देश्य केवल यही नमाज़ हो

फ़ज़ीलत: उमरा करने का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति नफ़्ली नमाज़ के लिए चल कर जाए तो वह (नमाज़ पुण्य के आधार पर) पूर्ण उमरा के समान है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२७३५ तथा अबू दावूद: ५५८ ने रिवायत किया है एवं उपरोक्त शब्द अबू दावूद द्वारा वर्णित हैं, तथा अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति चाश्त की नमाज़ के लिए निकले तथा उस कठिनाई उठाने अथवा उठ खड़े होने का उद्देश्य केवल यही नमाज़ हो तो ऐसे व्यक्ति का पुण्य उमरा करने वाले के समान है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २२७३५ तथा अबू दावूद: ५५८ ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द अबू दावूद द्वारा वर्णित हैं, एवं इसे अलबानी ने ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७६

१०७- मस्जिद -ए- क़ुबा में नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: उमरा का पुण्य प्राप्त होता है।

दलील: सह्ल बिन ह़नीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो आदमी (घर से) निकला यहाँ तक कि इस मस्जिद, अर्थात: मस्जिद -ए- क़ुबा आया एवं उसमें नमाज़ पढ़ी तो उसे एक उमरा का पुण्य प्राप्त होगा"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: ७८० में रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७७

१०८- सौ (१००) बार अल्लाहु अकबर कहना

पुण्य: अल्लाह तआला के यहाँ स्वीकृत हार पहनाई गई सौ ऊँटनियों से भी उत्तम है।

प्रमाण: उम्मे हानी बिन्त अबी त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सौ बार अल्लाहु अकबर, कहा करो, यह ज़िक्र (जाप) तेरे लिए अल्लाह तआला के यहाँ स्वीकृत हार पहनाई गई सौ ऊँटनियों से भ उत्तम है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २८०३६ एवं नसई ने अल-कुब्रा: १०६१३ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७८

१०९- भलाई का आदेश एवं हिदायत (मार्गदर्शन) का आमंत्रण देना

पुण्य: स़दक़ा (दान) का स़वाब तथा उसका अनुसरण करने वालों के समान पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "...तथा भलाई का आदेश देना स़दक़ा है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ७२०)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस व्यक्ति ने हिदायत की दावत दी, उसे उस हिदायत का अनुसरण करने वालों के पुण्य के समान पुण्य मिलेगा तथा उन (सभों) के पुण्य में कोई कमी नहीं होगी"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २६७४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २७९

११०- बुराई से रोकना

फ़ज़ीलत: स़दक़ा का पुण्य प्राप्त होता है।

दलील: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "...एवं बुराई से रोकना स़दक़ा है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ७२०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८०-२८१

१११-११२: सवारी में किसी की सहायता करना, उसे सहारा देकर उसकी सवारी पर सवार करा देना अथवा उसका सामान उठा कर उस पर रख देना

पुण्य: दान का प्रतिफल प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह नबी -ए- अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमायाः "प्रत्येक दिन मानव के हर जोड़ पर स़दक़ा (दान) अनिवार्य है। यदि कोई व्यक्ति किसी की सवारी में सहायता करे, वह इस प्रकार से कि उसकी सवारी पर सवार करा दे अथवा उसका सामान उठा कर उस पर रख दे तो यह भी स़दक़ा है। किसी से भली बात करना एवं नमाज़ के लिए हर क़दम उठाना भी स़दक़ा है। तथा किसी को रास्ता बता देना भी स़दक़ा है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारीः २८९१ व मुस्लिमः १००९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८२

११३- दो रक्अत चाशत की नमाज़ अदा करना

फ़ज़ीलत: (मानवीय शरीर के) प्रत्येक जोड़ के बदले स़दक़ा करने का पुण्य प्राप्त होता है।

दलील: अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत किया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "सुबह को तुम में से प्रत्येक व्यक्ति के हर जोड़ पर एक स़दक़ा होता है", यहाँ तक कि आपने फ़रमायाः "तथा उन तमाम चीज़ों के स्थान पर दो रक्अतें जो आदमी चाश्त के समय पढ़ता है, पर्याप्त हो जाती हैं"। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः ७२०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८३

११४- क़र्ज़ (ऋण)

फ़ज़ीलत: आधा स़दक़ा करने का पुण्य मिलता है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "क़र्ज़ आधा स़दक़ा (दान) करने के समान होता है"। (इस ह़दीस़ को अह़मदः ३९८८ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८४-२८५

११५-११६: फ़ज्र तथा इशा की नमाज़ जमाअत (समूह) के संग अदा करना

फ़ज़ीलत: रात में क़याम करने (नमाज़ पढ़ने) का सवाब मिलता है।

दलील: उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जिसने इशा की नमाज़ जमाअत के संग अदा की तो मानो उसने आधी रात का क़याम किया एवं जिसने सुबह की नमाज़ (भी) जमाअत के साथ पढ़ी मानो उसने सारी रात नमाज़ पढ़ी"। (सहीह मुस्लिम: ६५६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८६

११७- मस्जिद -ए- हराम में नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: एक लाख नमाज़ से उत्तम है।

दलील: उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "मस्जिद -ए- हराम में एक नमाज़ पढ़ना किसी दूसरी मस्जिद की एक लाख नमाज़ से उत्तम है"। (इस हदीस को अहमद: १४९२० एवं इब्ने माजह: १४०६ ने रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसको सहीह करारि दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८७

११८- मस्जिद -ए- नबवी में नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: एक हज़ार नमाज़ से उत्तम है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मेरी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना, मस्जिद -ए- हराम के सिवा, किसी भी मस्जिद की हज़ार नमाज़ों से उत्तम है"। (सहीह बुख़ारी: ११९० व मुस्लिम: १३९४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८८

११९- समूह में अथवा इमाम के साथ जमाअत के संग नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: सत्ताईस गुना अधिक पुण्य मिलता है तथा पच्चीस गुना अधिक उत्तम है।

दलील: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना, अकेले व्यक्ति की नमाज़ से सत्ताईस गुना अधिक उत्तम है"। (स़हीह़ बुख़ारी: ६४५ व मुस्लिम: ६५०)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "इमाम के साथ (पढ़ी गई) नमाज़, ऐसी पच्चीस नमाज़ों से उत्तम है जो आदमी अकेले पढ़ता है"। (स़हीह़ बुख़ारी: ६४८ व मुस्लिम: ६४९)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम में से किसी का एक जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना उसके बाज़ार एवं घर में नमाज़ पढ़ने से बीस से अधिक दर्जा अधिक पुण्य का कारण है"। (स़हीह़ बुख़ारी: २११९ व मुस्लिम: ६४९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २८९

१२०- लोगों की दृष्टि से दूर हो कर तथा घर के अंदर (नफ़्ल) नमाज़ अदा करना

फ़ज़ीलत: पच्चीस गुना अधिक स़वाब (पुण्य) मिलता है तथा उसकी फ़ज़ीलत वही है जो फ़र्ज़ की नफ़्ल पर है।

दलील: स़ुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "आदमी का ऐसे स्थान पर नफ़्ल पढ़ना जहाँ कोई न देख रहा हो, लोगों के सामने नमाज़ पढ़ने से पच्चीस दर्जा बेहतर है"। (इस ह़दीस़ को अबू यअला ने रिवायत किया है जैसाकि इब्ने ह़जर की "अल-मत़ालिब अल-आलियह: ५७४" में है, तथा अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

स़ुहैब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "आदमी का घर में नफ़्ली नमाज़ पढ़ने की फ़ज़ीलत लोगों के पास पढ़ने की तुलना में इतनी अधिक है जितनी कि (नफ़्ल) नमाज़ की तुलना में फ़र्ज़ नमाज़ की है"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-कबीर: ७३२२ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९०

१२१- क़ुरआन के एक ह़र्फ़ (अक्षर) की तिलावत (पाठ)

फ़ज़ीलत: यह एक ऐसी नेकी (सद्कर्म) है, जिसका दस गुना पुण्य मिलता है, तथा क़ुरआन उसके लिए सिफ़ारिश करेगा।

दलील: अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने अल्लाह की किताब (क़ुरआन) का एक अक्षर पढ़ा उसे उसके बदले एक नेकी मिलेगा, तथा एक नेकी दस गुना बढ़ा कर दी जायेगी, मैं नहीं कहता कि ﴿الٓمٓ﴾ अलिफ़ लाम मीम, एक अक्षर है, अपितु अलिफ़ एक अक्षर है, लाम एक अक्षर है तथा मीम एक अक्षर है"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २९१० ने रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "क़ुरआन पढ़ा करो क्योंकि यह क़यामत के दिन क़ुरआन पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिश करने वाला बन कर आयेगा"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ८०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९१

१२२- अज़ान का उत्तर देने के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना

फ़ज़ीलत: दस गुना प्रतिफल मिलता है।

दलील: अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जब तुम मुअज़्ज़िन को (अज़ान देते) सुनो तो उसी प्रकार से कहो जिस प्रकार से वह कहता है, फिर मुझ पर दुरूद भेजो, क्योंकि जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उसके बदले में उस पर दस रह़मत (दया, कृपा) उतारता है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ३८४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९२

१२३- क़ुर्बानी (का पशु) ज़ब्ह़ करना

पुण्य: क़यामत के दिन उसे तराज़ू में सत्तर गुना (बढ़ा कर) रखा जायेगा।

प्रमाण: अली बिन अबी त़ालिब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़ात़िमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया: ""हे फ़ात़िमा! जाओ अपनी क़ुर्बानी के पशु को (ज़ब्ह़ होते हुए) देखो, क्योंकि उसके रक्त की जो पहली बूँद गिरेगी उसके साथ ही तुम्हारे समस्त पाप क्षमा हो जायेंगे, उसे क़यामत के दिन रक्त एवं मांस के साथ सत्तर गुना बढ़ा कर लाया जायेगा तथा तुम्हारे तराज़ू में रख दिया जायेगा"। अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: हे अल्लाह के रसूल! क्या यह केवल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार वालों के लिए ख़ास व आरक्षित है, तथा जो विशेष प्रधानता उन्हें प्रदान किया जाता है वो उसके योग्य हैं, अथवा यह मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार वालों के साथ-साथ समस्त लोगों के लिए आम है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बल्कि यह मुह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के परिवार वालों के साथ सभी लोगों के लिए आम है"। (इस ह़दीस़ को बैहक़ी ने अल-कुब्रा: १९२२७ में रिवायत किया है एवं सुयूती ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९३

१२४- यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ»

सुब्ह़ानल्लाहिल अज़ीम, सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि

पुण्य: क़यामत के दिन मीज़ान (तुला, तराज़ू) में (यह कर्म) अत्यंत भारी होगा।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दो कलेमा (वाक्य) ऐसे हैं जो ज़ुबान पर अत्यंत हल्के-फुल्के, मीज़ान (तराज़ू, तुला) में अत्यंत भारी तथा रह़मान (अल्लाह) को अत्याधिक प्रिय हैं, वह: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्ह़ानल्लाहिल अज़ीम, सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि, है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६४०६ व मुस्लिम: २६९४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९४

१२५- स़ब्र एवं धैर्य करना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला इसके बदले असंख्य पुण्य एवं प्रतिफल से अनुगृहीत करता है।

दलील: {إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ} अनुवाद: (स़ब्र करने वालों ही को उनका पूरा-पूरा बेहिसाब (असंख्य) पुण्य दिया जाता है)। सूरह ज़ुमर: १०।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९५

१२६- समस्त मोमिन पुरुषों एवं महिलाओं के लिए मग़फ़िरत की दुआ (क्षमा याचना) करना

फ़ज़ीलत: प्रत्येक मोमिन पुरुष एवं महिला के बदले उसे एक नेकी मिलती है।

दलील: उबादा बिन स़ामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति सभी मोमिन पुरुषों एवं महिलाओं के लिए मग़फ़िरत की दुआ करेगा, अल्लाह तआला उसके लिए प्रत्येक मोमिन पुरुष एवं महिला के बदले एक नेकी लिखेगा"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने "मुस्नद अल-शामिय्यीन" (३/ २३४) में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे ह़सन करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९६-२९७

१२७-१२८: जनाज़ा में सम्मिलित होना वह इस प्रकार से कि उसके साथ जाए, जनाज़ा की नमाज़ पढ़े तथा दफ़न होने तक उसके पीछे-पीछे रहे, या जनाज़ा की नमाज़ पढ़ कर वापस हो जाये

फ़जीलत: जनाज़ा की नमाज़ पढ़ने एवं पीछे-पीछे जाने पर दो क़ीरात़ पुण्य मिलता है तथा केवल जनाज़ा की नमाज़ पढ़ कर लौट जाने पर एक क़ीरात़ पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति जनाज़ा में शामिल हुआ यहाँ तक कि जनाज़ा की नमाज़ पढ़ा तो उसके लिए एक क़ीरात का पुण्य है। तथा जो कोई जनाज़ा में उसके दफ़न होने तक शामिल रहा उसे दो क़ीरात का पुण्य मिलता है", पूछा गया: यह दो क़ीरात क्या हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दो बड़े पहाड़ो के समान हैं"। (सहीह बुख़ारी: १३२५ व मुस्लिम: ९४५)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति किसी मुसलमान के जनाज़ा के साथ जाए तथा नमाज़ एवं दफ़न से फ़ारिग़ होने तक उसके साथ रहे तो वह दो क़ीरात पुण्य लेकर वापस लौटता है। प्रत्येक क़ीरात उहुद पहाड़ के समान है। तथा जो व्यक्ति जनाज़ा पढ़ कर दफ़न के पूर्व लौट आए तो वह उहुद पहाड़ के बराबर पुण्य लेकर लौटता है"। (सहीह बुख़ारी: १३२५ व मुस्लिम: ९४५)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९८

१२९- ऐसी दुआ करना जिसमें पाप तथा संबंध तोड़ने की बात न हो

पुण्य: उसके लिए आख़िरत में सवाब व पुण्य का ज़ख़ीरा (संग्रहण) कर दिया जाता है।

प्रमाण: अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो मुसलमान भी कोई ऐसी दुआ करता है जिसमें कोई पाप करने की अथवा संबंध तोड़ने की बात नहीं होती है तो अल्लाह तआला तीन में से किसी एक तरीके से उसकी वह दुआ अवश्य स्वीकार करता है: या तो उसकी वह दुआ संसार में ही स्वीकार कर ली जाती है, अथवा आख़िरत (परलोक) के लिए उसे संग्रहित कर दिया जाता है, या उसी के समान कोई विपदा एवं संकट उससे टाल दिया जाता है। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: तब तो हम अधिकाधिक दुआ करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह सर्वाधिक (दुआ को स्वीकार) करने वाला है"। (इस हदीस को अहमद: १३०२ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे सहीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी २९९

१३०- अच्छा तरीका को रिवाज देना

फ़ज़ीलत: उस को (अपना भी) पुण्य मिलता है तथा उस पर अमल करने वालों के पुण्य के समान पुण्य भी मिलता है।

प्रमाण: जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने इस्लाम में किसी अच्छे तरीका को रिवाज दिया तो उसके लिए उसका (अपना भी) पुण्य है तथा उनके जैसा पुण्य भी जिन्होंने उसके बाद उस (तरीका) का अनुपालन किया, इसके बिना कि उन (दोनों) के पुण्य में कोई कमी हो"। (स़हीह़ मुस्लिम: १०१७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३००

१३१- नेक काम (सद्कर्म) की निय्यत

फ़ज़ीलत: उस काम का पुण्य उसे मिल जाता है।

प्रमाण: अबू कब्शा अन्मारी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "एक व्यक्ति को अल्लाह ने धन-सम्पदा एवं ज्ञान से अनुगृहीत किया, वह अपने धन में ज्ञान के अनुसार कार्य करता है उसे वैध स्थान पर ख़र्च करता है। एक (दूसरा) आदमी वह है जिसे अल्लाह ने इल्म (ज्ञान) दिया परंतु धन नहीं दिया। वह कहता है कि: यदि मेरे पास भी इस व्यक्ति के समान (धन) होता तो मैं भी उस (धन) में से ऐसे-ऐसे (परोप) कार्य करता, जैसे यह (सदाचारी धनवान) अंजाम देता है", रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "पुण्य में यो दोनों एक समान हैं"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १८३०९ तथा इब्ने माजह: ४२२८ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०१

१३२- अज़ान के समय उपस्थित रहना तथा प्रथम पंक्ति में नमाज़ पढ़ना

फ़ज़ीलत: इतना अधिक पुण्य है कि यदि इसे पाने के लिए क़ुरआ करना (लॉटरी निकालनी) पड़े तो भी सही है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यदि लोगों को पता चल जाये कि अज़ान एवं प्रथम पंक्ति में क्या पुण्य (निहित) है, फिर वह अपने लिए क़ुरआ डालने के सिवा कोई उपाय न पाएं तो अवश्य क़ुरआ करें"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६५२ व मुस्लिम: ४३७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०२-३०३

१३३-१३४: छिपकली को पहले वार में मार देना, तथा दूसरे वार में और तीसरे वार में

पुण्य: पहले वार में (मारने पर) सौ नेकियां लिखी जाती हैं, दूसरे वार में उससे कम तथा तीसरे वार में उससे कम।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिसने छिपकली को प्रथम वार में मार दिया उसके लिए सौ नेकियां (पुण्य) लिखी जायेंगी, द्वितीय वार में (मारने पर) उससे कम तथा तृतीय वार में (मारने पर) उससे कम"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २२४०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०४-३०६

१३५-१३७: (अस्सलामु अलैकुम व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहु), (अस्सलामु अलैकुम व रह़मतुल्लाहि) तथा (अस्सलामु अलैकुम), कहना

फ़ज़ीलत: तीस नेकी (पुण्य), बीस नेकी, दस नेकी लिखी जाती है।

प्रमाण: इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि एक व्यक्ति नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तथा कहा: (अस्सलामु अलैकुम), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके सलाम का उत्तर दिया तथा वह बैठ गया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "दस"। फिर दूसरा व्यक्ति आया तथा उसने कहा: (अस्सलामु अलैकुम व रह़मतुल्लाहि), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका उत्तर दिया तथा वह बैठ गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "बीस"। इसके पश्चात एक और व्यक्ति आया तो उसने कहा: (अस्सलामु अलैकुम व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहु), आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका उत्तर दिया तथा वह बैठ गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तीस"। (इसस ह़दीस़ को अह़मद: २०२६७), अबू दावूद: ५१९५ तथा तिर्मिज़ी: ६६८९ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०७

१३८- अल्लाह के रास्ते (ईश्वरीय पथ) में सीमा की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना

पुण्य: उसका अमल (कर्म) क़यामत तक बढ़ता रहेगा तथा (उसका पुण्य) निरंतर जारी रहेगा।

प्रमाण: फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "प्रत्येक मृतक के कर्म का सिलसिला समाप्त कर दिया जाता है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह के रास्ते में सीमा की रक्षा करते हुए मारा जाए, तो उसका अमल (कर्म) क़यामत तक के लिए बढ़ाया जाता रहेगा"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २४५८४ , अबू दावूद: २५०० तथा तिर्मिज़ी:१६२१ ने रिवायत किया है और इब्नुल अरबी एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मृत्यु के पश्चात प्रत्येक कर्म का सिलसिला बंद कर दिया जाता है, सिवाय उस व्यक्ति के जो अल्लाह के मार्ग में सीमा रक्षा करते हुए मरे, तो उसका कर्म क़यामत तक बढ़ाया जाता रहेगा एवं क़यामत तक उसका रिज़्क़ (आजीविका) निरंतर जारी रहेगा"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: ६४१ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है वह कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "जो व्यक्ति इस स्थिति में (अल्लाह के मार्ग में पहरा देते हुए) मर गया तो वह क़ब्र के अज़ाब से सुरक्षित रहेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: १६६५ ने रिवायत किया है, तथा अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ करार दिया है)।

सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "यदि वह सरहद पर पहरा देते हुए मरा, तो क़यामत तक उसे उस कर्म का पुण्य मिलता रहेगा"।(स़ह़ीह़ मुस्लिम: १९१३)

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०८

१३९- अज़ान का उत्तर देने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वसीला की दुआ करना, वह इस प्रकार से कि यह दुआ पढ़ी जाये: «اللهم ربّ هذه الدعوة التامة ...»

अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद् दअ्वतित् ताम्मति...

पुण्य: क़यामत के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसके लिए सिफ़ारिश करेंगे।

प्रमाण: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अज़ान सुनते समय यह दुआ पढ़े: «اللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدًا الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ» अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद् दअ्वतित् ताम्मति, वस्सलातिल क़ाइमति, आति मुहम्मदन अल-वसीलता वल फ़ज़ीलता, वब्अस्हू मक़ामम महमूदा निल्लज़ी वअत्तहू, (अर्थात: ऐ अल्लाह! इस संपूर्ण आह्वान तथा खड़ी होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को वसीला (जन्नत का सबसे ऊँचा स्थान) और श्रेष्ठतम दर्जा प्रदान कर और उन्हें वह प्रशंसनीय स्थान प्रदान कर, जिसका तू ने उन्हें वचन दिया है), तो उसे क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश प्राप्त होगी"। (स़हीह़ मुस्लिम: १९१३)।

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस़ रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "जब तुम मुअज़्ज़िन को सुनो तो उसी प्रकार से कहो जिस प्रकार से वह कहता है, फिर मुझ पर दुरूद भेजो क्योंकि जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजता है, अल्लाह तआला उसके बदले में उस पर दस रह़मत (दया, कृपा) उतारता है, फिर अल्लाह तआला से मेरे लिए वसीला माँगो, क्योंकि वह जन्नत में एक स्थान है जो अल्लाह के बंदों में से केवल एक को मिलेगा, तथा मुझे आशा है कि वह बंदा मैं रहूँगा, अत: जिसने मेरे लिए वसीला त़लब किया उसके लिए (मेरी) सिफ़ारिश अनिवार्य हो गई"। (स़हीह़ मुस्लिम: ३८४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३०९

१४०- सुबह शाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दस बार दुरूद भेजना

पुण्य: उसे क़यामत के दिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफ़ारिश प्राप्त होगी।

प्रमाण: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति भोर-सांझ मेरे ऊपर दस-दस बार दुरूद भेजेगा उसे क़यामत के दिन मेरी सिफ़ारिश प्राप्त होगी"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने दो सनदों से रिवायत किया है, एक सनद जय्यिद (अच्छी) है तथा उसके रिजाल (वर्णनकर्ता) स़िक़ा (सच्चे) हैं जैसाकि हैस़मी ने "मज्मउज़् ज़वाइद" (१०/१२०) में संख्या (१७०२२) के अंतर्गत लिखा है, तथा सुयूती ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१०

१४१- सूरह बक़रह एवं सूरह आले इमरान की तिलावत (पाठ) करना

फ़ज़ीलत: ये सूरतें सिफ़ारिश करेंगी।

दलील: अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: "क़ुरआन का पाठ किया करो क्योंकि वह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों के लिए सिफ़ारिश करने वाला बन कर आयेगा। दो प्रकाशमान (चमकती) हुई सूरतें: बक़रह तथा आले इमरान पढ़ा करो, क्योंकि वो क़यामत के दिन इस प्रकार से आयेंगी जैसे वो दो बादल अथवा छाया हों या जैसे वह एक सीध में उड़ते पक्षियों के दो झुंड हों, वो अपने साथ (पढ़ने तथा अनुसरण करने) वालों का बचाव करेंगी"। (स़हीह़ मुस्लिम: ८०४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३११

१४२- पिता के मित्रों एवं संगी-साथियों के साथ संबंध जोड़ना

फ़ज़ीलत: यह (माता-पिता के साथ) सर्वोत्तम सद्व्यवहार है।

दलील: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "माता-पिता के संग उत्तम व्यवहार (का एक रूप) उन लोगों के साथ सद्व्यवहार करना है जिनके साथ उनके पिता को प्रेम था"। (स़हीह़ मुस्लिम: २५५२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१२

१४३- सूरह ज़िलज़ाल (इज़ा ज़ुलज़िलत) की तिलावत (पाठ) करना

पुण्य: आधा क़ुरआन पढ़ने का प्रतिफल प्राप्त होता है।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "(इज़ा ज़ुलज़िलत) की तिलावत करना आधा क़ुरआन के समान है"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३१५२ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़हीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१३

१४४- सूरह इख़्लास़ ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ (क़ुल हुवल्लाहु अह़द) की तिलावत करना

फ़ज़ीलत: एक तिहाई क़ुरआन का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या तुम में से कोई व्यक्ति इतना भी नहीं कर सकता कि एक रात में तिहाई क़ुरआन की तिलावत कर ले? उन्होंने पूछा: (कोई व्यक्ति, इतना कम समय में) एक तिहाई क़ुरआन की तिलावत कैसे कर सकता है? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ एक तिहाई क़ुरआन के बराबर है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: ८११)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१४

१४५- सूरह काफ़िरून ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ (क़ुल या अय्युहल काफ़िरून) की तिलावत करना

फ़ज़ीलत: एक चौथाई क़ुरआन की तिलवात करने का पुण्य प्राप्त होता है।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ (क़ुल या अय्युहल काफ़िरून) एक चौथाई क़ुरआन के बराबर है"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३१५२ ने रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१५

१४६- मस्जिद में सुबह जा कर क़ुरआन की कुछ आयतों (श्लोकों) का पाठ करना

पुण्य: (आयतों की संख्या जो भी हो) ऊँटों की उतनी संख्या से उत्तम है।

प्रमाण: उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर से निकल कर बाहर आए। हम सुफ़्फ़ा (चबूतरा) पर मौजूद थे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तुम में से कौन पसंद करता है कि प्रतिदिन सुबह बुतहान अथवा अक़ीक़ (की वादी) में जाए एवं वहाँ से बिना कोई पाप किये एवं संबंध को तोड़े दो बड़े-बड़े कोहानों वाली ऊँटनियां लाए?" हमने कहाः हे अल्लाह के रसूल! हम सभों को यह बात पसंद है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "फिर तुम में से कोई व्यक्ति सुबह मस्जिद में क्यों नहीं जाता कि वह अल्लाह की किताब की दो आयतें सीखे अथवा उनका पाठ करे तो यह उसके लिए दो ऊँटनियों (के मिलने) से बेहतर है, तथा ये तीन आयतें तीन ऊँटनियों एवं चार आयतें चार ऊँटनियों से उत्तम हैं और (आयतों की संख्या जो भी हो) ऊँटों की उतनी संख्या से बेहतर है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिमः ८०३)।

चौथा खण्ड

नफ़्स (स्वयं) से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

३१ पूँजी

पूँजी ३१६

१- अल्लाह का तक़्वा एवं भय

फ़ज़ीलत: मृत्यु के समय अल्लाह की ओर से फ़रिश्ते शुभ सूचना लेकर आते हैं, अल्लाह की कृपा प्राप्त होती है और क़ुरआन से लाभांवित होता है।

प्रमाण: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ * لَهُمُ الْبُشْرَى فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ﴾ अनुवाद: (जो ईमान लाये तथा अल्लाह से डरते रहे। उन्ही के लिए सांसारिक जीवन में शुभ सूचना है, तथा परलोक में भी, अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है)। सूरह यूनुस: ६३-६४।

﴿وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾ अनुवाद: (डरो ताकि तुम पर दया की जाये)। सूरह अनआम: १५५।

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ۚ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ﴾ अनुवाद: (तथा मेरी दया प्रत्येक वस्तु को समोये हुए है, मैं उसे उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो अवज्ञा से बचेंगे) सूरह आराफ़: १५६।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ अनुवाद: (हे लोगों जो ईमान लाये हो! अल्लाह से डरो तथा ईमान लाओ उसके रसूल पर वह तुम्हें प्रदान करेगा दोहरा प्रतिफल अपनी दया से, तथा प्रदान करेगा तुम्हें ऐसा प्रकाश जिसके साथ तुम चलोगे, तथा क्षमा कर देगा तुम्हें, और अल्लाह अत्यंत क्षमी दयावान है)। सूरह ह़दीद: २८।

﴿ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِلْمُتَّقِينَ﴾ अनुवाद: (इस किताबा (के अल्लाह की किताब होने) में कोई संदेह नहीं परहेज़गारों (आज्ञाकारियों) का मार्गदर्शन करने वाली है)। सूरह बक़रह: २।

अनुवाद: ﴿وَإِنَّهُ لَتَذْكِرَةٌ لِلْمُتَّقِينَ﴾ (निश्चित रूप से यह क़ुरआन परहेज़गारों के लिए नसीह़त (उपदेश) है)। सूरह ह़ाक़्क़ा: ४८।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१७-३१८

२-३: ह़ज्ज एवं उमरा में सिर मुंडवाना अथवा बाल छोटे करवाना

फ़ज़ीलत: सिर मुंडवाने पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो अथवा तीन बार रह़मत (दया) की दुआ दी, तथा छोटा करवाने पर एक बार।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हे अल्लाह! सिर मुंडवाने वालों पर दया कर", स़ह़ाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: अल्लाह के रसूल! बाल छोटे करवाने वालों पर भी। आप ने फ़रमाया: "हे अल्लाह! सिर मुंडवाने वालों पर दया कर", स़ह़ाबा -ए- किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: अल्लाह के रसूल! बाल छोटे करवाने वालों पर भी। तब आपने फ़रमाया: "बाल छोटे करवाने वालों पर भी दया कर"। (ह़दीस़ के वर्णनकर्ताओं में से एक:) लैस़ का कहना है कि: हमसे नाफ़ेअ ने: "हे अल्लाह! सिर मुंडवाने वालों पर दया कर", के वाक्य का उल्लेख एक बार अथवा दो बार किया। उबैदुल्लाह ने कहा: मुझ से नाफ़ेअ ने बयान किया तथा चौथी बार: बाल छोटे करवाने वालों, का वर्णन किया। स़ह़ीह़ बुख़ारी: १७२७ व मुस्लिम: १३०१)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३१९

४- अस़्र के पूर्व चार रक्अत (नफ़्ल) पढ़ना

फ़ज़ीलत: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके लिए रह़मत (दया) की प्रार्थना की।

प्रमाण: इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला उस व्यक्ति पर रह़म करे जो अस़्र के पूर्व चार रक्अतें पढ़े"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: १२७१, तिर्मिज़ी: ४३० तथा अह़मद: ६०८८ ने रिवायत किया है और सुयूती एवं इब्ने बाज़ ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२०

५- अल्लाह के ज़िक्र (स्मरण) वाली सभाओं में जमा होना

फ़ज़ीलत: अल्लाह की रह़मत (दया) प्राप्त होती है तथा फ़रिश्ते उन्हें आसमान तक अपने परों से घेर लेते हैं।

दलील: अबू हुरैरा एवं अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो क़ौम भी सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह को याद करने के लिए बैठती है, तो फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं, रह़मत ढ़ाँप लेती है तथा उनपर हार्दिक शांति का अवतरण होता है एवं अल्लाह उनका उल्लेख उनके बीच करता है जो उसके पास होते हैं"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २७००)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "निःसंदेह रूप से अल्लाह के कुछ ऐसे फ़रिश्ते (दूत) हैं जो ज़िक्र करने वालों को खोजते हुए रास्ते में चक्कर लगाते रहते हैं। जब वह कुछ लोगों को अल्लाह के ज़िक्र में व्यस्त पा लेते हैं तो वो एक दूसरे को बुलाते हैं कि: आओ तुम्हारा उद्देश्य पूरा हो गया है"। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "वे अपने परों के द्वारा उन्हें घेर लेते हैं तथा सांसारिक आकाश की सीमा तक पहुँच जाते हैं। आप ने फ़रमाया: उनका सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान रब उन से पूछता है, हालांकि वह उन्हें अच्छे से जानता है: मेरे भक्त क्या कहते हैं? वह बताते हैं कि वो तेरी तस्बीह़ (पवित्रता) एवं तेरी बड़ाई का बखान करते हैं, तेरी प्रशंसा व स्तुति गान करते हैं तथा तेरी महानता व उच्चता का गुणगाण करते हैं"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ६४०८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२१

६- तहज्जुद के लिए रात में जागना तथा पत्नी को भी जगाना चाहे उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारने की आवश्यकता ही क्यों न पड़े

पुण्य: अल्लाह की रह़मत (दया) की प्राप्ति

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह उस बंदे पर दया करे जो रात्रि में उठ कर नमाज़ पढ़ता तथा अपनी पत्नी को जगाता है, यदि वह इन्कार करे तो उसके मुख पर पानी के छींटे मारता है। तथा अल्लाह दया करे उस बंदी पर जो रात्रि में उठ कर नमाज़ पढ़ती है तथा अपने पति को जगाती है। यदि वह इन्कार करे तो उसके मुख पर पानी के छींटे मारती है"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: १३०८ ने रिवायत किया है एवं सुयूती तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२२

७- क्रय-विक्रय तथा तगादा करने में नम्रता अपनाना

फ़ज़ीलत: अल्लाह की दया की प्राप्ति

दलील: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला उस व्यक्ति पर दया करे जो ख़रीदते एवं बेचते समय तथा तगादा करते समय नम्रता धारण करे और दयालुता का प्रदर्शन करे"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: २०७६)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२३

८- ऐसी दुआ करना जिसमें पाप करने तथा संबंध तोड़ने की बात न हो

पुण्य: ऐसी दुआ अतिशीघ्र स्वीकार की जाती है।

प्रमाण: अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो मुसलमान भी कोई ऐसी दुआ करता है जिसमें कोई पाप करने की अथवा संबंध तोड़ने की बात नहीं होती है तो अल्लाह तआला तीन में से किसी एक तरीके से उसकी वह दुआ अवश्य स्वीकार करता है: या तो उसकी वह दुआ संसार में ही स्वीकार कर ली जाती है, अथवा आख़िरत (परलोक) के लिए उसे संग्रहित कर दिया जाता है, या उसी के समान कोई विपदा एवं संकट उससे टाल दिया जाता है। स़ह़ाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा: तब तो हम अधिकाधिक दुआ करेंगे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह सर्वाधिक (दुआ को स्वीकार) करने वाला है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: ११३०२ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२४

९- अनुपस्थिति में अपने भाई के लिए दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ क़बूल होती है तथा फ़रिश्ते उस व्यक्ति के लिए दुआ करते हैं।

दलील: अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मुसलमान की अपने भाई के लिए उसके पीठ पीछे की गई दुआ स्वीकार की जाती है, उसके सिर के निकट एक फ़रिश्ता नियुक्त होता है, वह जब भी अपने भाई के लिए दुआ करता है तो नियुक्त किया हुआ फ़रिश्ता उस पर कहता है: आमीन, तथा तुम्हें भी उसी के समान मिले"। (स़हीह़ मुस्लिम: २७३३)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२५

१०- रात्रि की अंतिम घड़ी में तथा अंतिम तिहाई में अल्लाह से दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

दलील: जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे थे: "रात में एक क्षण ऐसा होता है, जो मुसलमान बंदा भी उसको पा लेता है, और उस (क्षण) में वह दुनिया व आख़िरत (लोक परलोक) की किसी भी ख़ैर, भलाई व कल्याण की प्रार्थना करता है तो अल्लाह तआला उसे वह अवश्य प्रदान करता है। तथा यह क्षण प्रत्येक रात्रि में होता है"। (स़हीह़ मुस्लिम: ७५७)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "हमारा सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान पालनहार प्रत्येक रात सांसारिक आकाश पर उतरता है जब एक तिहाई रात बाकी रह जाती है, तथा आवाज़ देता है: कोई है जो मुझ से दुआ करे कि मैं उसे स्वीकार करूँ? कोई है जो मुझ से माँगे कि मैं उसे प्रदान करूँ? कोई है जो मुझ से मग़फ़िरत त़लब (क्षमा याचना) करे तो मैं उसे क्षमा कर दूँ"। (स़हीह़ बुख़ारी: ११५४ व मुस्लिम: ७५७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२६

११- बुधवार के दिन ज़ुह्र एवं अस्र के मध्य दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ क़बूल होती है।

दलील: जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि: "नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद (अल-फ़त्ह) के अंदर सोमवार, मंगलवार तथा बुधवार के दिन दुआ की, आप की दुआ बुध के दिन ज़ुह्र एवं अस्र के मध्य स्वीकृत हुई, तथा आपके मुख मंडल पर प्रसन्नता साफ झलक रही थी"। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: "इसके बाद से जब भी मुझे कोई कठिनाई पेश आती तो मैं इसी पल की प्रतीक्षा करता तथा इसमें दुआ करता और दुआ स्वीकार भी की जाती"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: १४७८७ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२७

१२- यूनुस अलैहिस्सलाम वाली प्रार्थना: ﴿لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ﴾ "ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्ह़ानका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन", करने का ध्यान रखना

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

दलील: सअद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ज़ुन्नून (यूनुस) अलैहिस्सलाम की प्रार्थना जो उन्होंने मछली के पेट में रहने के दौरान की थी, वह यह थी: ﴿لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ﴾ "ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्ह़ानका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन" (अर्थात: तेरे सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं है, तू पवित्र है मैं ही अत्याचारियों में से हूँ), क्योंकि यह ऐसी प्रार्थना है कि जब भी कोई मुसलमान इसे पढ़ कर दुआ करेगा तो अल्लाह तआला उसकी दुआ अवश्य स्वीकार करेगा"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३५०५ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२८

१३- जुमुआ के दिन एक (विशेष) क्षण में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना तथा दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुमुआ के दिन वअज़ किया (उपदेश, भाषण दिया) तो फ़रमाया: "इसमें एक ऐसा पल है कि यदि ठीक उस पल में मुस्लिम बंदा खड़ा हो कर नमाज़ पढ़े तथा अल्लाह तआला से कोई चीज़ माँगे तो अल्लाह तआला उसको वह चीज़ अवश्य प्रदान करता है", तथा आपने अपने हाथ से इशारा करके बताया कि वह पल अल्प समय के लिए होता है। (स़हीह़ बुख़ारी: ९३५ व मुस्लिम: ८५२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३२९

१४- हाथ उठा कर दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ क़बूल होती है।

प्रमाण: सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला लज्जावान तथा उदार है, वह इस बात से लज्जा अनुभव करता है कि जब कोई भक्त उसके समक्ष हाथ फैला दे तो वह उसके दोनों हाथों को खाली हाथ नाकाम वापस लौटा दे"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: ३५५६ ने रिवायत किया है तथा सुयूती एवं अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३०

१५- अज़ान एवं इक़ामत के मध्य दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

दलील: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अज़ान एवं इक़ामत के बीच (की जाने वाली) दुआ रद्द नहीं की जाती"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ५२१ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३१

१६- अज़ान का उत्तर देने के बाद दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि एक व्यक्ति ने कहा: हे अल्लाह के रसूल! मुअज़्ज़िन हमसे फ़ज़ीलत (पुण्य) में आगे बढ़ जायंगे, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम भी वैसे ही कहा करो जैसे वह कहते हैं। जब तुम इससे फ़ारिग़ हो जाओ तो सवाल करो तथा दुआ माँगो, दिये जाओगे"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ५२४ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसको स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३२

१७- जब रात्रि में निद्रा भंग हो तो यह दुआ पढ़े: «لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحْدَهُ لا شَرِيكَ له...»

ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहु ला शरीका लहु..., उसके बाद दुआ करे

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

प्रमाण: उबादा बिन स़ामित रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति रात को उठे तथा कहे: «لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحْدَهُ لا شَرِيكَ له، له المُلْكُ وله الحَمْدُ، وهو علَى كُلِّ شيءٍ قَدِيرٌ، الحَمْدُ لِلَّهِ، وسُبْحَانَ اللَّهِ، ولَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، واللَّهُ أَكْبَرُ، ولَا حَوْلَ ولَا قُوَّةَ إِلَّا باللَّهِ» (ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल ह़म्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर,

अल्हम्दुलिल्लाहि, व सुब्हानल्लाहि, व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबरु, व ला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि) (अर्थातः अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझीदार नहीं, उसी के लिए राज-पाट है तथा उसी के लिए समस्त प्रकार की प्रशंसा है, वह प्रत्येक चीज़ करने में सक्षम है, तथा अल्लाह पवित्र है, अल्लाह के सिवा कोई सत्य पूज्य नहीं, अल्लाह सबसे महान है, अल्लाह के अनुग्रह के बिना न किसी भलाई के करने की शक्ति है तथा न किसी बुराई से बचने का सामर्थ्य)। फिर यह दुआ करे (اللهمَّ اغفرْ لي उल्लाहुम्मा इग़्फ़िर ली) (अर्थातः हे अल्लाह! तू मुझे क्षमा कर दे), अथवा कोई और दुआ करे तो उसकी दुआ स्वीकार की जाती है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३३

१८- रोज़ेदार का इफ़्तार के समय अथवा रोज़ा की स्थिति में दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ स्वीकार की जाती है।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "रोज़ेदार के लिए रोज़ा खोलते समय एक ऐसी दुआ होती है जो रद्द नहीं होती"। (इस ह़दीस़ को इब्ने माजहः १७५३ ने रिवायत किया है तथा अह़मद शाकिर ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तीन लोगों की दुआ रद्द नहीं की जातीः प्रथमः न्यायप्रिय इमाम (शासक), द्वितीयः रोज़ेदार जब वह इफ़्तार करे तथा तृतीयः मज़लूम (उत्पीड़ित) जब वह बद्दुआ (शाप) करता है"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ीः ३५९८ तथा इब्ने माजहः १७५२ ने रिवायत किया है और इब्नुल मुलक़्क़िन ने स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३४

१९- अल्लाह का ज़िक्र (जाप)

फ़ज़ीलत: दुआ का स्वीकृत होना।

दलील: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "तीन लोगों की दुआ रद्द नहीं की जातीः अल्लाह के ज़िक्र (जाप) में व्यस्त रहने वाला (की दुआ), दूसराः उत्पीड़ित जब वह बद्दुआ करता है तथा न्यायप्रिय शासक (की दुआ)"। (इन शब्दों के साथ बज़्ज़ार ने अपनी मुस्नद (१५/ २७१) में संख्या (८७५१) के अंतर्गत इसे रिवायत किया है, तथा अलबानी इसे ह़सन करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३५

२०- दुआ

फ़ज़ीलत: दुआ का मक़बूल होना।

प्रमाण: ﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾ अनुवाद: (तथा तेरे रब का आदेश पारित हो चुका है कि मुझ से प्रार्थना करो मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं को स्वीकार करूँगा। निश्चय ही जो लोग मेरी उपासना से विमुखता प्रकट करते हैं वह शीघ्र ही अपमानित हो कर नरक में प्रवेश करेंगे)। सूरह ग़ाफ़िर: ६०।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३६

२१- रमज़ान में दिन तथा रात में (किसी भी समय) दुआ करना

फ़ज़ीलत: दुआ का स्वीकार किया जाना।

प्रमाण: अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "निःसंदेह अल्लाह तआला (रमज़ान में) हर दिन तथा हर रात में अपने कुछ बंदों को जहन्नम से मुक्ति देता है तथा हर दिन एवं हर रात में प्रत्येक मुसलमान की एक दुआ स्वीकार की जाती है" (अर्थात: रमज़ान में)। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-औसत़: ६४०१ में रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३७

२२- अल्लाह के समक्ष विनम्रता एवं श्रद्धा अपनाना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला उसका दर्जा बुलंद करता है।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "कोई व्यक्ति (केवल) अल्लाह के लिए विनम्रता अपनाता है तो अल्लाह तआला उसका दर्जा बुलंद कर देता है"। (स़ह़ीह़ मुस्लिम: २५८८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३८

२३- ज़ुबान की सुरक्षा

फ़ज़ीलत: गुप्तांग की सुरक्षा।

प्रमाण: अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अपने क्रोध पर नियंत्रण करेगा, अल्लाह तआला उसे अपने अज़ाब (यातना) से सुरक्षित रखेगा, तथा जो व्यक्ति अपनी ज़ुबान की सुरक्षा करेगा, अल्लाह तआला उसके गुप्तांग की सुरक्षा करेगा"। (इस ह़दीस़ को ज़िया मक़्दिसी ने अल-मुख़्तारह: २०६६ में रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३३९

२४- संबंधों को जोड़ कर एवं बचा कर रखना

फ़ज़ीलत: आयु में वृद्धि।

प्रमाण: अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "संबंध जोड़ने से आयु में वृद्धि होती है"। (इस ह़दीस़ को त़बरानी ने अल-मुअजम अल-कबीर: ८०१४ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ करार दिया है।

आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "संबंध जोड़ना, अच्छा आचरण (सद्व्यवहार) तथा परिवार वालों के संग शिष्ट रहने से घर आबाद होते हैं तथा आयु में वृद्धि होती है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २५८९६ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया "जो चाहता है कि उसकी आजीविका में वृद्धि हो तथा उसकी आयु लम्बी हो तो वह संबंधों को जोड़ कर रखे"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ५९८६ व मुस्लिम: २५५७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४०-३४१

२५-२६: शिष्टाचार एवं पारिवारिक सदस्यों के संग अच्छा व्यवहार

फ़ज़ीलत: आयु में वृद्धि।

प्रमाण: आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "संबंध जोड़ना, अच्छा आचरण (सद्व्यवहार) तथा परिवार वालों के संग शिष्ट रहने से घर आबाद होते हैं और आयु में वृद्धि होती है"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २५८९६ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४२

२७- (इस्मिद) सुरमा लगाना

फ़ज़ीलत: दृष्टि को तेज़ करता है।

प्रमाण: इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "तुम्हारे लिए सर्वोत्तम सुरमा इस्मिद है। यह नज़र को तेज़ करता है तथा (पलकों के) बाल बढ़ाता है"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: ३८७८ एवं तिर्मिज़ी: १७५७ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४३

२८- अगली पंक्ति में नमाज़ पढ़ना

पुण्य: उसके लिए फ़रिश्ते दुआ करते हैं।

प्रमाण: बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह तआला उन लोगों पर रह़मत भेजता है तथा फ़रिश्ते उनके लिए दुआ करते हैं जो अगली पंक्ति में नमाज़ पढ़ते हैं"। (इस ह़दीस़ को नसई ने अल-कुब्रा: १६२२ में रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४४

२९- नमाज़ के बाद मुसल्ला (नमाज़ पढ़ने के स्थान) पर बैठे रहना यहाँ तक कि वुज़ू न टूटे

पुण्य: फ़रिश्ते उसके लिए प्रार्थना करते हैं।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तक तुम अपने मुसल्ला पर बैठे रहो जहाँ तुमने नमाज़ पढ़ी थी तथा वुज़ू भी न टूटे तो फ़रिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करते हैं कि हे अल्लाह! इसको क्षमा कर दे, हे अल्लाह! इस पर दया कर"। (सहीह बुख़ारी: ४४५ व मुस्लिम: ६४९)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४५

३०- मुसलमान की तीमारदारी (देख-भाल) करना

फ़ज़ीलत: फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं।

दलील: अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: मैंने अल्लाह के रसूल को फ़रमाते हुए सुना है: "जो मुसलमान भी किसी मुसलमान की सुबह के समय अयादत करने (हाल-चाल पूछने) जाता है, तो शाम तक सत्तर हज़ार (७००००) फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करते हैं, तथा जो शाम को अयादत करता है तो सुबह तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। तथा उसके लिए जन्नत में एक बाग़ होगा"। (इस हदीस़ को तिर्मिज़ी: ९६९ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़हीह कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४६

३१- अज़ान

फ़ज़ीलत: प्रत्येक आर्द्र एवं शुष्क (सजीव तथा निर्जीव) उसके लिए गवाही देंगी।

प्रमाण: अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "मुअज़्ज़िन को जहाँ तक उसकी आवाज़ जाती है क्षमा कर दिया जाता है, तथा प्रत्येक आर्द्र एवं शुष्क (सजीव तथा निर्जीव) उसकी गवाही देती है"। (इस हदीस़ को अबू दावूद: ५१५ ने रिवायत किया है तथा अलबानी ने इसे स़हीह कहा है)।

पंचम खण्ड

सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

१० पूँजियां

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४७

१- अपने भाई की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहना

फ़ज़ीलत: अल्लाह तआला उसकी आवश्यकता की पूर्ति करेगा।

प्रमाण: अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति अपने भाई की आवश्यकता की पूर्ति करने में व्यस्त होता है तो अल्लाह तआला उसकी आवश्यकता की पूर्ति करेगा"। (स़हीह़ बुख़ारी: २४४२ व मुस्लिम: २५८०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४८

२- संबंध को जोड़ कर रखना

फ़ज़ीलत: सर्वप्रथम इसी नेकी का पुण्य प्राप्त होता है, धन में वृद्धि होती है, रिश्तेदारों की संख्या बढ़ती है तथा रिज़्क़ (आजीविका) बढ़ता है।

प्रमाण: अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह के समस्त आज्ञापालनों में संबंध जोड़ेने से जल्दी किसी चीज़ का पुण्य नहीं मिलता, यद्यपि रिश्तेदार फाजिर (कुकर्मी) ही क्यों न हो, यदि वो आपस में संबंध जोड़े रखें तो उनके धन में वृद्धि होगी तथा संख्या बल में बढ़ोतरी होगी"। (इस ह़दीस़ को इब्ने ह़िब्बान: ४४० ने रिवायत किया है एवं शुऐब अरनऊत़ ने इसे स़हीह़ कहा है)।

अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो चाहता है कि उसके रिज़्क़ (आजीविका) में वृद्धि हो तथा उसकी आयु लम्बी हो तो वह संबंधों को जोड़े"। (स़हीह़ बुख़ारी: ५९८६ व मुस्लिम: २५५७)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३४९

३- पाबंदी के साथ इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) एवं अल्लाह के समक्ष तौबा (पश्चाताप) करना

फ़ज़ीलत: यह (जीवन का) अच्छा सामान है, तथा उसे ऐसे स्थानों से आजीविका दी जायेगी जहाँ से उसे गुमान तक नहीं होगा।

प्रमाण:{وَأَنِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَتَاعًا حَسَنًا إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى} अनुवाद: (और यदि अपने पालनहार से क्षमा याचना करो, फिर उसी की ओर ध्यान मग्न हो जाओ, वह तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अच्छा लाभ पहुँचायेगा)। सूरह हूद: ३।

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो कोई भी प्रतिबद्धता के साथ इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करेगा, अल्लाह तआला उसके लिए हर तंगी से निकलने का एवं प्रत्येक दु:ख के निवारण का मार्ग प्रशस्त कर देगा, तथा ऐसे-ऐसे स्थानों से उन्हें आजीविका देगा जिसका उन्हें भान तक नहीं होगा"। (इस ह़दीस़ को अबू दावूद: १८१५ तथा इब्ने माजह: ३८१९ ने रिवायत किया है, एवं अब्दुल ह़क़ इशबीली एवं इब्ने बाज़ ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५०

४- अल्लाह का तक़्वा एवं भय

फ़ज़ीलत: आसमान से बरकतों (कल्याण) के द्वार खुल जायेंगे, ऐसे स्थानों से रिज़्क़ मिलेगा जहाँ से उसे उम्मीद भी नहीं होगी तथा समस्त मामले सरल हो जायेंगे।

प्रमाण: {وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَى آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ} अनुवाद: (यदि इन नगरों के वासी ईमान लाते और कुकर्मों से बचे रहते तो हम उन पर आकाशों तथा धरती की सम्पन्नता के द्वार खोल देते)। (सूरह आराफ़: ९६।

{وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا * وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ} अनुवाद: (और जो कोई डरता हो अल्लाह से तो वह बना देगा उसके लिए कोई निकलने का उपाय, तथा उसको जीविका प्रदान करेगा उस स्थान से जिस का उसे अनुमान (भी) न हो)। सूरह त़लाक़: २-३।

{وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا} अनुवाद: (तथा जो अल्लाह से डरेगा वह उसके लिए उस कार्य को सरल कर देगा)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५१

५- अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा)

फ़ज़ीलत: रिज़्क़ (आजीविका मिलना)

दलील: उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "यदि तुम लोग अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करो जैसाकि तवक्कुल करने का हक़ (मापदंड) है तो तुम्हें उसी प्रकार से रिज़्क़ मिलेगा जिस प्रकार से पक्षियों को रिज़्क़ मिलता है कि वह सुबह को भूखे निकलते हैं तथा शाम को पेट भर कर वापस होते हैं"। (इस हदीस़ को तिर्मिज़ी: २३४४ एवं इब्ने माजह: ४१६४ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़हीह़ कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५२

६- अल्लाह के मार्ग में धन खर्च करना

फ़ज़ीलत: उसका पूरा पूरा बदला दिया जाता है।

प्रमाण: {قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ} अनुवाद: (आप कह दें कि: मेरा पालनहार ही फैलाता है जीविका को जिस के लिए चाहता है अपने भक्तों में से तथा तंग करता है उसके लिए, और जो भी तुम दान करोगे तो वह उसका पूरा बदला देगा, तथा वही उत्तम जीविका देने वाला है)। सूरह सबा: ३९।

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब लोग सुबह करते हैं तो दो फ़रिश्ते उतरते हैं, एक कहता है: हे अल्लाह! खर्च करने वाले को उत्तम बदला दे, तथा दूसरा कहता है: हे अल्लाह! कंजूसी करने वाले को तबाह कर दे"। (स़हीह़ बुख़ारी: १४४२ व मुस्लिम: १०१०)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५३

७- बड़ों एवं वृद्धों का सम्मान करना

पुण्य: ऐसे लोगों को नियुक्त किया जाता है जो उस आयु (वृद्धावस्था) में उनका सम्मान करें।

प्रमाण: अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जो युवक किसी वृद्ध का उसकी वृद्धावस्था का ध्यान रखते हुए सम्मान करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए ऐसे लोगों को नियुक्त कर देगा जो उस आयु (अर्थात: वृद्धावस्था) में उसका आदर करेंगे"। (इस ह़दीस़ को तिर्मिज़ी: २०२२ ने रिवायत किया है एवं सुयूती ने इसे ह़सन कहा है)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५४

८- विपदा के समय यह दुआ पढ़ना: ﴿إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, ﴿اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا﴾ अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुस़ीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा

पुण्य: (अल्लाह) उसका उत्तम बदला प्रदान करता है।

प्रमाण: नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्म पत्नी उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फ़रमाते हुए सुना: "ऐसा कोई बंदा नहीं जिसे कोई विपदा पहुँचे तथा वह कहे: ﴿إِنَّا لِلَّهِ وإِنَّا إِلَيْهِ راجِعُونَ. اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुस़ीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा (अर्थात: नि:संदेह हम अल्लाह ही के लिए हैं एवं उसी की ओर पलट कर जाने वाले हैं। हे अल्लाह! मुझे मेरी विपदा का पुण्य दे तथा मुझे इसका उत्तम बदला प्रदान कर), तो अल्लाह तआला उसे उसकी विपदा का पुण्य देता है तथा उसे उसका उत्तम बदला प्रदान करता है"। (स़हीह़ मुस्लिम: ९१८)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५५

९- खरीदने और बेचने (क्रय-विक्रय) में ईमानदारी और स्पष्टता के साथ काम करना

फ़ज़ीलत: व्यापार में बरकत होती है।

तर्क: ह़कीम बिन ह़िज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है, वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "खरीदने एवं बेचने वाले (क्रेता एवं विक्रेता) दोनों को अधिकार है जब तक अलग न हों, या यह फ़रमाया: यहाँ तक कि जुदा हो जायें। यदि वो सच बोलें तथा (सामान) के दोषों को स्पष्ट कर दें तो उन्हें उनके उस व्यापार में बरकत (कल्याण) दी जायेगी एवं यदि झूठ बोलें अथवा दोष छुपाएं तो व्यापार की बरकत समाप्त कर दी जायेगी"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: २०७९ व मुस्लिम: १५३२)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५६

१०- सोते समय: ३४ बार (الله اكبر) अल्लाहु अकबर, ३३ बार (سبحان الله) सुब्ह़ानल्लाह, तथा ३३ बार (الحمد لله) अल्ह़म्दुलिल्लाह, पढ़ना

फ़ज़ीलत: सेवक रखने से बेहतर है।

प्रमाण: अली रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जब तुम सोने के लिए अपने बिस्तरों पर लेटने लगो तो ३४ बार (الله اكبر) अल्लाहु अकबर, ३३ बार (سبحان الله) सुब्ह़ानल्लाह, तथा ३३ बार (الحمد لله) अल्ह़म्दुलिल्लाह, पढ़ लिया करो। ऐसा करना तुम्हारे लिए किसी सेवक से बेहतर है"। (स़ह़ीह़ बुख़ारी: ३७०५ व मुस्लिम: २७२७)।

छठा खण्ड

आसपास के लोगों से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी

४ पूँजी

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५७

१- नेकी के द्वारा बदी (अच्छाई के द्वारा बुराई) को दूर करना

फ़ज़ीलत: शत्रु मित्र बन जायेगा।

प्रमाण: {وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ} अनुवाद: (और समान नहीं होते पुण्य तथा पाप, आप दूर करें (बुराई को) उसके द्वारा जो सर्वोत्तम हो, तो सहसा आप के तथा जिसके बीच बैर हो मानो वह हार्दिक मित्र हो गया)। (सूरह फ़ुस्सिलत: ३४)।

पूँजी का कार्यान्वयन

पूँजी ३५८-३६०

२-४: संबंध बचा कर रखना, शिष्टाचार एवं पड़ोसी के संग अच्छा व्यवहार

फ़ज़ीलत: घर आबाद होता है।

प्रमाण: आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "संबंध जोड़ कर रखने से, शिष्टाचार तथा पड़ोसी के संग अच्छा व्यवहार करने से, घर आबाद होते हैं"। (इस ह़दीस़ को अह़मद: २५८९६ ने रिवायत किया है एवं अलबानी ने इसे स़ह़ीह़ कहा है)।

विषय सूची

प्रस्तावना ४
जीवन की पूँजी नामक पुस्तक में मेरी लेखन शैली ८
प्रथम अध्यायः ऐसी बहुमूल्य पूँजी, जिनसे अल्लाह का उद्देश्य पूरा होता है, उसका सान्निध्य और कृपा प्राप्त होती है १२
प्रथम खंडः ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह का उद्देश्य पूरा होता है १३
१- (१) दुआ (प्रार्थना) १४
२- (२) सत्यवादिता का पालन १४
३- (३) अल्लाह का तक़वा (भय) १५
४-५ (४-५) क्रोध को सहन करना और लोगों को क्षमा करना १५
६- (६) तेज धूप में चाश्त की नमाज़ अदा करना १५
७- (७) चालीस दिनों तक तकबीर -ए- ऊला के साथ नमाज़ पढ़ना १६
८- (८) रोज़ा १६
९- (९) अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण) १६
१०- (१०) सौ बार यह दुआ पढ़नाः «لا إلَهَ إلا اللهُ.» (ला इलाहा इल्लल्लाहु.) ..१७
११- (११) भोर-सांझ सौ बार यह दुआ पढ़नाः «سبحان الله وبحمده» सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि १७
१२-१३- (१२-१३) भोजन कराना तथा तथा परिचित व अपरिचित सभों को सलाम करना १८
१४-१७- (१४-१७) किसी मुसलमान को प्रसन्न करना, उसकी परेशानी दूर करना, उसका ऋण चुकाना तथा उसकी भूख मिटाना १८
१८- (१८) अल्लाह के मार्ग में जिहाद करना, अल्लाह की राह में एक घड़ी के लिए खड़ा होना, एक दिन और एक रात अथवा एक दिन अल्लाह के रास्तमें में रखवाली करना १८
१९- (१९) शबे क़द्र का अमल (कर्म) २०
२०- (२०) आपस में मेल-मिलाप कराना २०
२१- (२१) जुमुआ के दिन फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना २०
२२- (२२) घर में नफ़्ल नमाज़ २१
२३- (२३) तहज्जुद पढ़ना तथा सौ आयत के साथ क़याम करना २१

२४- (२४) मुहर्रम मास के रोज़े (उपवास) २२
२५- (२५) इशा की नमाज़ के बाद चार रक्अत इस प्रकार से पढ़ना कि उनके मध्य सलाम फेरने के द्वारा बाधा न डाले २३
दूसरा अध्यायः ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह का सान्निध्य प्राप्त होता है २३
२६- (१) सर्वोच्च व सर्वशक्तिमान अल्लाह का तक़वा (भय) २५
२७- (२) एहसान (उपकार) २५
२८- (३) अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण) २६
२९- (४) अल्लाह से दुआ करना २६
३० (५)- लोगों को लाभ पहुँचाना २६
३१ (६) अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) २७
३२ (७) अल्लाह की ख़ातिर एक-दूजे से प्रेम, एक दूसरे की ज़ियारत (भ्रमण), भाईचारा तथा आपसी सद्भावना २७
३३ (८) अल्लाह की ख़ातिर एक दूसरे से संबंध रखना २८
३४- (९) अल्लाह की ख़ातिर एक दूसरे पर खर्च करना २८
३५- (१०) अंसार से प्रेम २९
३६ (११) अल्लाह से मिलने की इच्छा रखना २९
३७- (१२) संबंध जोड़ना २९
३८- (१३) सज्दे (शीश नवाने) की स्थिति में अत्यधिक दुआ (प्रार्थना) करना ३०
तीसरा अध्यायः ऐसी बहुमूल्य पूँजी जिनसे अल्लाह तआला की कृपा प्राप्त होती है३१
३९- (१) अल्लाह का तक़वा (आज्ञापालन) ३३
४०- (२) खाने-पीने पर अल्लाह की प्रशंसा व स्तुति गान करना ३३
४१- (३) मिस्वाक (दतवन) ३३
४२- (४) भोर-सांझ यह दुआ पढ़नाः «رَضِينَا بِاللَّهِ رَبًّا.» रज़ीना बिल्लाहि रब्बन .. ३४
४३- (५) तौबा ३४
४४- (६) क़ुरआन सीखना एवं सिखाना ३४
४५- (७) प्रत्येक नमाज़ के पश्चात ३३ बार «سبحان الله و الحمد لله و الله أكبر» "सुब्हानल्लाहि वलहम्दुलिल्लाहि वल्लाहु अकबर" पढ़ना ३५
४६- (८) इफ़्तार करने (रोज़ा खोलने) में जल्दी करना ३५

४७- (९) नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना ३६
४८- (१०) अगली पंक्ति में नमाज़ पढ़ना ३६
४९- (११) प्यासे जानवरों को पानी पिलाना ३६
५०- (१२) अल्लाह के ज़िक्र (जाप) के लिए एकत्र होना (सभा में पवित्र अल्लाह का स्मरण करना) ३७
५१- (१३) अल्लाह तआला का ज़िक्र (जाप, स्मरण, स्तुति) ३८
५२- (१४) अपने दिल में अल्लाह को याद करना ३८
५३- (१५) विनम्रता एवं विवशता ३९
५४- (१६) मस्जिद में फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के बाद घर के लिए कुछ (नफ़्ल) नमाज़ें बचा कर रखना ३९
५५- (१७) सूरह बक़रह का पाठ करना ३९
५६- (१८) सेहरी खाना ४०
५७- (१९) नेकी (सद्कर्म) के द्वारा बुराई (कुकर्म) को दूर करना ४०
५८- (२०) जुमुआ के दिन सूरह कह्फ़ की तिलावत (पाठ) करना ४०
५९- (२१) तीन सांस में पानी पीना ४१
दूसरा अध्यायः जीवन की वो पूँजी जिनसे लोक परलोक में अप्रिय वस्तुएं (मकरूहात) समाप्त होती हैं ४३
प्रथम खण्डः धर्म के लिए हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी ४४
६०- (१) सौ बार «سبحان الله و بحمده» (सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि) पढ़ना .. ४४
६१- (२) कड़ाके की ठंड और शारीरिक कष्ट के बावजूद अच्छे तरीके से पूर्णरूपेण वुज़ू करना ४६
६२- (३) पाप एवं अश्लीलता किए बिना ह़ज्ज करना ४७
६३- (४) नमाज़ अदा करने के इरादा से मस्जिद -ए- अक़्सा जाना ४८
६४- (५) क़ुर्बानी (बलि) का जानवर ज़ब्ह़ (वध) करते समय उपस्थित रहना ४८
६५- (६) अल्लाह के रास्ते में शहादत (बलिदान) ४९
६६- (७) अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ना तथा उनकी अदायगी के दौरान कोई विचार मन में न लाना, तत्पश्चात अल्लाह से क्षमा याचना करना ४९
६७- (८)- ईमान तथा स़वाब व पुण्य के इरादा से रमज़ान मास में क़याम करना (रात्रि की नमाज़ पढ़ना) ४९

६८- (९) ईमान रखते हुए तथा स़वाब व पुण्य के इरादे से शबे क़द्र में क़याम करना ... ५०
६९- (१०) इमाम की आमीन का फ़रिश्तों की आमीन के अनुकूल होना ५०
७०- (११) (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللَّهِ) "ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर वला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि" पढ़ना ५०
७१- (१२) प्रत्येक नमाज़ के पश्चात ३३ बार सुब्ह़ानल्लाह- अल्ह़म्दुलिल्लाह- अल्लाहु अकबर पढ़ना, तथा सौ की गिनती पूरी करते हुए यह दुआ पढ़नाः (لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ) "ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल हम्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर" ५१
७२- (१३) घर में अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करने के बाद मस्जिद की ओर जमाअत (समूह) के संग नमाज़ पढ़ने के इरादा से निकलना तथा ज़्यादा क़दम चलना ५२
७३- (१४) एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना ५३
७४- (१५) रात की तंहाई में नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ना ५३
७५- (१६) संपन्नता हो अथवा दरिद्रता, हर स्थिति में स़दका व ख़ैरात (दान-पुण्य) करना ५४
७६- (१७)- बारंबार ह़ज्ज एवं उमरा करना ५४
७७- (१८) अल्लाह की राह में जिहाद करना ५५
७८- (१९) सच्चे ह़दय से अल्लाह के समक्ष तौबा (पश्चाताप) करना ५५
७९- (२०) अल्लाह का तक़वा एवं उसकी ख़शीयत (भय) ५५
८०- (२१) तौबा व इस्तिग़फ़ार (पश्चाताप व क्षमा याचना) करना तथा यह दुआ पढ़नाः «أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي...» (अस्तग़फ़िरुल्लाहा अल्लज़ी...) तथा पाप हो जाने के पश्चात उस पर अड़े न रहना ५७
८१- (२२) कष्ट एवं विपदा के समय स़ब्र तथा धैर्य से काम लेना ५८
८२- (२३) बुराई तथा पाप हो जाने के बाद नेकी करना ५८
८३- (२४) कबीरा गुनाहों (महा पापों) से दूर रहना ५९
८४- (२५) पूरी दुआ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद ही दुरूद पढ़ना ५९
८५- (२६) सूरह मुल्क की तिलावत (पाठ) करना ५९
८६- (२७) अल्लाह तआला के ज़िक्र (जाप) के लिए एकत्र होना ६०

८७- (२८) रात्रि के अंतिम पहर में इस्तिग़फ़ार करना ६०
८८- (२९) भेंट करते समय मुसाफ़हा करना (हाथ मिलाना) ६१
८९- (३०) अज़ान के बाद यह दुआ पढ़ना: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ، رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولًا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا» (अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहु ला शरीका लहू व अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु, रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन व बिमुहम्मदिन रसूलन व बिलइस्लामि दीनन) ६१
९०- (३१) मार्ग से कष्टदायक वस्तुओं को हटा देना ६१
९१-९२- (३२-३३) क्रोध को पी जाना तथा लोगों को क्षमा कर देना ६२
९३- (३४) अज़ान ६२
९४- (३५) प्यासे जानवरों को पानी पिलाना ६३
९५- (३६) मृतक के धन से स़दक़ा अर्थात दान-पुण्य करना ६३
९६- (३७) धनहीन को मोहलत देना तथा क़र्ज़ (ऋण) की अदायगी के समय कमी कोताही को क्षमा करना ६४
९७- (३८) त़वाफ़ -ए- काबा में चलने वाला क़दम ६४
१८- (३९) रुक्न -ए- यमानी तथा ह़जर -ए- असवद को छूना ६५
९९- (४०) अल्लाह के समक्ष सज्दा करना (शीश नवाना) ६५
१००- (४१) बाज़ार में प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़ना: «لَا إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لاَ يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيرٌ» (ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युहयी व युमीतु, व हुवा ह़य्युन ला यमूतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर) ६५
१०१- (४२) अरफ़ा के दिन रोज़ा रखना ६६
१०२- (४३) आशूरा (दस मुहर्रम) के दिन का रोज़ा रखना ६६
१०३- (४४) एक उमरा के बाद दूसरा उमरा करना ६७
१०४- (४५) सौ बार यह दुआ पढ़ना: «لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحْدَهُ لا شَرِيكَ له، له المُلْكُ وله الحَمْدُ، وهو علَى كُلِّ شيءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, व हुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर ६७

१०५- (४६) फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की होः (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِير) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युहयी व युमीतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर ६८
१०६- (४७) मजलिस (सभा) से उठने के पूर्व यह दुआ पढ़नाः «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ» सुब्हानक् अल्लाहुम्मा व बिह़म्दिका, अश्हदु अल्ला इलाहा इल्ला अन्ता, अस्तग़फ़िरुका व अतूबु इलैका ६९
१०७- (४८) अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) ६९
१०८- (४९) सोते समय आयतुल कुर्सी की तिलावत (पाठ) करना ७०
१०९- (५०) पत्नी से संभोग करते समय यह दुआ पढ़नाः «بسم الله اللهم جنبنا الشيطان و جنب الشيطان ما رزقتنا» (बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा जन्निबनश्शैत़ाना व जन्निबिश्शैत़ाना मा रज़क़तना) ७०
११०-१११- (५१-५२) अनाथ के सिर पर हाथ रखना तथा मिस्कीन (निर्धन) को भोजन कराना ७१
११२- (५३) दस आयतों से क़याम करना (तहज्जुद पढ़ना) ७१
दूसरा अध्यायः मृत्यु पश्चात अप्रिय वस्तुओं से मुक्ति दिलाने वाली पूँजी ७३
११३- (१) तक़्वा (संयम, इंद्रियनिग्रहता) तथा इस़्लाह (सुधार) ७५
११४- (२) अल्लाह के मार्ग में एक दिन रोज़ा रखना ७६
११५- (३) चालीस दिनों तक तबकीर -ए- ऊला के साथ जमाअत के संग नमाज़ पढ़ना ७६
११६- (४) ज़ुह्र की नमाज़ के पूर्व तथा उसके पश्चात पाबंदी (प्रतिबद्धता) के साथ चार रक्अत नफ़्ल पढ़ना ७७
११७- (५) स़दक़ा (दान-पुण्य) करना यद्यपि खजूर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो ७७
११८- (६) अल्लाह के मार्ग में पाँव का धूल धूसरित होना ७८
११९- (७) अल्लाह का ज़िक्र ७८
१२०- (८) बेटियों के लालन-पालन पर धैर्य रखना, उनके खाने-पीने एवं उनके वस्त्र की व्यवस्था करना तथा उनके संग अच्छा व्यवहार करना ७९

१२१- (९) अल्लाह के भय से रोना ७९
१२२- (१०) मनुष्य को दयालु, मृदुभाषी और (सबके साथ) मिल कर रहने वाला होना चाहिए ८०
१२३- (११) अनुपस्थिति में किसी मुसलमान के सम्मान एवं इज़्ज़त की रक्षा करना .. ८०
१२४- (१२) अल्लाह की राह में पहरा देना ८०
१२५- (१३) रमज़ान मास में दिन-रात नेक अमल (सद्कर्म) करना ८१
१२६- (१४) क्रोध पर नियंत्रण करना ८१
१२७- (१५) तीन बार जहन्नम से मुक्ति माँगना ८१
१२८- (१६) अल्लाह के रास्ते (ईश्वरीय पथ) में सीमा की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना ८२
१२९- (१७) किसी मुसलमान के किसी कष्ट को दूर करना ८२
तीसरा अध्याय: संसार में हानिकारक वस्तुओं को दूर करने वाली पूँजी ८३
१३०- (१) घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ना: «بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ...» (बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि...) ८५
१३१- (२) भोर-सांझ तीन बार «قل هو الله أحد* قل أعوذ برب الفلق * قل أعوذ برب الناس» (क़ुल हुवल्लाहु अह़द, क़ुल अऊज़ु बि रब्बिल फ़लक़ एवं क़ुल अऊज़ु बि रब्बिन्नास) पढ़ना ८५
१३२- (३) भोर-सांझ तीन बार यह दुआ पढ़ना: «بِسْمِ اللهِ الَّذِي لا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ في الأَرْضِ وَلا في السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيعُ العَلِيمُ» बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिहि शैउन फ़िल अर्ज़ि वला फ़िस्समाई व हुवस्समीउल अलीम ८६
१३३- (४) सोने के समय आयतुल कुर्सी ﴿اللَّـهُ لَا إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ﴾ की तिलावत करना ८६
१३४- (५) दुःख एवं उदासी के समय यह दुआ पढ़ना: «اللهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ، وَابْنُ عَبْدِكَ...» अल्लाहुम्मा इन्नी अब्दुका, वब्नु अब्दिका ८७
१३५- (६) फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بيده الخيرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِير) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् ह़म्दु, युहयी व युमीतु, बि,य,दिहिल ख़ैरु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर ८८

१३६- (७) अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) ८८
१३७- (८) पीड़ित व व्यथित को देखने पर यह दुआ पढ़ना: «الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي...» अल्हम्दुलिल्लाहिल् लज़ी आफ़ानी ८९
१३८- (९) ऐसी दुआ करना जिसमें पाप करने तथा संबंध तोड़ने की बात न हो ८९
१३९- (१०) पूरी दुआ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद ही दुरूद पढ़ना९०
१४०- (११) भोर-सांझ सात (७) बार यह दुआ पढ़ना: «حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ، عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ، وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ» ह़स्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा अलैहि तवक्कल्तु वहुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम ९०
१४१- (१२) घर में तीन रात तक सूरह बक़रह की अंतिम तीन आयतों (श्लोकों) की तिलावत (पाठ) करना ९०
१४२- (१३) अल्लाह का तक़्वा एवं भय ९१
१४३- (१४) पाबंदी से इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करना ९२
१४४- (१५) चाश्त के समय चार रक्अत नफ़्ल नमाज़ पढ़ना ९२
१४५- (१६)- बारंबार ह़ज्ज एवं उमरा करना ९२
१४६- (१७) स़ब्र एवं धैर्य ९३
१४७- (१८) सूरह बक़रह का पाठ करना ९३
१४८- (१९) सपना में जब कोई अप्रिय चीज़ देखे तो: तीन बार बाईं ओर थूके, तीन बार शैतान से शरण माँगे तथा करवट बदल कर सो जाए ९४
१४९- (२०) जब कोई नींद में डर जाए तो यह (दुआ) पढ़े: (أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ...) अऊज़ु बिकलिमातिल् लाहित् ताम्माति ९४
१५०- (२१) सूरह कह्फ़ की आरंभिक दस आयतों (श्लोकों) को कंठस्थ करना ९५
तीसरी अध्याय: जीवन की वो पूँजी जिनसे लोक परलोक का उद्देश्य प्राप्त होता है ९६
पहला खण्ड: धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी ९७
१५१- (१) अल्लाह से अच्छा गुमान रखना ९९
१५२- (२) फ़ज्र की दो रक्अतें ९९
१५३- (३) अल्लाह का तक़्वा एवं भय ९९
१५४- (४) स़दक़ा (दान-पुण्य) १००

१५५- (५) घर से निकलते समय यह दुआ पढ़ना: «بِسْمِ اللَّهِ، تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ، لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ» (बिस्मिल्लाहि, तवक्कलतु अलल्लाहि, ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि) १००
दूसरा खण्ड: अमल (कर्म) के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी १०१
१५६- (१) अल्लाह का तक़्वा (ईश्वरीय भक्ति) एवं भय १०३
१५७-१६०- (२-५) किसी मुसलमान को प्रसन्न करना, उसका कष्ट दूर करना, उसका क़र्ज़ चुकाना तथा उसकी भूख मिटाना १०३
१६१- (६) ज़िलह़िज्जा मास के आरंभिक दस दिनों में नेक अमल (सद्कर्म) करना १०४
१६२- (७) क़ुर्बानी के दिन (पशु का) रक्त बहाना १०४
१६३- (८) यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ» सुब्ह़ानल्लाहि वल्हम्दुलिल्लाहि व ला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर १०५
१६४- (९) यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि १०५
१६५- (१०) यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्ह़ानल्लाहिल अज़ीम, सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि १०५
१६६- (११) रात्रि में निद्रा भंग हो तो यह दुआ पढ़े: «لا إله إلا الله وحده...» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू..., इसके बाद वुज़ू करे तथा नमाज़ पढ़े १०६
१६७- (१२) पारिवारिक सदस्यों पर पुण्य कमाने के इरादा से ख़र्च करना १०६
१६८- (१३) सूरज ढ़लने के बाद तथा ज़ुह्र से पूर्व चार रक्अत (नफ़्ल) अदा करना १०७
१६९- (१४) प्रत्येक नमाज़ के पश्चात ३३ बार: «سبحان الله و الحمد لله و الله أكبر» "सुब्ह़ानल्लाहि, वलहम्दुलिल्लाहि, वल्लाहु अकबर" पढ़ना १०७
तीसरा खण्ड: पारलौकिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी १०८
१७०- (१) अल्लाह का ज़िक्र (जाप, स्मरण) ११०
१७१- (२) बाज़ार में प्रवेश करते समय यह दुआ पढ़ना: «لَا إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ...» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू ११०
१७२- (३) फ़ज्र की नमाज़ के बाद दस बार यह दुआ पढ़े जबकि वह पाँव मोड़े (घुटना टेक कर) बैठा हो तथा कोई बात भी न की हो: (لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ وَحْدَهُ...) ला इलाहा इल्लल्लाहु, वह़दहू १११

१७३- (४) घर में अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करने के बाद मस्जिद की ओर जमाअत (समूह) के संग नमाज़ पढ़ने के इरादा से निकलना तथा ज़्यादा क़दम चलना १११
१७४- (५) एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ की प्रतीक्षा करना ११३
१७५- (६) अप्रिय होने के बावजूद अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करना ११३
१७६- (७) अल्लाह के लिए अधिकाधिक सज्दा करना (शीश नवाना) ११४
१७७- (८) संतान का (माता-पिता) के लिए मग़फ़िरत (क्षमा) की दुआ करना ११४
१७८-१८१- (९-१२) अपशगुन, झाड़-फूँक एवं दाग़ कर उपचार करवाने से बचना तथा केवल अपने अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करना ११५
१८२- (१३) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रेम रखना ११५
१८३- (१४) बेटियों तथा बहनों का लालन-पालन करना यहाँ तक कि वो दूर हो जाएं अथवा वह व्यक्ति स्वयं मृत्यु को प्राप्त हो जाये ११६
१८४- (१५) अनाथ की देख-रेख (संरक्षकता) ११६
१८५- (१६) अच्छे ढ़ंग से वुज़ू कर के पूरी तन्मयता तथा तल्लीनता के साथ दो रक्अत नमाज़ पढ़ना ११७
१८६- (१७) अल्लाह के मार्ग में युद्ध करना यद्यपि अल्प समय के लिए ही क्यों न हो ११७
१८७- (१८) ज़ुबान तथा गुप्तांग की सुरक्षा करना ११८
१८८- (१९) सुबह के समय यह दुआ पढ़ना: «رَضِيتُ بِاللهِ رَبًّا، وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا، وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ نَبِيًّا» (रज़ीतु बिल्लाहि रब्बन, व बिलइस्लामि दीनन, व बिमुहम्मदिन नबिय्यन) ११८
१८९- (२०) जमाअत (समूह) को अनिवार्य रूप से पकड़े रहना ११९
१९०- (२१) किसी बीमार की तीमारदारी करना अथवा अल्लाह की ख़ातिर किसी मुसलमान भाई से भेंट करना ११९
१९१- (२२) अल्लाह की ख़ातिर एक-दूजे से प्रेम करना १२०
१९२- (२३) हुस्न -ए- अख़लाक़ (अच्छा आचरण व शिष्टाचार) १२१

१९३- (२४) आपदा के समय अल्लाह की प्रशंसा एवं स्तुतिगान करना तथा ﴿إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, पढ़ना एवं यह कहना: ﴿اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا﴾ अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुसीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा १२२
१९४- (२५) झूठ बोलने से बचना, यद्यपि हास्य-परिहास में ही क्यों न हो १२२
१९५- (२६) फ़र्ज़ नमाज़ों के अतिरिक्त बारह रक्अत नफ़्ल पढ़ना १२३
१९६- (२७) अल्लाह को प्रसन्न करने हेतु मस्जिद का निर्माण करना १२३
१९७- (२८) सही होने के बावजूद विवाद छोड़ दे १२४
१९८- (२९) अल्लाह का तक़्वा एवं भय १२४
१९९-२०२- (३०-३३) (سبحان الله) सुब्हानल्लाह, (الحمد لله) अल्हम्दुलिल्लाह, (لا اله الا الله) ला इलाहा इल्लल्लाहु तथा (الله اكبر) अल्लाहु अकबर, पढ़ना . १२७
२०३- (३४) यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، وَبِحَمْدِهِ» सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, व बिहम्दिहि १२८
२०४- (३५) क्रोध को नियंत्रण में रखना जब्कि उसको पूरा कर डालने की क्षमता हो १२८
२०५- (३६) श्रद्धा एवं विनम्रता तथा अल्लाह के लिए विनीत होते हुए, सामर्थ्यवान होने के बावजूद (महंगे) वस्त्रों का त्याग करना १२९
२०६- (३७) निर्धन को मोहलत देना, क़र्ज़ की अदायगी के समय कमी कोताही की अनदेखी करना अथवा (क़र्ज़) माफ़ कर देना १२९
२०७- (३८) रोज़ा १३०
२०८- (३९) लोगों के दोषों की अनदेखी करना, दुर्व्यवहार करने वालों को क्षमा कर देना तथा सुधार करना १३१
२०९- (४०) समृद्धि एवं निर्धनता हरेक स्थिति में, माँगने वाले तथा सवाल से बचने वाले पर, ख़र्च करना तथा कंजूसी से दूर रहना १३१
२१०- (४१) रात्रि के समय जब लोग सो रहे हों तो उस समय नमाज़ पढ़ना, रात में कम से कम सोना तथा हज़ार आयत से क़याम करना (तहज्जुद पढ़ना) १३२
२११- (४२) सूरह मुल्क की तिलावत (पाठ) करना १३३

२१२- (४३) कलेमा -ए- शहादत पढ़ना: «أَشْهَدُ أَنْ لا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ» अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीका लहु, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु १३३
२१३- (४४) हज्ज -ए- मबरूर (स्वीकार्य हज्ज) १३४
२१४- (४५) अल्लाह के समक्ष सच्चे हृदय से तौबा करना १३५
२१५- (४६) कबीरा गुनाहों (महा पापों) से बचना १३५
२१६- (४७) माता-पिता का आज्ञापालन १३५
२१७- (४८) आज़माइश व परीक्षा के समय सब्र, धैर्य एवं संयम से काम लेना १३६
२१८- (४९) एक साथ रोज़ा रखना, जनाज़ा के पीछे चलना, निर्धन को भोजन कराना तथा बीमार की अयादत करना (हाल-चाल पूछने जाना) १३७
२१९- (५०) ज्ञान प्राप्त करना १३७
२२०- (५१) सच्चाई एवं सत्यवादिता १३७
२२१- (५२) सलाम (अभिवादन) को आम करना १३८
२२२- (५३) मुसलमानों के मार्ग से कष्टदायक वस्तुओं को दूर करना, जैसे पीड़ादायक वृक्षों को काट देना १३८
२२३- (५४) अच्छे ढ़ंग से वुज़ू करने के पश्चात यह दुआ पढ़ना: «أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ» अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु, व अन्ना मुहम्मदन अब्दुल्लाहि व रसूलुहु १३९
२२४- (५५) अल्लाह तआला के निन्यानवे अस्मा -ए- हुस्ना (सुंदर नामों) को कंठस्थ करना १३९
२२५- (५६) पानी पिलाना १४०
२२६- (५७) भोजन कराना १४०
२२७- (५८) पाप के पश्चात इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करना एवं गुनाह पर अड़े न रहना १४०
२२८- (५९) विश्वास के साथ दिल से मुअज़्ज़िन के अज़ान का उत्तर देना १४१
२२९- (६०) प्रत्येक फ़र्ज़ नमाज़ के पश्चात आयतुल कुर्सी का पाठ करना १४२
२३०- (६१) सुबह शाम दृढ़ विश्वास के साथ सय्यिदुल इस्तिग़फ़ार: (اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي...) अल्लाहुम्मा अन्ता रब्बी... पढ़ना १४३

२३१- (६२) सह्र (भोर होने से पहले) के समय इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करना ... १४३
२३२- (६३) प्यासे जानवरों को पानी पिलाना १४३
२३३- (६४) (क़र्ज़) अदा करते एवं माँगते समय विनम्रता धारण करना १४४
२३४- (६५) किसी प्रियजन की मृत्यु पर धैर्यपूर्वक रहना तथा पुण्य की आशा रखना १४४
२३५- (६६) ह़या व लज्जा १४५
२३६- (६७) सूरह इख़्लास़ से प्रेम १४५
२३७- (६८) दुखियारों से संवेदना प्रकट करना तथा उनको सांत्वना देना १४६
२३८- (६९) अल्लाह से तीन बार जन्नत माँगना १४६
२३९-२४४- (७०-७५) इमाम (शासक) का न्यायप्रिय होना, अल्लाह की उपासना पर युवक की परवरिश (पालन), दिल का मस्जिद से जुड़े रहना, जिसे कोई सुंदर एवं सम्मानित महिला कुकर्म के लिए आमंत्रण दे तो उसका यह कहना किः मैं अल्लाह से डरता हूँ, छुपा कर दान करना तथा एकांतावास में अल्लाह की याद में चक्षू से अश्रूधारा का बहने लगना १४६
२४५- (७६) अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले ग़ाज़ी को आश्रय देना १४७
२४६- (७७) न्याय प्रियता एवं इंसाफ १४७
२४७- (७८) किसी मुसलमान भाई से उस तरह भेंट करे जिस तरह अल्लाह को पसंद है ताकि उसे प्रसन्नता प्राप्त हो १४८
२४८- (७९) पर्दा पोशी (किसी मुसलमान की पर्दा पोशी करना) १४८
२४९- (८०) किसी भाई की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहना यहाँ तक कि वह पूरी हो जाये १४९
२५०- (८१) सोने के समय यह दुआ पढ़नाः «اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ...» अल्लाहुम्मा असलम्तु नफ़्सी इलैका १४९
२५१- (८२) रमज़ान में उमरा करना १५०
२५२- (८३) फ़ज्र की नमाज़ जमाअत के साथ अदा करे फिर बैठ कर अल्लाह का ज़िक्र (जाप) करता रहे यहाँ तक कि सूर्य उदय हो जाये, फिर दो रक्अत (नफ़्ल) अदा करे. १५०
२५३- (८४) ख़ैर, भलाई व कल्याण की शिक्षा प्राप्त करने अथवा उसकी शिक्षा देने के लिए मस्जिद जाना १५१

२५४- (८५) ज़िलहिज्जा महीना के आरंभिक दस दिनों में सद्कर्म करना १५१
२५५- (८६) विधवा तथा निर्धन के लिए प्रयास करना १५२
१५६- (८७) अल्लाह की राह में जंग करने वाले को इतना सामान दे कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत न रहे १५२
२५७- (८८) अल्लाह के मार्ग में जिहाद करने वाले के पीछे उसके घर (वालों) की अच्छे ढ़ंग से निगरानी करना १५३
२५८- (८९) प्रत्येक महीने में तीन दिन रोज़ा रखना १५३
२५९- (९०) रमज़ान के रोज़े के बाद शव्वाल के छः रोज़े रखना १५३
२६०- (९१) जुमुआ के दिन स्वच्छता व पवित्रता के पश्चात स्नान करना, जल्द से जल्द (मस्जिद की ओर) चल कर जाना तथा इमाम के निकट बैठ कर ध्यान से ख़ुत्बा (भाषण) सुनना एवं व्यर्थ कार्य न करना १५४
२६१- (९२) रोज़ेदार को इफ़्तार कराना १५४
२६२- (९३) सौ बार सुब्हानल्लाह पढ़ना १५४
२६३- (९४) सौ बार यह दुआ पढ़ना: «لاَ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ المُلْكُ وَلَهُ الحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरीका लहू, लहुल् मुल्कु, व लहुल् हम्दु, वहुवा अला कुल्लि शैइन क़दीर) १५५
२६४- (९५) दस बार यह दुआ पढ़ना: «لاَ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَحْدَهُ...» ला इलाहा इल्लल्लाहु, वहदहू १५६
२६५- (९६) सात बार काबा का त़वाफ़ (परिक्रमा) करना तथा दो रक्अत नफ़्ल पढ़ना १५६
२६६-१६८- (९७-९९) दुग्ध दान करना, धन क़र्ज़ देना तथा मार्गदर्शन करना १५७
२६९- (१००) सौ बार «الحمد لله» अल्हम्दुलिल्लाह का जाप करना १५७
२७०- (१०१)- यह दुआ पढ़ना: «الْحَمْدُ لِلَّهِ عَدَدَ مَا خَلَقَ...» अल्हम्दुलिल्लाहि अददा मा ख़लक़ा..., इसी तरह अल्लाह की पवित्रता का बखान करना १५८
२७१- (१०२) तीन बार यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، عَدَدَ خَلْقِهِ وَرِضَا نَفْسِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ» सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि, अददा ख़ल्क़िहि, व रिज़ा नफ़्सिहि, व ज़िनता अर्शिहि व मिदादि कलिमातिहि १५९
२७२- (१०३) «لا حول و لا قوة إلا بالله» ला ह़ौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहि, पढ़ना १५९

२७३- (१०४) एक नमाज़ के पश्चात दूसरी नमाज़ पढ़ना, इस प्रकार से कि उनके मध्य कोई व्यर्थ कार्य न करे १६०
२७४- (१०५) सच्चे दिल से अल्लाह के समक्ष शहादत की दुआ करना १६०
२७५- (१०६) नफ़्ली नमाज़ अथवा चाश्त की नमाज़ के लिए निकले तथा उसका उद्देश्य केवल यही नमाज़ हो १६१
२७६- (१०७) मस्जिद -ए- क़ुबा में नमाज़ पढ़ना १६१
२७७- (१०८) सौ (१००) बार अल्लाहु अकबर कहना १६२
२७८- (१०९) भलाई का आदेश एवं हिदायत (मार्गदर्शन) का आमंत्रण देना १६२
२७९- (११०) बुराई से रोकना १६२
२८०-२८१- (१११-११२) सवारी में किसी की सहायता करना, उसे सहारा देकर उसकी सवारी पर सवार करा देना अथवा उसका सामान उठा कर उस पर रख देना १६३
२८२- (११३) दो रक्अत चाशत की नमाज़ अदा करना १६३
२८३- (११४) क़र्ज़ (ऋण) १६३
२८४- २८५- (११५-११६) फ़ज्र तथा इशा की नमाज़ जमाअत (समूह) के संग अदा करना १६४
२८६- (११७) मस्जिद -ए- ह़राम में नमाज़ पढ़ना १६४
२८७- (११८) मस्जिद -ए- नबवी में नमाज़ पढ़ना १६४
२८८- (११९) समूह में अथवा इमाम के साथ जमाअत के संग नमाज़ पढ़ना १६५
२९९- (१२०) लोगों की दृष्टि से दूर हो कर तथा घर के अंदर (नफ़्ल) नमाज़ अदा करना १६५
२९०- (१२१) क़ुरआन के एक ह़र्फ़ (अक्षर) की तिलावत (पाठ) १६६
२९१- (१२२) अज़ान का उत्तर देने के पश्चात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद भेजना १६६
२९२- (१२३) क़ुर्बानी (का पशु) ज़ब्ह़ करना १६७
२९३- (१२४) यह दुआ पढ़ना: «سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ، سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ» सुब्ह़ानल्लाहिल अज़ीम, सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिहि १६७
२९४- (१२५) स़ब्र एवं धैर्य करना १६८
२९५- (१२६) समस्त मोमिन पुरुषों एवं महिलाओं के लिए मग़फ़िरत की दुआ (क्षमा याचना) करना १६८

२९६-२९७- (१२७-१२८) जनाज़ा में सम्मिलित होना वह इस प्रकार से कि उसके साथ जाए, जनाज़ा की नमाज़ पढ़े तथा दफ़न होने तक उसके पीछे-पीछे रहे, या जनाज़ा की नमाज़ पढ़ कर वापस हो जाये १६८
२९८- (१२९) ऐसी दुआ करना जिसमें पाप तथा संबंध तोड़ने की बात न हो १६९
२९९- (१३०) अच्छा तरीका को रिवाज देना १६९
३००- (१३१) नेक काम (सद्कर्म) की निय्यत १७०
३०१- (१३२) अज़ान के समय उपस्थित रहना तथा प्रथम पंक्ति में नमाज़ पढ़ना १७०
३०२-३०३- (१३३-१३४) छिपकली को पहले वार में मार देना, तथा दूसरे वार में और तीसरे वार में १७१
३०४-३०६- (१३५-१३७) (अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु), (अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि) तथा (अस्सलामु अलैकुम), कहना १७१
३०७- (१३८) अल्लाह के रास्ते (ईश्वरीय पथ) में सीमा की रक्षा करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना १७२
३०८- (१३९) अज़ान का उत्तर देने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए वसीला की दुआ करना, वह इस प्रकार से कि यह दुआ पढ़ी जायेः «اللهم ربّ هذه الدعوة التامة ...» अल्लाहुम्मा रब्बा हाज़िहिद् दअ्वतित् ताम्मति..... १७२
३०९- (१४०) सुबह शाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दस बार दुरूद भेजना १७३
३१०- (१४१) सूरह बक़रह एवं सूरह आले इमरान की तिलावत (पाठ) करना १७४
३११- (१४२) पिता के मित्रों एवं संगी-साथियों के साथ संबंध जोड़ना १७४
३१२- (१४३) सूरह ज़िलज़ाल (इज़ा ज़ुलज़िलत) की तिलावत (पाठ) करना १७४
३१३- (१४४) सूरह इख़्लास ﴿قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ﴾ (क़ुल हुवल्लाहु अहद) की तिलावत करना १७५
३१४- (१४५) सूरह काफ़िरून ﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ﴾ (क़ुल या अय्युहल काफ़िरून) की तिलावत करना १७५
३१५- (१४६) मस्जिद में सुबह जा कर क़ुरआन की कुछ आयतों (श्लोकों) का पाठ करना १७५

चौथा खण्डः नफ़्स (स्वयं) से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी १७७
३१६- (१) अल्लाह का तक़्वा एवं भय १७९
३१७- ३१८- (२-३) ह़ज्ज एवं उमरा में सिर मुंडवाना अथवा बाल छोटे करवाना .. १८०
३१९- (४) अस्र के पूर्व चार रक्अत (नफ़्ल) पढ़ना १८०
३२०- (५) अल्लाह के ज़िक्र (स्मरण) वाली सभाओं में जमा होना १८१
३२१- (६) तहज्जुद के लिए रात में जागना तथा पत्नी को भी जगाना चाहे उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारने की आवश्यकता ही क्यों न पड़े १८१
३२२- (७) क्रय-विक्रय तथा तगादा करने में नम्रता अपनाना १८२
३२३- (८) ऐसी दुआ करना जिसमें पाप करने तथा संबंध तोड़ने की बात न हो १८२
३२४- (९) अनुपस्थिति में अपने भाई के लिए दुआ करना १८३
३२५- (१०) रात्रि की अंतिम घड़ी में तथा अंतिम तिहाई में अल्लाह से दुआ करना १८३
३२६- (११) बुधवार के दिन ज़ुह्र एवं अस्र के मध्य दुआ करना १८४
३२७- (१२) यूनुस अलैहिस्सलाम वाली प्रार्थनाः ﴿لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ﴾ "ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्ह़ानका इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन", करने का ध्यान रखना १८४
३२८ (१३) जुमुआ के दिन एक (विशेष) क्षण में खड़े हो कर नमाज़ पढ़ना तथा दुआ करना १८५
३२९- (१४) हाथ उठा कर दुआ करना १८५
३३०- (१५) अज़ान एवं इक़ामत के मध्य दुआ करना १८६
३३१- (१६) अज़ान का उत्तर देने के बाद दुआ करना १८६
३३२- (१७) जब रात्रि में निद्रा भंग हो तो यह दुआ पढ़ेः «لا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وحْدَهُ لا شَرِيكَ لهُ...» ला इलाहा इल्लल्लाहु वह़दहु ला शरीका लहु..., उसके बाद दुआ करे १८६
३३३- (१८) रोज़ेदार का इफ़्तार के समय अथवा रोज़ा की स्थिति में दुआ करना ... १८७
३३४- (१९) अल्लाह का ज़िक्र (जाप) १८७
३३५- (२०) दुआ १८८
३३६- (२१) रमज़ान में दिन तथा रात में (किसी भी समय) दुआ करना १८८
३३७- (२२) अल्लाह के समक्ष विनम्रता एवं श्रद्धा अपनाना १८८

३३८- (२३) ज़ुबान की सुरक्षा १८९
३३९- (२४) संबंधों को जोड़ कर एवं बचा कर रखना १८९
३४०-३४१- (२५-२६) शिष्टाचार एवं पारिवारिक सदस्यों के संग अच्छा व्यवहार . १९०
३४२- (२७) (इस्मिद) सुरमा लगाना १९०
३४३- (२८) अगली पंक्ति में नमाज़ पढ़ना १९०
३४४- (२९) नमाज़ के बाद मुसल्ला (नमाज़ पढ़ने के स्थान) पर बैठे रहना यहाँ तक कि वुज़ू न टूटे १९१
३४५- (३०) मुसलमान की तीमारदारी (देख-भाल) करना १९१
३४ ६- (३१) अज़ान १९१
पंचम खण्डः सांसारिक उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी १९२
३४७- (१) अपने भाई की आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहना १९४
३४८- (२) संबंध को जोड़ कर रखना १९४
३४९- (३)- पाबंदी के साथ इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) एवं अल्लाह के समक्ष तौबा (पश्चाताप) करना १९५
३५०- (४) अल्लाह का तक़्वा एवं भय १९५
३५१- (५) अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) १९६
३५२- (६) अल्लाह के मार्ग में धन खर्च करना १९६
३५३- (७) बड़ों एवं वृद्धों का सम्मान करना १९७
३५४- (८) विपदा के समय यह दुआ पढ़नाः ﴿إِنَّا لِلهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُون﴾ इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, ﴿اللَّهُمَّ أْجُرْنِي فِي مُصِيبَتِي وَأَخْلِفْ لِي خَيْرًا مِنْهَا﴾ अल्लाहुम्मा अजुर्नी फ़ी मुसीबती व अख़्लिफ़ ली ख़ैरन मिन्हा १९७
३५५- (९) खरीदने और बेचने (क्रय-विक्रय) में ईमानदारी और स्पष्टता के साथ काम करना १९८
३५६- (१०) सोते समयः ३४ बार (الله اكبر) अल्लाहु अकबर, ३३ बार (سبحان الله) सुब्हानल्लाह, तथा ३३ बार (الحمد لله) अल्हम्दुलिल्लाह, पढ़ना १९८
छठा खण्डः आसपास के लोगों से संबंधित उद्देश्यों की पूर्ति करने वाली पूँजी २००
३५७- (१)- नेकी के द्वारा बदी (अच्छाई के द्वारा बुराई) को दूर करना २०२
३५८-३६०- (२-४) संबंध बचा कर रखना, शिष्टाचार एवं पड़ोसी के संग अच्छा व्यवहार २०२